श्रीराधा

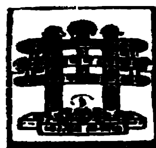
उड़िया मूल

रमाकान्त रथ

अनुवादक

श्रीनिवास उद्गाता

राजेन्द्र प्रसाद मिश्र



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

राष्ट्रभारती
लोकोदय ग्रन्थमाला ग्रन्थांक 451

रमाकान्त रथ

श्रीराधा
(कविता)

रमाकान्त रथ

मूल्य : 90/-

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया
लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

मुद्रक
शकुन प्रिन्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

आवरण पुष्पकणा मुखर्जी

SHRIRADHA (Poems), by Ramakant Rath. Published by Bharatiya Jnanpith, 18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110003. Printed at Shakun Printers, Naveen Shahdara Delhi-110032

Price : Rs. 90/-

प्रस्तुति

भारतीय ज्ञानपीठ विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य मनीषियों और लेखकों की कृतियों के हिन्दी अनुवाद के प्रकाशन में विशेष रूप से सक्रिय है। प्रत्येक साहित्यिक विधा के अग्रणी लेखकों की कृतिया या सकलनों को सुनियोजित ढग से हिन्दी जगत् को समर्पित करने का कार्य प्रगति पर है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हाल ही में प्रकाशित पुस्तकों का जो स्वागत हुआ है उसके लिए हम साहित्य-मर्मज्ञों और पाठकों के अत्यन्त आभारी हैं। इससे हमारी योजना को बल मिला है और हमको प्रोत्साहन।

भारतीय कवि श्रृखला मे उडिया के गौरव ग्रथ 'श्रीराधा' के हिंदी रूपान्तर का प्रकाशन हमारे लिए बडी प्रसन्नता की बात है। रमाकात रथ आधुनिक उडिया के शीर्षस्थ कवियों मे से हैं और 'श्रीराधा' उनकी अत्यन्त चर्चित कृति। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित 'सप्तम ऋतु' की कविता की भाव-प्रवणता और गहन अभिव्यक्ति यहा और भी गाढी हो गई है। हिन्दी में इस पुस्तक के लाने का माध्यम मैं बना इससे मुझे विशेष सतोष इसलिए भी है कि रमाकात मेरे पुराने मित्र हैं।

इस कृति का अनुवाद कार्य बहुत सरल नहीं था। श्रीनिवास उद्गाता और राजेन्द्र मिश्र ने इसके लिए जो परिश्रम किया है उसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हू। साथ ही इसका रुप सवारने और अनुवाद को मूल कविता की गरिमा के अनुरूप बनाने में मृणाल पाण्डे ने सहायता की है। मुझे यह कहने में तनिक भी सकोच नही है कि बिना उनके सहयोग के इस अनूठी कृति का हिन्दी पाठकों तक पहुचना कठिन होता। ज्ञानपीठ के मेरे अपने सहयोगियो ने सदा की भाति अत्यधिक परिश्रम किया है नेमिचन्द जैन, चक्रेश जैन व सुधा पाण्डेय के प्रति मैं कृतज्ञ हू।

इस पुस्तक की सुरुचिपूर्ण साज-सज्जा व मुद्रण के लिए एक बार फिर शकुन प्रिंटर्स के अम्बुज जैन और कलाकार पुष्पकणा मुखर्जी का आभारी हू।

नई दिल्ली

बिशन टडन
निदेशक

शांति के कभी भी कुछ न माँगने वाले हाथों में

1

अन्य सबु सकाळठूँ आजिर सकाळ
काहिँकि केजाणि लागे अलगा अलगा।
खगरे कि दुःसाहस! आजि पवनरे
अन्यमनस्कता याहा नुहें आगपरि।
सतेबा फेरिछि केउँ देशान्तरी प्रेमिक, रहुछि
आख पाख केउँठारे छद्मबेश धरि।

कि वर्षा कि भयकर धडधडि कालि
रातिसारा! पर्वताकाररे
पत्र फुल झडिगले, मुँ निजक निजे
प्राणपणे जाकि देलि, काळे बिजळीर
झलमल डाक बाजि यिब मो कानरे।

निजर नि शब्द किम्बा अर्थहीन
शब्दमानकर साम्राज्यर शेष मुहूर्तरे
कालिर अधार यदि रक्तस्नान होइ युझिथिब,
नार याहा नाम मात्र स्मृति अछि ताहा
केतबेळ न लिभि रहिब।

एक

अन्य सभी सुबहो से आज की सुबह
न जाने लगती है क्यो अलग-अलग ।
धूप मे यह कैसा दुस्साहस! आज हवा मे
अन्यमनस्कता जो नही है पहले-सी।
मानो लौटा हो कोइ प्रवासी प्रेमी, रह रहा हो
आस-पास कही छदमवश लिए।

तूफानी बारिश कितनी भयकर बिजलियो की कौध थी कल
रात भर! कैसे पर्वताकार थे बादल
फल-पत्ते झड गए मैने स्वय को स्वय ही
जी-जान से दबका लिया कही बिजलियो की
झिलमिलाती पुकार न बज उठे मेरे कानो मे!

अपने नि शब्द अथवा अर्थहीन शब्दो के
साम्राज्य की अतिम घडी मे
कल का अधेरा यदि रक्त से मेरा जूझ रहा होगा,
उसकी जो नाम मात्र स्मृति है वह
कब तक रहेगी बिन बुझे?

आजिर सकाळ कहे नेइयिब मोर
चेतना चैतन्य जन्म जन्मान्तर पाइँ।
से येउँ भावरे कहे मुँ पुनरावृत्ति
करिबाकु भाषा पाउनाहिँ।
किन्तु एबे दिशिलाणि अलगा अलगा
नई, नई सेपारिर बण,
केते दिन याएँ आउ न बदळि थिब
मो पाण्डुर गगन पवन ?

आगरू केबेत छाति
आजि परि धपधप हेउ नथिला, मँ
कण जाणे, मो जीवनकाळ
बा यमुना यिबा बाट मोडाणिरे थिब
कि हिनस्तायोग, किम्बा अन्य सब् सबन्ध उजाडि
देला भळि सम्बन्ध मो जरा मृत्यु व्याधि इत्यादिर
बाट हसिहसि आगळिब।

य का उच्चारण ज की तरह होगा।
य और य ओड़िआ मे दो स्वतन्त्र वर्ण हैं।

आज की सुबह कहती है ले जाएगी मेरी
चेतना-चैतन्य जन्म-जन्मांतर के लिए।
वह जिस भाव से कहती है दोहराने को
मुझे भाषा नहीं मिलती।
किंतु अब दिखने लगी है अलग-अलग-सी
नदी नदी के उस पार के वन
कब तक भला न बदलता
मेरा पांडर गगन-पवन?

पहले तो कभी छाती
आज की तरह धुक्धुक् नहीं करती थी, भला
मैं क्या जानूं, मेरे जीवनकाल
अथवा यमुना जाने की राह की मोड़ पर होगा
कैसा अपदस्थ होने का योग, अथवा अन्य सभी
संबंधों को उजाड़ डालने वाले संबंध
मेरी जरा, मृत्यु, व्याधि आदि की
राह हँसते हुए रोक लेंगे।

2

तमे आम्भिअछ बोलि शुणिला बेळक्
दिन बेश् होइयाइथिला।

गाईगोरू कोतेबेळ् फिटि सार्गिथिल।
अधिकाश पुरूष कामक
याइ सार्गिथिले, स्त्री लोके प्रम्नत
हउथिले गाधोइ यिबाक।

काहिँकि केजाणि किछि खुब चपचाप्
थिले सब पुरूष लोके ओ
स्त्रीलोके अयथा डेरि डेरि कर्रुथिले,
सर्नेकि सेमाने ताक देह भिनरक
बाट हडि पशि आसिथिले,
बाट हडिगले बोलि बुझिबा उत्तारे
किपरि चाळिबे बोलि धन्दि हेउथिले.
मर्नेकि सेमाने तब आसिबा खबर
शुणिबार बहु आगुँ आपणार अज्ञातसा
तमे आसिअछ बोलि जाणि सारिथिले।

दो

तुम आऐ हो सुनने तक
दिन काफी चढ़ चुका था।

गाय-गोरु खोल्ने जा चुके थे।
अधिकतर पुरुष काम पर
निकल चुके थे और स्त्रिया
तैयारी में थीं नहाने जाने की।

पता नहीं क्यो बेहद चुपचाप थे
सभी मर्द और स्त्रियां
अकारण देर लगाती थीं
मानों वे अपनी देह के अंदर
घुस आयीं थी राह भटक कर;
और भटक गयी हैं यह समझने के बाद
किस तरह चलेंगी इस अधेड़ बुन में
उलझी हुई थीं, मानों आने की खबर
सुनने को काफी पहले ही
अनजाने में अपने, तुम आ चुके हो
यह जान भी गयी थीं।

सेदिन सकाळे सबु नई
आउ नईकूळ बालि,
गछ पत्र, पाहाड़, आकाश—
अलगा दिशिले, सतेकि सेमाने
अवस्थित केउँ एक भविष्यत काळे
येउँठारे झुण्टि झुण्टि चालिबार क्लेश सारियाए,
येउँठारे विश्रामर, पुनर्मिळनर
आलोकित सुख रहिथाए

सेदिन सकाळे, मुँ नईरे गाधोइबा बेळे
पाणिरे देखिलि मोर गोडकु, लागिला
ए गोड त मोर नुहें, किछि मोर नुहें
ए शरीर मोर नुहें, मोर मबु आशा हताशार
इतिहास मोर नुहें, स्वामी घरद्वार,
पलपल गाई गोरू किछि बोलि किछि नुहें मोर,
ए बँचिबा मोर नुहे, येउँ मृत्यु दिने
अवश्य आसिब से मृत्यु बि नुहें।
मुँ सर्वदा कागाळुणि, अन्तरीक्ष याएँ
प्रसारित मोर दुइ मीमाहीन बाहुक भितरे
मँ उद्रगीव शून्यस्थानटिए।
खालि शून्यस्थानटिए होइ रहियिबा
काहा काहा कपाळे त थाए।

उस दिन सुबह सभी नदी
और नदी तट के बालू
पेड़ पत्ते, पहाड़, आकाश—
अलग दिखाई दिए, मानो वे सब किसी
भविष्य काल मे है अवस्थित होकर
जहाँ ठोकर खा-खाकर समाप्त हो जाते चलने के क्लेश
जहाँ विश्राम और पुनर्मिलन का
अलौकिक सुख रहता है।

उस दिन सुबह, नदी मे मेरे नहाते समय
पानी में अपने पैरों को देखा तो, लगा
ये पैर तो मेरे नही, मेरी सारी आशा हताशा का
इतिहास मेरा नही पति, घरबार
गोष्ठभर गाय गोरू, कुछ भी नही है मेरे
यह जीना नही है मेरा, जो मृत्यु एक दिन
अवश्य आएगी, वह भी नही है मेरी।
और मै हूँ सदा कंगालिनी, अंतरिक्ष तक
प्रसारित अपनी सीमाहीन दो बाहो के बीच
मै हूँ एक उदग्रीव सूनापन।
सिर्फ एक खाली जगह बन कर रह जाना
किसी किसी के भाग मे लिखा तो रहता है।

3

केतेये घातक आसिगले केते छदमबेशो किम्बा
केतेबिध अस्त्र धरि तम पाटि फिटिबा पूर्वरू
सबु दिन लागि ताकु बंद करिबाकु।
छुआटिए यदि कान्दे ताहेले काहिँकि
निद हुए नाहिँ बहु दूरवर्ती सम्राटमानंकु?

मेमाने आसिले प्राय प्रतिदिन, येते येते थर
आसुथिले सेतेथर हठात् पवन
रुंधि होइ याउथिला, गछपत्र दोहलु नथिले,
दिनबेळे खाँ खाँ लागुथिला, उडि याउथिबा
चढ़ेत हठात् मरि खसि पड़ुथिले,

सेतेथर छनछन किआरी जागारे
मरूभूमि दिशुथिला, हृदय भितरे
आउ अल्प बाकी थिबा आशा सरिसरि आसुथिला,
चमत्कार घटणांक विवरणी विपर्यस्त होइयिबा परे
काँ भाँ शब्दटिए कण्ठनळी बाटे याउथिला

आक्षिकु न दिशुथिबा वस्तुंक वर्णना
करुथिबा शब्दमाने आमे भलि सारिथिलँ.

तीन

न जाने कितने वधिक आ पहुँचे छद्मवेश धारे अथवा
तरह-तरह के अस्त्र लिए तुम्हारे बोल फूटने से पहले ही
उसे हमेशा के लिए अवरुद्ध करने।
बच्चा यदि कोई गाये तो क्यो
नीद नही आती दूर के सम्राटो को?
वे लोग आए प्रतिदिन, जितने भी जितनी बार
आते उतनी बार सहमा हवा
रुँध जाती थी, पेड-पत्ते डोलते नही थे,
दिन भी निस्तब्ध लगता था, उडती चिडियाँ
सहसा मरकर गिर पडती थी,

उतनी ही बार हरी-भरी क्यारियो मे
रेगिस्तान दिखता था, हृदय मे
बस जरा-सी बची आस चुकने लगी थी,
चमत्कारपूर्ण घटनाओ के विवरण खत्म होने क बाद
कही एक-आध शब्द निकल पा रहे थे कठनली से।

अदृश्य वस्तुओ का वर्णन
करने वाले शब्द हम भूल चुके थे,

एपर्शकि दिशुथिबा वस्तुमाने कथा कहिबाकु
सजबाज हेलाबेळे आउशद्ब पइट न थिला
मेमानंक उत्तर देबाक'

आमे कण जाणिथिलु एते कथा कहिबाकु अछि,
रातिर सुगन्ध अछि. तरामाने एड एर्काटआ।
आमे कण जाणिथिलु मयूर मनरे
एते दुःख अछि बोलि, रमक्रीडा पाइँ
एते जागा अछि बोलि नईकूळे ओ निज भितरे।

से सब लोहित चक्ष घातक मानकु
जणे परे जणे होइ आमिबा देखिलु,
ओ मेमाने येनेबेळे जणे पर जणे होइ मले
तमे पहँचिबा आगँ आमे भुलि याइ मारिथिबा
शब्दमाने क्रमे मन पडिथिले।

यहाँ तक कि दिखनेवाली वस्तुएं बात कहने को
तैयार होने पर फिर शब्द नहीं सूझते थे
उन्हें उत्तर देने को।

हमें क्या मालूम था इतनी बातें हैं कहने को,
रात्रि की महक है, तारे इतने एकाकी हैं
हमें क्या मालूम था मेरे के मन में
इतना दुःख है राम-रचना का
इतनी जगह है नदी किनारे और अपने भीतर।

उन सब लोहित आँखों वाले घातकों का
एक-एक करके आना देखा
और जब वे एक-एक करके मरे
तुम्हारे पहुँचने से पहले हमें भूल गए
शब्द क्रमशः याद आते रहे।

4

हम नाओं सबबळ
सेमानक तण्डरे, हमे त
रक्षाकल सेमानक नगरक येनेबेळ चिह्नवर्ण तार
भासि चालि याइथान्ता वषरि नईक,
से नईक अन्य एक नईक, ता परे समद्रक।
सेमानक गाईगोरू आजकालि निर्विघ्नरे चरि
बेळबडे फेरि आसछन्ति गहाळक।
बालक बालिकामाने निर्भयरे पहँरन्ति पोखरीर एव
जगलक याउछन्ति वणभोजि करि.
मक लोकंकर पाटि फिटिलाणि कदवा कर्मान
पगमाने लधिलेणि गिरि।
पलपल अम्मरक छाइ पडि आउ
अधार याउोन घोटि दिन दिपहर,
एणिकि किएसे मले पर्वपरि आउ
शोक बा आश्चर्य भाव नाहिँ, बन्ध्र कटम्ब न
देखिछन्ति मलालोक वर्षवर्ष धरि
ठिआ होइ रहिथिला जीवन बाहारे।

मँ किन्तु हमर नाओं
उच्चारण करि बसिले हिँ
काहिँकि हठात मोर जिभ शुखियाए?

चार

तुम्हारा नाम था हर वक्त उनकी जबान पर
तुम्ही ने तो रक्षा की थी उनके नगर की
जब उसके नामोनिशान बह जाते वर्षा में नदी में
उस नदी से दूसरी नदी में,
उसके बाद समुद्र में।
अब उनके गाय-गोरू निर्विघ्न चरते
और साँझ ढले लौटते ग्वालों के
बालक बालिकाएँ निर्भय हैं तैरते हैं पोखर में
वन विहार के लिए निकल पड़ते हैं।
मूकों के मुँह खुल चुके कभी के और
पंगु भी गिरि को लाँघने लगे हैं।
दल बनाए आए राक्षसों की छायाओं में अब
दोपहर को आता नहीं घिर अंधकार
अब कोई मरे तो पहले की भाँति और
शोक या आश्चर्य भाव आते नहीं
क्योंकि बंधु जनों ने देखा है मृतक सालों तक
खड़ा रहा जीवन के बाहर।

पर मैं तुम्हारे नाम का
उच्चारण करते ही पता नहीं क्यों
जीभ सूख जाती है मेरी अचानक?

गाईगोरु पिलाछुआ इत्यादिरे मोर
आग्रह बोळला नाहिँ काहिँकि एथाएँ?
वाळकाळ ए नगर न भांगि काहिँकि
रहिथिव? आजिकालि कथा कहिथिवा,
चालवल करुथिवा दिने मूक पंग लोकक
समग्र अतीत किए निश्चिन्ह करिव?
जन्म होइ नथिवा वा वहिदिने मरि मारि थिवा
लोकक आखिरु किए लह पोछि देव?

एपरि नानादि प्रश्न
निजक पचारे निजे मुँ अज्ञानी नारी।
चाहिँ वस, तम पाखे कृत्यकृत्य लोकमानकर
शोभायात्रा चालिगले केउँ बटा उहाड बाहारि
तमे आसि ठिआ हव मो पछरे, मो कानरे खोलि मो कानरे
कहि देव सवर उत्तर,
एपरि अचिन्तनीय युगयुग व्यापी शब्द टिए
याहा शण शण बेळ गोडि यिव सव
सशयर, पणि एक प्रश्नपाट वाक्य गठनर।

गाय-गोरु बाल-बच्चे वगैरह के लिए
आग्रह मुझमे
जगा नही अब तक, पता नही क्यो कर?
काल-काल के लिये यह नगर न· , · उजड कर
क्यो भी रहेगा? आज कल बात करने वाले
चलने फिरने वाले, एक दिन मूक पंगु थे जो उनके
अतीत को कौन भी करेगा निश्चिह्न?
अजन्मे या काफी दिन हुए मरे लोगो की आँखों से
आँसू कौन पोछ देगा?

इस तरह के कई सवाल
पूछने लगती हूँ मै आपने आपसे
मै अज्ञानी नारी निहारती रहती हूँ
तुम्हारे पास मे कृतार्थ लोगो के जलस
गुजर जाने पर।
किसी झुरमुट की आड से निकल कर आओगे बाहर
और मेरे पीछे तुम खडे हो जाओगे
कानो मे मेरे, केव न मेरे ही कानो मे
कह दोगे सभी के उत्तर,
इस भाति अचिननीय युग-युग व्यापी एक शब्द
जिसे सुनते-सुनते ढल जाएगी बेला
मशय की, फिर एक सवाल के लिये
वाक्य गठन की।

5

सखीमाने शुणिले तम वंशीस्वर, सखीए भाविले
तमे ताक डाक नाआँ धरि,
सखीमाने पिन्धिले निज चाहिदार आयअळकार
झलमल पाटपीनाम्बरी,
गभारे खोंजिले फुल, कपाळे छानिरे
चन्दनरे केते चित्र कले,
आखिरे, कज्जळ पिन्धि देह महकाइ
निजर आकार सबु निराकार नागर तमर
निकाचन कोळे समर्पिले।

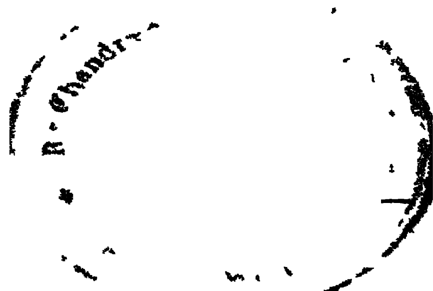
तमर चेहरा नाहिँ, तमे रातिपरि
लिभाउछ सबु बाट यिबा आसिबार।
मो छड़ा किएसे बुझे तमे कि अधैर्य,
तमे पुणि केड़े शोकातुर?
सांगरे न आणि किछि मुँ आसिछि, तेणु
तमकु छुइँबि नाहिँ कि देखिबि नाहिँ,
मुँ जाणि पारिबि नाहिँ केउँमाने शोइ सारिलेणि,
केउँमाने रहिछन्ति चाहिँ।
तमे येबे बन्दकर बंशी बजाइबा
तम कण्ठ वाष्परुद्ध होइयिबा परे
शब्द निःशब्दता परि प्रत्येक थर मुँ
आसे तम निःशब्द डाकरे।

पांच

सबने सुनी तुम्हारी बंशी, सबने सोचा
तुम उन्हें पुकारते हो नाम ले-लेकर,
सबने पहने अपने मन पसंद आभूषण
झिलमिल पाट पीतांबर,
जूड़ों में खोंस लिए फूल, ललाट छाती पर
चंदन से बनाए अनेक चित्र,
आँखों में काजल लगा देह महका
अपना आकार सारा निराकार नागर तुम्हारी
सूनी गोद में कर दिया समर्पित।

तुम्हारा चेहरा नहीं, तुम रात की तरह
मिटाते हो राहें सारी आवाजाही की।
मेरे सिवा है कौन समझता तुम हो कितने आतुर,
और हो कितने शोकाकुल?
साथ कुछ न लिए मैं आयी हूँ, अतः
न छूऊँगी तुम्हें न ही देखूंगी,
मैं नहीं जान पाऊंगी कौन लोग सो चुके,
कौन-कौन हैं जाग रहे।
तुम जब बंद करते हो बंशी बजाना
तुम्हारा कंठ वाष्परुद्ध हो जाने पर
शुद्ध निःशब्दता की भांति हर बार मैं
आती हूँ तुम्हारी निःशब्द पुकार सुन।

मुँ जाणे फेरिबि आजि राति सरिगले
पुणि मो घरकु आउ पुणि मो मृत्युकु,
मुँ किन्तु आसिबि कालि रातिरे तापरे
प्रत्येक रातिरे फेरि तमरि पाकरू
आसुथिबि ये पर्यन्त मो विवस्त्र देह
आउजाइ नेइनाहँ मो जीवन काळ
ओ तम जीवनकाळ अन्त हेबा परे,
ये पर्यन्त मुँ निश्चिन्ह होइ याइ नाहिँ
पुरापुरि तम शून्यतारे!



मैं जानती हूँ लौट जाऊंगी आज रात बीतने पर
पुनः अपने घर और पुन: अपनी मृत्यु मे,
फिर भी मैं आऊँगी कल रात उसके बाद
हर रात लौटूंगी तुम्हारे ही पास,
आती रहूँगी जब तक मेरी विवस्त्र देह
तुम टिका नही लेते मेरा जीवन
और अपना जीवन अत होने के बाद,
जब तक मैं निश्चिह्न नहीं हो जाती
परी तरह तुम्हारी शून्यता में।

6

तमे मते येउँथर प्रथमे छुइँल

मो भितरे रहिथिबा सबु शून्यस्थान
हठात मुखर हेला, प्रत्येक दिगरु
तमे मते डाकिथिबा परि जणागला
मुँ याहा हअन्ति तार आकांक्षा भितरु।

से डाकरे उच्चारण नथिला, पदे बि
कथा तमे कहिन, अथच
मते लागिला ये सात सिन्धुंक गर्जन
अपेक्षा प्रबळतर स्वररे डाकुछ.
बारम्बार बज्रपात बारम्बार भूकम्परे तमे
धूळिसात् करि मोर सयत्न निर्मित
रूप रूपान्तरमान मुँ याहा हअन्ति
निर्भयरे ताहा होइ यिबाक कहुच।

सेतेबेळे मुँ निजर नानाबिध भूमिकामानंक
आढुआळे लुचिगलि, सेमानंक वक्तव्य सबुकु
मुँ निजे विश्वास कलाभळि कहिगलि,
दहि दुध बिकिबार हिसाब ओ क्षुद्रादपिक्षुद्र
द्विधामान, अभिळाषमान

छह .

तमने मझे जिम बार पहले छुआ
मेरे अदर की सभी सूनी जगह
हठात मुखारित हो उठी, प्रत्येक दिशा मे
तम मझे पुकार रहे हो वैसा लगा
जो मै होती, उमी आकाक्षा के भीतर से।

उम पुकार मे उच्चारण नहीं था, एक भी
बात तुमने कही नहीं, फिर भी
मुझे लगा मात मिधुओं की गर्जना से
प्रवलतम स्वर से पुकार रहे हो
बारबार वज्रपात और भूकंप में तुम
धूलिसात करते मेरे सयत्न निर्मित
रूप रूपातरों को मैं जो बनती
निर्भय वही बन जाने को कहते हो।

तब मैं अपनी अनेक भूमिकाओं की
आड़ में छिप गयी, उनके सारे वक्तव्य
मैं खुद विश्वास करती सी कह गयी
दही दूध बेचने के हिसाब और छोटी से छोटी
दुविधाओं को, अभिलाषाओं को

मखस्थ संलाप परि बखाणि बसिलि।

बेळेबेळे लागुथिला एइ सत, [illegible]ार
सीमाबद्ध जीवद्दशा, ता भित रे आहुरि सीमित
मोटामोटि निरुत्ताप ए यौवन, दिने
भुलियिबि तमे मते छुइँबा मुहूर्त,
आंक्षिरे आक्षिए निरुद्विग्न दृष्टि धरि
आगभळि देखुथिबि कदम्ब गछरे
पत्र फुटे ओ मउळे, झलमल दिशे
नई पाणि चन्द्र किरणरे।

तथापि मुँ जाणिथिलि
प्रथमें छुइँल तमे मते येउँ थर,
आजि हेउ कालि हेउ दिने ना दिने मुँ
तमकु अवश्य देबि मोर अंगीकार,
चुप होइयिबि, मुँ याहा हुअन्ति
ताहा होइयिबि मात्र रातिक भितरे,
तमकु मुँ काळकाळ जाकि धरिथिबि
विवसन अन्तःकरणरे।

कंठस्थ संलाप की भांति बखानती गयी।

कभी कभी लगता था यही सच है, मेरी
सीमावद्ध जीवद्दशा, उसी के अंदर है और भी सीमित
लगभग निरूत्ताप यह यौवन, और एक दिन
भूल ही जाऊंगी, तुम्हारे मुझे छूने की पहली बेला को,
आँखों में आँख भर निरूद्विग्न दृष्टि लेकर
पहले की तरह, देखती रहूँगी कि कदंब पर
फूल खिलते हैं और मुरझाते हैं, झिलमिलाता है
नदी का जल चांदनी में।

फिर भी मैं जानती थी
पहली बर जब तुमने छूआ मुझे
आज हो कल हो, किसी न किसी एक दिन
तुम्हें अवश्य सौंप दूंगी अंगीकार अपने
चुप हो जाऊंगी, मैं जो बनी होती
वही बन जाऊंगी सिर्फ एक ही रात में
मैं तुम्हें काल-कालांतर तक जकड़े रहूंगी
विवस्त्र अंतःकरण में।

7

तमकु प्रथम थर छुइँबाकु गलाबेळे मोर
हात हठात् रहिगला, चारि आड़ अन्धार दिशिला,
तमे बि दिशिल नाहिँ, किछि बोलि किछि
भाबिबार सामर्थ्य नथिला।
तमकु न छुइँबि किम्बा न छुइँ पछकु
घंचियिबि भाबिबा आगरु

मुँ अण निःश्वासी होइ पड़िलि सतेकि
यमुना आसुछि माड़ि आगरु पछरु,
सते कि पवन आउ सचराचररे
नाहिँ, सते कि मुँ येतेनि थिबि
मोर स्वप्नमाने सत्य हेबा आशंकारे
निति आतंकित हेउथिबि।

तमकु छुइँले तमे
मिशियिब मो रक्त भितरे,
आउ कण आगपरि बइँशी खण्डिए
धरि चालुथिब प्रतिदिन मो पछरे?
आउ कण लुचि चाहुँथिब येबे
ओदालुगा पिन्धिथिबि गाधोइबा परे?

सात

तुम्हें पहली बार छूने को बढ़ी थी कि
हाथ सहसा रुक गया, चहुँ ओर अंधेरा-सा लगा,
तुम भी नहीं दिखे, कुछ भी
सोचने का सामर्थ्य नहीं था।
तुम्हें छूऊँ या छूए बिना ही पीछे
हट जाऊं सोचने से पहले

मैं हाँफने लगी जैसे
यमुना उमड पडी हो आगे से पीछे से,
जैसे हवा अब चराचर में
नही है, जैसे मै जितने दिन रहूगी
मेरे सपने सच होने की आशंका में
नित्य आतंकित होते रहेगे।

तुम्हें छूने पर तुम
मिल जाओगे मेरे रक्त में,
क्या फिर पहले जैसा एक बाँसुरी
लिए चलते रहोगे प्रतिदिन पीछे-पीछे मेरे?
क्या फिर छुप-छुपकर देखोगे जब
गीले कपड़े पहनी होऊंगी नहाने के बाद?

नाँ मोते भुलाइ देब मो रक्तमांसर
शेष परिणति तम बांक चाहाँणीरे?

केउँठि नथिब तमे। मोर ओदा लुगा
येउँ पवनरे शुखे से पवन मोर
देह कु खुखाइ जालि देइ यार्उथिब।
मुँ त शुणिबाकु थिबि प्रस्तुत नथापि
नई किआँ कथा न कहिब?
चढ़ेइ काहिँकि उड़ियिबे मुँ तांकर
निकटकु आसिबा मात्रके?
खालि कण शुन्यस्थान देखायाए यदि
काळकाळ किए निजे निजक हिँ देखे?

से कण चळत्शक्तिहीन डाहाणी
परि काळक्रमे होइयाए
यिए एकोटिआ थाए निजर गुम्फारे
ओ निजर मांस निजे खाए?

तेबे कण एइ भल, तमे
मुं मरिबायाएँ मोर किछि दूरे थिब,
सबुबेळे कहुथिब छुअँ छुअँ बोलि,
छुईँबि कि नछुईँबि भाबु भाबु मोर
प्राणवायु उड़ियाइथिब?

तापरे लागिला यदि एते दूरे तमे
मोर बहिर्भत होई रह,

या मुझे भुला दोगे मेरी रक्त-माँस की
अंतिम परिणति अपनी तिर्यक चावनी में?

कहीं नहीं होगे तुम। मेरे गीले कपड़े
जिस पवन में सूखते हैं वह पवन मेरी
देह हो सुखा-जला जाता होगा।
मैं तो सुनने को तैयार रहूंगी, फिर भी
नदी क्यों नहीं कहेगी बातें?
चिड़ियाँ क्यों उड़ जाएंगी मैं उनके
निकट पहुंचते ही?
क्या केवल रिक्त स्थान दिखता है यदि
अनंत काल तक कोई देखे खुद ही खुद को?

क्या वह चलने में असमर्थ डायन-सी
क्रमशः बन जाती है
जो एकाकी रहती है अपनी गुफा में
और अपना माँस खुद खाती है?

तो क्या यही ठीक है, तुम
मेरे मरने तक मुझसे कुछ दूर रहो,
हमेशा कहते रहोगे छूओ-छूओ,
छूऊँ या न छूऊँ यही सोचते-सोचते मेरे
प्राण-पखेरू उड़ चुके होंगे?

उसके बाद लगा यदि इतनी दूर तुम
मुझसे बाहर रहे,

मुँ तमर मुहँ चाहिँ भुलियिबि तमे
मोर केहि बोलि केहि नूहँ।
मुँ तमर केहि नुहें, मते देखाउछ
रूपटिए अनुग्रह करि,
से रूपर आक्षि ओठ, बाहु, कटिदेश
वायवीय—इन्द्रधनुपरि।

सेतेबेळे सबु अर्ध गठित कामना
मानंकु मूँ एकत्रित कलि,
झडपरि आसि तम आंगुठि भितरे
मो आंगुठिमान छन्दि देलि।

मैं तुम्हारा मुख देख भूल जाऊँगी कि तुम
शायद मेरे कुछ भी नहीं लगते।
मैं तुम्हारी कोई नहीं, मुझे दिखा रहे हो
एक रूप अनुग्रह करके,
उस रूप में आँखें, होंठ, कमर हैं
वायवीय-इंद्रधनुष-सी।

तब सारी अर्धगठित कामनाओं को
एकत्र किया मैंने,
आँधी-सी आकर तुम्हारी अंगुलियों में
उलझा दी मैंने अपनी अंगुलियां।

8

अकाशरे मेघ नाहिँ, शीतळ पवन
शीर् शीर् चालि याए पत्र गहळरे,
चारिआड़े तोफा जह्न, नानादि आशार
जआर उठछि फुलि शारद रातिरे।

तमे बंशी बजाउछ, हसुअछ, सबुरि कानरे
कण कहि दिअ याहा पोछि दिए सबु
स्मृति, सबु धूसर अतीत,
मत होइ आसुथिबा स्वप्न परि केबे धरादेइ
शोचनार छायाच्छन्न केउँ लुचाछपा
कोणे केबे हुओ अन्तर्हित।

अन्यमाने कान्दुथान्ति मुण्ड पिटि, छाति कोड़ि होइ,
मुहुर्मुहु चेता बुड़ियाए
कि अपराधरु तमे सेमानंक बाहुबन्धनरु
चालिगल भाबु भाबु बेळ गड़ियाए।
निरेखि निरेखि येते चाहिँले बि तमे
दिश नाहिँ एड़े तोफा जन्ह आलुअरे,

आठ

आकाश में बादल नहीं, शीतल पवन
मनसनाता बहता जाता पत्तों की भीड़ में
चारों ओर है निर्मल चादनी, अनेक आशाओं के
ज्वार उमड़ पड़ते हैं शारद रात में।

तुम बजा रहे हो बांसुरी, हंस रहे हो, सभी के कानों में
क्या बात कहते हो जो पोंछ देती है सभी
स्मृतियों को, धूसर अतीत को
सच बन आते हुए स्वप्न की तरह कभी
पकड़ में आकर
शोचना के छाया च्छन्न किसी लुके-छिपे
कोने में होते अर्तार्हत।

दूसरे रोते रहते सर पटक कर, छाती पीट कर
बारबार चेतनता लुप्त होती जाती
पता नहीं किस अपराध के कारण
चले गये तुम उनके बाहु-बधन से
यही सोचते-सोचते बेला ढल जाती है।
निरख-निरख कर जितना भी देखें
तुम दिखाई नहीं देते स्वच्छ चांदनी में

वयस मलिन हए, जन्ह बि मळिन
दिशिलाणि शेष प्रहररे।

ठिक सेहि समयरे नम लागि मोर
चरम आसक्ति, मते स्पष्ट देखायाए
नमारे मुहरे आउ हम नाहिँ, आक्षिर लहरे
छोट छोट बन्दा मिशि बड बुन्दा हए।
चारि आड निकाचन, से निकाचनता
ईश्वरक भोगिबाक हए।

तमे क्रण पाइनाहँ मँ पचारुनाहिँ।
मँ केवळ समस्तक अजाणत लाचि लाचि आसे
तम थिबा निरोळा जागा कु।
तमे जमा दिशनाहँ इन्दिवर किम्बा पद्म पारि,
खालि केउँ ए पर्यन्त तम अगोचर
आकाक्षारे भिडछ मो पणत कानिक।

म्लान होती जाती आयु चांद भी मलिन
दिखने लगा है अब अंतिम पहर में।

ठीक उसी समय ... तुम्हारे लिये मेरी
उमड आती चरम आसक्ति और मुझे दिखता है
तुम्हारे चेहरे पर हँसी ही नहीं है, आंसू की
छोटी-छोटी बूंदें मिल बडी बनती हैं
चारों ओर सुनसान, वह एकांतता
ईश्वर को झेलनी होनी है।

क्या तुमने नही पाया पूछती नहीं हूँ।
मै केवल अनजाने में सब के, आती हूँ छिपकर
तुम जहाँ होते उस एकान्त जगह।
तुम बिल्कुल लगते नही इंदिवर या कमल के समान
सिर्फ किसी अपनी अगोचर
आकांक्षा मे खींचते हो मेरा आँचल।

9

थरेमात्र दिशिथिल स्वप्नरे, तापर
मो पाद काढ़िलि गोहि आदि अन्त नथिबा बाटकु;
केते घर, केते लोक मो अजाणतरे
मो जीवने घटिथिबा घटणामानङ्क
अतिक्रम करिगलि; निजकु लचाइ
निजठारु छपिछपि गलि.

वयस ओ हताशारे भाराक्रान्त आशा आसिथिबा
देखिबा मात्र के बाट भाङ्गि याइथिलि।
नाचिगलि गच्छकण्ठ येउँमाने मने देखिलाहिँ
बाट सन्धि दइथान्ति गदागदा फुल मकरन्द।
नटक पड़िट गलि काळ नाग गाए शाणशाण
मो राजकुमारी पाइँ रहि यिबि न अर भितरे।
नाचिगलि मा निजर स्कन्दे रहिलि
शाणि मध्य न शाणिला पाइँ
अधावधि जीवनर काकलि मिनति,
स्मृति अन्तर्दाहमान मखमलि रंग कलावळे
चालिगलि, किछि स्मृति नथिला येमिति।

नौ

केवल एक बार दिखे थे सपने में, उसके बाद
मैंने डग बढ़ाया इसी आदि-अनहीन राह पर;
कितने मकान, कितने लोग, अपने अनजाने में
अपने जीवन में घट रही घटनाओं को
लाँघ आई: खुद को छुपाकर
खुद में छुप-छुपकर गई.

उम्र और हताशा से बोझिल आस बँधते
देख ही राह बदल देनी थी।
छुप गई पेड़ों में जो मुझे देखने ही
राह पाट देते ढेर की ढेर फूलों की महक में।
नदी को अनदेखा कर गई ताकि उसकी कहानी सुनते-सुनते
मैं राजकुमारी-सी रह जाऊँगी महल में।
छुप गई अपने ही रुदन में, रह गई
सुनकर भी न सुनने-सी,
अब तक के जीवन की
गिड़गिड़ाहट और मिन्नतें
स्मृति अंतर्दाह सुख की तरह रंग लगाते समय
चली गई, मानो कोई स्मृति थी ही नहीं।

ଏ ବାଟରେ ଗଲାବେଳେ
सबु नष्ट होइयिबा क्षय होइयिबा देखायाए,
देखायाए निज निज विकळांगतारे
छन्दि होइ याइथिबा भंगारुजा मबुरि उपरे
बुन्दा बुन्दा लुह जमियाए।
समये समये इच्छा हुए रहियान्ति
किछिबेळ प्रत्येक पाखरे,
आउँसि दिअंति ताकु मोर यावतीय
मुलाएम् अनुशोचनारे।
तमे किन्तु तिळे मात्र विश्राम देबनि,
छाडिबनि अन्य केउँ बाटरे यिबाकु,
तम निर्दयता बोधे चाहिँ बसिअछि
मोर लह् लहाण देहकु।

तमे बोधे चाहँ याउ भांगिरुजि ध्वंस होइ मोर
आत्मा यार मने अछि मुँ तमकु दगा देइथिबा
दिन राति प्रतिटि मुहूर्त,
अदृश्य अन्धार दूरदूरान्तर केउँ
कोणे यार बुन्दे लुह एबेबि गच्छित
मरि मरि आसुथिबा जन्हपाइँ, बुढ़ाबुढ़ी परि
दिशुथिबा बाळक ओ बाळिकांक पाइँ,
दिनकर उज्वळता मने पड़िबार
ओजनरे येउँ फुल चाले नइँ नइँ,
तापाइँ ओर अस्थिपाइँ, अस्थिर उपरे
थिबा मांसपाइँ, मांसकु आबोरि
रहिथिबा चमपाइँ याहा चाहुँ चाहुँ
मउळि याउछि एक अनुपस्थितिरे।

इस राह से गुजरते वक्त
सब कुछ नष्ट होते क्षय होते दिखते हैं,
दिखते हैं अपनी-अपनी विकलांगता में
उलझे हुए टूटे-फूटे पर
बूँद-बूँद आँसू जम जाता है।
कभी-कभी मन करता ठहर जाऊँ
कुछ-कुछ पल सबके पास,
सहला दूं उन्हें अपने तमाम
मृदुल पश्चातापों मे।
किंतु तुम ज़रा भी विश्राम नहीं दोगे,
जाने नहीं दोगे किसी दूसरी राह से,
तुम्हारी निर्दयता शायद देख रही है
मेरी लहूलुहान देह।

शायद तुम चाहते हो,
हो जाए जर्ज़रित ध्वंस मेरी
आत्मा जिसे याद है तुम्हें मेरी छली हुई
दिन-रात हर घड़ी,
अदृश्य अंधेरा दूर-दूर तक किसी
कोने में जिसका एक बूँद आँसू अभी भी एकत्र है
क्रमशः मर रहे चांद के लिए, बूढ़े-बुढ़िया-से
दिख रहे बालक और बालिका के लिए,
दिन भर की उज्वलता याद आने की
बोझ से जो फूल चलता है झुक-झुककर
उसके लिए और अस्थि के लिए, अस्थि के ऊपर के
माँस के लिए, माँस को भींचकर रखे
चमड़ी के लिए जो देखते-देखते
मुरझा रही है एक अनुपस्थिति में।

କିଛି ସହି ପାର ନାହିଁ, ଫୋପାଡ଼ି ଦେଉଛ

कुछ नहीं सह पाते, फेंक देते हो
अब तक घटित घटनाओं को।
तुम तो रोये नहीं कभी, कैसे समझोगे
मैं बूँद भर आँसू क्यों आती हूँ बहती हुई
आजीवन तुम्हारे ही पास?
तुम नहीं जान सकते कितना अच्छा लगता है
जब आँसू पुँछ जाता है—
पहले पहली बूँद, उसके बाद की बूँद भी
अंतिम बूंद बची होने तक।

10

अस्थिरु उतारि देलि
जरी देह सूता देह रेशमर देह,
निजकु ढाकिबापाइँ कारुकाम करा आवरण
काढ़िदेलि, मोर असहाय
निराभरणता कलि तमकु अर्पण
तमे सर्जि थिाबा घोर अन्धकारे, सेठि
मुँ मिना पारेनि देखि मो अतीत काळ,
अभ्यासवशतः सिना ढाँकि दिए मोर
लज्जारुण शून्यतार मत्र सन्धिस्थल।

मुँ जाणिछि मो हातरे जोर नाहिँ, नाहिँ
लेश मात्र दम्भ मो मनरे,
मुँ जाणिछि तमे आस दक्षिणा पवन
परि, पहँचिबा आगुँ निकांचन
परमायु शिर्राशिर हए केउँठारे।
अंगप्रत्यंगरे किछि स्मृति नाहिँ, देख
तरा परि मो वयस बढ़े नाहिँ किम्बा कमे नाहिँ
तमे आजि आस किम्बा आस कल्पना-कल्पान्तर परे
तम लागि मो रोमांच चिरकाळ स्थायी।
ये़ने पक्षी ये़ते थर गबन्तु पछके

दस

अस्थिपिंजर मे उतार डाली
ज़रदोज़ी की देह, सूत की देह, रेशम की देह,
खुद को ढँकने के लिए बनाए वे सभी नक्काशी भरे आवरण
उतार दिए, अपनी असहाय
अलंकारहीनता के साथ किया तुम्हें समर्पण
तुम्हारे सृजित घोर अंधेरे में, वहां
मैं नहीं देख पाती अपना अतीत,
और न ही अभ्यासवश ढंक लेती हूँ अपनी
लज्जा से उस लाल शून्य के सारे संधिस्थल।

मैं जानती हूं मेरे हाथों में दम नहीं है, नहीं है
दंभ मेरे मन में तनिक भी
मैं जानती हूँ तुम आते हो दक्षिणापवन
जैसे पहुँचने से पहले एकांत में
आयु में टूटन होती है कहीं।
अंग प्रत्यंगों में कोई स्मृति नहीं, देखो
तारे की तरह मेरी उम्र न बढ़ती है
न घटती है।
तुम आज आओ या आओ
कल्पकल्पांतर के बाद
तुम्हारे लिए मेरा रोमांच है चिरस्थायी
चाहे जितने पक्षी जितनी बार चहचहाएं

राति पाहिबनि, मेघ उहाड़े चन्द्रमा
बारम्बार उंकि मारुथिब,
बारम्बार मो आत्मार संभ्रम नथिबा
यामिनीर आदिअन्त क्षयवृद्धि नथिबा सर्वदा
प्रथम प्रहरठारु फेरि याउथिब।

नईर से पाखे दिन हेले हेउथाउ।
एठारे केबळ राति, तमे येतेथर
मते छुअँ सेतेथर वयः प्राप्ति हेबा
उत्सवरे मो मृत्य मखर।

रात नहीं बीतेगी, बादलों की ओट से चाँद
बार-बार झाँकता होगा,
बार-बार मेरी आत्मा की संकोच शून्य
रातों का आदि-अंत क्षयवृद्धि रहित हो हमेशा
प्रथम प्रहर से लौट जाता होगा।

नदी के उस पार होती है सुबह तो होती रहे।
यहां केवल रात है, जितनी बार तुम
मुझे छूते हो उतनी ही बार वयः प्राप्त होने के उत्सव में
होती है मुखर मृत्यु मेरी।

11

ଏବେ ଖୁବ ରାତି, ଏବେ ମୁଁ ପୁଣି ତରଳି
याए, पुणि भलि याए मो कूळ महत,

पुणि हँ करिदिए नमे मते पचारिबा आगुँ,
चकचक अलंकार पिन्धि पुणि मुँ बाहारि पड़े
संसार गोटाक येबे निदरे अचेत।

संसार गोटाक येबे निदरे अचेत
नमपाई उजागर रहे सारा राति,
जाणिशाणि फांकि दिए अन्य समस्तक,
निर्द्वन्द्वरे भांगि दिए कालक्रमे बढी हेबाक ओ
मरिबाक देइथिबा दृढ़ प्रतिश्रुति।

इइयाए छोट छोट अनेक आशा ओ
छोट छोट अनेक हताशा
घरर इर्ल्लण्डबन्ध अवलीळाक्रमे
लंघियाए पुणि पाप करे
आगभळि किन्त नहे एबे,
विना शोचनारे एव विना आतंकरे।

ग्यारह

अभी घनी रात है, मैं अभी फिर पिघल
जाती हूँ, फिर भूल जाती हूँ अपने कुल का महत्व,
फिर हाँ कर देती हूँ तुम्हारे पूछने से पहले,
चमकीले आभूषण पहन मैं फिर निकल पड़ती हूँ
सारा संसार जब नींद में डूबा रहता है।

सारा संसार जब नींद में डूबा रहता है
तुम्हारे लिए जागती रहती हूँ सारी रात,
जान-बूझकर धूल झोंकती हूँ सबकी आँखों में,
बेहिचक तोड़ देती हूँ क्रमशः बूढ़ी होने व
मरने से किए दृढ़ वायदे।

लाँघ जाती हूँ छोटी-छोटी आशाएँ और
छोटी-छोटी अनेक हताशाएँ,
घर की चौखट सहज ही
लाँघ जाती हूँ, पुनः पाप करती हूँ
किंतु पहले-सी नहीं अब,
बिना पछतावा के और बिना आतंक के।

मुँ आउ आवद्ध नुहे मो जन्मबेळर
भाग्यरे, आस्पर्द्धा परि मुँ
बारण नमानि आसे तम निकटकु।
प्रत्येक आस्पर्द्धा शेष हुए तमठारे।
तमे त अवश कर, आत्महरा कर
चेतनाकु निति नुआ नुआ आनन्दरे।

जाणे नाहिं ए अन्धार भितरे तमे मो
पाखे पाखे अछ किम्बा नाहँ।
न थिले बि कण हेला। तमे तम कथा रखिबाकु
येते काळ प्रयोजन कर सेते काळ
निःसंकोचे मो पाखरु निअ।

अब मैं नहीं बँधी अपने जन्म के
भाग्य से, चुनौती-सी मैं
प्रतिबंधों को न मान आती हूँ तुम्हारे पास।
हर चुनौती खत्म होती है तुम्हारे ही पास।
तुम तो विवश कर देते हो,आत्मविभोर कर देते हो
चेतना को प्रतिदिन नयी-नयी ख़ुशियों से।

नहीं जाननी इस अंधेरे में तुम मेरे
आस-पास हो भी या नहीं।
न भी हुए तो क्या? तुम अपना वायदा पूरा करने का
जब तक प्रयोजन करते हो तब तक की अवधि
निःसंकोच मझसे ही लेते हो।

12

खालि आमे दुहें थिलु गोटिए नाहारे।
मोर खालि मने अछि से मते डाकिले
हसि हसि, धीरे धीरे, मुँ नाहारे पाद
देबा मात्रे नाहा बाहिनेले।

से नाहा कुआड़े गला के जाणि, येउँठि
आकाश सरिलापरि जणा पडुथाए
कि येउँठि मुहूर्मुहु नूआ हेउथिबा
आग्रहर अंतरीप देखायाउथाए

मते किछि जणा नाहिँ। केतेबेळ याएँ
दिशुथिला नईघाट, तोटा घरद्वार,
क्रमे क्रमे सबु घुंचि याइ अवशेषे
दिशिला विभिन्न वर्ण केबल तांकर।

आउ किछि दिशिलानि, एपरिकि नई
ओ नईरे चालुथिबा नाहा दिशिलानि,
आकाश अदृश्य हेला, सूर्य चन्द्र तारा
थिले कि नथिले किछि जणापड़िलानि

बारह

केवल हम दोनों ही थे एक नाव में।
मुझे बस इतना याद है उन्होंने मुझे बुलाया
मुस्काते हुए, धीरे-धीरे मैंने नाव में पैर
रखा ही था कि वे नाव खेने लगे।

न मालूम वह नाव कहाँ आ गई, जहाँ से
आकाश खत्म होने-सा लग रहा था
या जहाँ से लगातार नये होते
आग्रह का अंतरीप दिख रहा था।

मुझे कुछ याद नहीं। कब तक
दिख रहे थे नदी के घाट, अमराई घर-द्वार
धीरे-धीरे सब कुछ ओझल होकर अंत मे
जो दिखाई दिया नाना वर्ण समायुत, वह केवल उन्हीं का था।

फिर कुछ नहीं दिखा, यहाँ तक कि नदी
और नदी में चलती नाव तक नहीं दिखी,
आकाश अदृश्य हो गया, सूर्य चंद्र तारे
थे या नहीं कुछ पता नहीं चला।

ଖାଲି ସେହିଁ ଦିଶୁଥିଲେ, ଯୁଆଡ଼େ ଚାହିଁଲେ
ସେ ହିଁ, ଏକମାତ୍ର ସେ ହିଁ,
ମୋର ବାରମ୍ବାର ଜନ୍ମ ବାରମ୍ବାର ମୃତ୍ୟୁ
କୁଆଡ଼େ ଉଭେଇ ଗଲା ଜାଣି ହେଲା ନାହିଁ।

କେତେ ମନା କରୁଥିଲି କିଛି ନମାନି ସେ
ଛୁଇଁ ଦେଲେ ମୋର ଆତ୍ମବିସ୍ମୃତ ଯୌବନ,
ତାପରେ ସଂଭ୍ରମ ସବୁ କଟିଗଲା, ଫିଙ୍ଗିଦେଲି ମତେ
ଆଚ୍ଛାଦିତ କରିଥିବା ଆନୁଗତ୍ୟମାନ।

ମୁହୂର୍ତ୍ତକେ ପହଁଚିଲି ଘୋର ଅଂଧକାରେ
ଯେଉଁଠି ନଥାଏ କିଛି, ନାମ କିମ୍ବା ସମୟ ନଥାଏ,
ସବୁ ଆକୃତିର ପୂର୍ବବର୍ତ୍ତୀ ପରବର୍ତ୍ତୀ
ନିଶ୍ଚିହ୍ନତା ଦିଗବିଦିଗେ ବ୍ୟାପି ରହିଥାଏ।

ସେଠାରୁ ଅନେକ ଯୁଗ ଅତିକ୍ରମ କରି
ପହଁଚିଲି ଯେଉଁ ଠାରେ ଆକାର ନଥାଇ
କେବଳ ଚେତନା ଥାଏ, ଯେଉଁପରି ସମୁଦ୍ର ଯାହାର
ତଳ ନାହିଁ ଉପକୂଳ ନାହିଁ।

ଏକ ପରେ ଅନ୍ୟ ଏକ ନକ୍ଷତ୍ର ମଣ୍ଡଳ,
ସ୍ଥାବର ଜଂଗମ ଢେଉପରି ଉଠୁଥିଲେ,

केवल वे ही दिख रहे थे, जिधर देखो
वे ही, सिर्फ वे ही,
मेरा बार-बार जन्म लेना बार-बार मरना
कहाँ लुप्त हो गया समझ नहीं पायी।

लाख मना करती रही कुछ नहीं सुना उन्होंने
छू लिया मेरा आत्म-विस्मृत यौवन,
उसके बाद सारे संकोच मिट गए, फेंक दिए मैंने
मुझे ढँकी सारी वश्यता।

पलभर में जा पहुँची घोर अंधेरे में
जहाँ नही होता कुछ, नाम अथवा समय नहीं होता,
सारी आकृतियों से पहले और बाद की
निश्चिह्नता दिशा-दिशांतरों में फैली हुई थी।

वहां से कई युग लांघकर
पहुँची जहाँ आकार नहीं था
थी केवल चेतना, जैसे समुद्र जिसका
सतह नहीं था, उपकूल नहीं था।

एक के बाद दूसरा नक्षत्र मंडल,
स्थावर जंगम लहरों की तरह उभर रहा था,

ଅନତିବିଳମ୍ବେ ସେହି ଭେଦାଭେଦ ନଥିବା ତରଳ
ଆଲୋକରେ ଢେଉପରି ଭାଂଗି ଯାଉଥିଲେ।

ମୁଁ ବି ନିଜେ କେତେଥର ଢେଉଟିଏ ପରି
ଉଠିଥିବି କେତେଥର ଭାଂଗି ଯାଇଥିବି,
କେତେଥର ଆଜିକାଲି ନିଖୋଜ କୌର୍ଣାସି
ନଈକୂଳେ ଗୀତ ବୋଲିଥିବି।

କେତେ ଜଳବାୟୁରେ ମୁଁ କେତେ ପୋଷାକରେ
ଆସିଥିବି, କେତେ ଥର ଫେରି ଯାଇଥିବି
ପ୍ରତ୍ୟେକ ଫେରିବାବେଳେ ହୁଲସ୍ତୁଲ ହୋଇ ଯାଇଥିବ
ଦିଗନ୍ତ ବିସ୍ତୃତ ମୋର ସଚ୍ଚ୍ୟଗ୍ର ପୃଥିବୀ।

ସବୁ ମନେ ପଡ଼ିଲା, ମୁଁ ବାରମ୍ବାର ୟିବା ଆସିବାର
କ୍ଲାନ୍ତିରେ ଆଉଜି ଗଲି ତାଂକର ଛାତିରେ,
କିଏ ପିତା କିଏ ସ୍ୱାମୀ କିଏ କଣ ସବୁ ଭୂଲିଗଲି
ତାଂକ ସଂଗେ ନୌକା ବିହାରରେ।

ୟାହା ୟାହା ମୁଁ କହୁଛି ସବୁ କଣ ଖାଲି
ପ୍ରତିଧ୍ୱନି? କିମ୍ବା ପକ୍ଷୀଂକର
କଳରବ, ବତାସର ସୁ ସୁ ଶବ୍ଦ
ପ୍ରତିଧ୍ୱନି ମୋ ଉଚ୍ଚାରଣର?

अविलंब उसी भेद-भाव रहित तरल
रोशनी में लहरों-सा टूट जाता था।

मैं स्वयं भी कई बार लहर-सी
उठी होऊँगी कई बार टूटी होऊँगी,
कई बार आजकल विलुप्त हो चुकी किसी
नदी तट पर गीत गायी होऊंगी।

कई मौसम में मैं कितनी पोशाकों में
आई होऊंगी, कई बार लौट गई होऊंगी,
लौटते समय हर बार हलचल मची होगी
दिगंत विस्तृत मेरी शच्यग्र पृथ्वी पर।

सब कुछ याद आया, अपनी बार-बार की आवाजाही की
थकान से टिक गई उसके सीने पर,
कौन पिता कौन पति कौन क्या है सब भूल गई
उनके साथ नौका विहार में।

जो कुछ मैं कह रही हूँ क्या वे केवल
प्रतिध्वनियाँ हैं? या पक्षियों का
कलरव, आँधी की सनसनाहट या हैं
प्रतिध्वनियां मेरे उच्चारण की?

ସେ ନ ଥିଲେ ପୂର୍ବପରି ବହୁତ ସଂଖ୍ୟକ
ଆକୃତି ଭିତରେ ଏକ ଆକୃତି ଭାବରେ,
କାହାକୁ ପଚାରି ଥାନ୍ତି ମୁଁ ଅଛି ନା ମରି ସାରିଲିଣି
ନୌକା ଦୁର୍ଘଟଣାରେ ବା ଆଉ ମନେ ନଥିବା ରୋଗରେ?

କେତେବେଳ ପରେ ନାହା କୂଳରେ ଲାଗିଲା।
ମୁଁ ନାହାରୁ ଉଲ୍ହାଇ ଆସିଲି।
ଘରକୁ ଫେରିବା ବେଳେ କାହିଁକି କେଜାଣି
ଲାଗିଲା ଦେହରେ ଆଉ ପ୍ରାଣ ନାହିଁ ବୋଲି,

ଲାଗିଲା ଯେ ମୋ ପାଦରେ ଅନେକ ଯୁଗର
ଅନେକ ଦଉଡ଼ି ଛନ୍ଦା, ଯୁଆଡ଼େ ଗଲେବି
ପୁଣି ସେ ଅପରିଚ୍ଛନ୍ନ ଅପରିବର୍ତ୍ତିତ
ନଈର ଘାଟକୁ ନିନି ନିତି ଫେରୁଥିବି।

ପୁଣ ରାତି ହେଉଥିବ, ଘରକୁ ଫେରିବା
ବାଟରେ ନିଷ୍ପ୍ରଭ ସ୍ୱପ୍ନଙ୍କର ମୃତ ଦେହ
ଝୁଣ୍ଟୁଥିବି, କେତେବେଳୟାଏଁ ଶୁଣୁଥିବି
ନଈ କୂଳ କିଏ କହେ ବିଦାୟ ବିଦାୟ।

वे नहीं थे पहले-से, अनेक
आकृतियों में एक आकृति-से
किसमे पूछती भला मैं हूँ या मर चुकी हूँ
नाव दुर्घटना में या अब विस्मृत किसी बीमारी से?

न जाने कब नाव किनारे आ लगी।
मैं नाव से उतर आई।
घर लौटते समय न जाने क्यों
ऐसा लगा शरीर में अब जान नहीं है,

ऐसा लगा कि मेरे पैरों में अनेक युगों की
अनेक रस्सियां बंधी हैं, जहाँ भी जाओ
पुनः उसी गंदले अपरिवर्तित
नदी की घाट की ओर रोज-रोज लौट रही होऊंगी।

फिर रात होती होगी, घर लौटने की
राह में निष्प्रभ सपनों की मृत शरीरों से
टकराती रही होऊंगी कब तक सुनती रहूँगी
नदी किनारे कौन कहता है अच्छा चलता हूँ, चलता हूँ।

13

सखी जणे पचारिला
तमकु काहिँकि एते भल पाए बोलि।
ताक कण कहिथान्ति? खालि तारा खुन्दि होइथिबा
आकाशकु मुँ चाहिँ रहिलि।
हठात् काहिँकि हाड भितरे भितरे
खुब थण्डा लागिला ओ हठात् काहिँकि
गोटापणे थरिगलि पाटि पड़िगला।
काकर पवन योगुँ जमा नुहेँ, मते लागिला ये
ता हेले असंख्य राति आगकु एपरि
रातिटिए आसिब ये मुँ आउ नथिबि
तारामाने थिबे किन्तु ठिक आजिपरि।
किपरि बुझाइ थान्ति एथिपाइँ, खालि एथिपाइँ
तमे एते प्रियतम मोर,
काहाकु बुझाइ हेब प्रकृत कारण
आतंकर, भल पाइबार?

तेरह

एक सखी ने पूछा
कि क्यों तुमसे इतना प्यार करती हूँ,
क्या भी जवाब देती उसे सिर्फ तारे
भरे आकाश ताकती रही मैं।
पता नहीं क्यों अचानक मेरी हड्डियों में
अंदर ही अंदर जाड़ा लगने लगा और हठात्
पता नहीं क्यों समूची कांप उठी
जबड़े जम गये
शीतल हवा के कारण कतई नहीं, मुझे लगा
तब असंख्य रातों के बाद एक रात
ऐसी भी आएगी, जब मैं ही न होऊंगी।
पर आज की तरह होंगी तारिकाएं।
कैसे भी समझा पाती मैं, इसलिए सिर्फ इसलिए
तुम मेरे इतने हो प्रियतम
किसे भी समझा पाती मैं, सही वजह भी क्या है
आतंक की, प्यार की?

14

मे दिन मध्या मुँ केबे भुलि पारिबिकि?
तमे पहँचिबा मात्रे जन्ह उइँ थिला।
मोर अधापोडा देह अमग अमग
जन्ह आलुअरे तिन्ति याइ थरूथिला।
किए जणे याहाक मँ जन्म हेबा दिनु
चिन्हि थिलि, भल, पाइथिलि
मेतेबेळे मरिगला, अथच मो आँक्षिरू टोपाए
लुह बोहिलानि, मेतेबेळे त मुँ
हमहम शिलाखण्ड होइ याइथिलि।

शिळापरि उपरकु कठिन, अथच
प्रति रोमकूप बाटे मोर जन्म जन्मातरकर
माइता मान्त्वना मुअ परि बोहुथिला
भितरे भितरे एक नित्यवर्तमान
काळरे शीतल छन्द मोर सर्वशेष
उच्चारण सर्वशेषर नीरवता डेइँ
जन्ह आलुअरे चिर्कचिक् करूथिला।

सेतेबेळे ठाए दिगबळयरे
नीळवर्ण कुहूडि भितरू

चौदह

क्या उस दिन की संध्या को मैं भूल सकती हूँ?
तुम्हारे पहुँचने के बाद ही उगा था चांद और मेरी
अधजली देह चांदनी की बौछार में
भींग कर थर थर कांप रही थी।
कौन है वह जिसे मैं जन्म के दिन से
पहचानती थी, प्यार करती थी।
जब वह मर गया फिर भी आँखों से मेरी
एक बूँद आंसू न टपका, उस समय मैं तो
मुस्कराता शिलाखंड बन ही चुकी थी।

शिला की तरह ऊपर से कठिन, फिर भी
हर रोम से मेरे जन्म-जन्मांतर की सहेजी सांत्वना
स्रोत सी फूटती थी
अंदर ही अंदर एक नित्यवर्तमान
काल में शीतल झील, मेरे सर्वशेष उच्चारण
सर्वशेष नीरवता लांघ चांदनी में
चमक रही थी।

उस समय कहीं कहीं क्षितिज पर
नीलवर्णी कोहरे में से तुम

लागुथिला तमे अबा बाहारि पडुछ,
किछि कहुनाहँ किन्तु असुमारि फुलमानंकर
सुगंध एकत्र करि दीर्घनिःश्वासरे
मो निज उपरू मोर हात खसाउछ।

हारिबार, हारियाइ शत्रुतासम्पन्न
येते छायामूर्त्ति तांकु हराइ देबार
अमाप आनन्द घोटिथिला मो भितरे,
अपरिकल्पित गोटिगोटि अभिळाष
मन होइ आसुथिले पृथिवी याकर
पक्षीकर दुःसाहसमय काकळिरे।

तमकु समर्पि देलि मोर शरीरर
कठिनता, बोझ बोझ पुरुणा अभ्यास,
भय भ्रान्ति, सुख दुःख, जरा ओर मरण,
तापरे तरळि याइ ब्रहमाण्ड उपरे
बोहिगलि येपरि मुँ पर्वत भितरू
सद्य मुक्त होइथिबा चन्द्रर किरण।

तमे सेतेबेळे मोर सर्वांगरू धूळि
झाड़ि देइ कहुथिल ए जन्मरे एतेदूर नुहें,
ए जन्मरे बिच्छिन्न हेबा परस्परठारू आमे दुहें,
आसआस भोर हेबा आगुँ मुँ तमर
जरा ओ मरणपाइँ तिआरि देहरे
दूरवर्ती स्वप्नंकर प्रतिश्रुति लेखें

लगता था निकल कर आ रहे हो
कुछ कहते नहीं हो पर असंख्य फूलों की
सुगंध को एकत्रित कर दीर्घ उँमांस ले
मुझ पर से मेरे हाथ हटाते हो।

हारने का, हार कर शत्रुता संपन्न जितनी
छाया मूर्त्तियों को हराने का
अथाह आनंद घिर गया था मेरे अदर
अपरिकल्पित एक-एक अभिलाषा
सत्य बनती जा रही थी पृथ्वी भर के
पक्षियों के दःसाहस भरे कलरव में।

तुम्हें समर्पित कर दी मैने शरीर की
कठिनता, भार-भार पुरानी आदत,
भय भ्रांति, सुख-दुःख, जरा और मृत्यु,
उसके पश्चात्, पिघल कर ब्रह्माण्ड पर
बह गयी मानों मैं हूँ पर्वत के भीतर से
तरंत-मक्त चंद्र की किरण।

तब तुमने मेरे सर्वांगण से पोंछ कर धूल
कहा, इस जन्म में जाना नहीं है इतनी दूर
इस जन्म में रात के पश्चात आएगी सुबह,
सुबह हम एक-दूसरे से अलग होंगे ही
आओ आओ भोर होने के पहले मैं
तुम्हारी जरा और मृत्यु के लिए सर्जित देह पर
दूरवर्ती सपनों के वायदे लिख दूं

मो चुमारे, पुणि एइ जन्ह आलुअर
मंत्रसिद्ध हकदी पाणिरे।

चुंबन से, पुनः इस चांदनी के
मंत्रसिद्ध हल्दी पानी से।

15

चुमा देले दिअ किन्तु भाव यदि आमे
बहुत आगरु भेटिथान्तु परस्परे
ओठर उत्ताप पाइँ टिकिए समय
आजि कण मागिथान्त समय पाखरे?

पाखे पाखे सोर शद्ध नथिबा एपरि
रहस्य थाआन्ता यार सीमान्त छुइँले
कुळुकुळु शुभुथान्ता प्रथम प्रेमर
प्रथम अस्थिर भाषा, शद्ध-सबु खापछड़ा किन्तु
सबुरि भितरे थान्ता केते अर्थ थिबा
अधैर्यता मरिबा बेळर।

तमे यदि कथा देइ न आसन्त केउँ रातिरे, मुँ
यदि रहियान्ति मोर वैधव्य बाहुनि
कान्दुथिबा मुहूर्तक गहणरे, सेमाने निश्चिन्त
होइयाउथान्ते दीर्घनिःश्वासरे, भोर आलुअरे,
तेबे बि मुँ आरदिन नरागि नरुषि
मो कपाळ वक्षस्थल यौबनर दिगविदिगकु
सजाइ दिअन्ति सृष्टियाकर फुलरे,

पन्द्रह

चुम्बन दो तो दो पर सोचो यदि हम
बहुत पहले मिले होते एक-दूसरे से
होठों पर उत्ताप के लिए जरा-सा समय
क्या आज मांगा होता हमने समय से?

आस-पास हो-हल्ला रहित ऐसा
रहस्य होना जिसकी सीमा छूने पर
कल-कल सुनाई देती प्रथम प्रेम की
प्रथम अस्थिर भाषा, शब्द सारे अटपटे हैं लेकिन
सबमें होती है अनेकार्थक
अधीरता मरते समय की!

तुम यदि वायदा करके न आते किसी रात, मैं
यदि रह जाती अपना वैधव्य विलापती
रो रहे क्षणों के बीच, वे सब निश्चिह्न
हो गए होते लंबी साँसों में, भोर के उजाले में,
तब भी मैं अगले दिन न खीझती न रूठती
अपने ललाट, वक्षस्थल यौवन की दिशा-दिशान्तरों को
सजा देती समूचे सृष्टि के फूलों पर,

मनकु बुझान्ति तमे तेतेबेळे तमे नाहँ बोलि
लागुथिबा समयरे खुब पाखे पाखे थाअ, तेणु
कण याएआसे मात्र रातिकर लक्षभ्रष्टतारे?

आमे किन्तु परस्परे भेटिलु बहुत
डेरिरे, आमर सबु प्रत्याशार सर्वशेष बेळ रतरत
समयरे, तेणु तमे थरे न आसिले
मो आथिरू लुह नुहें अवशिष्ट आयुषर खण्डविखण्डित
अहंकार बोहियाए । आगकु केबळ
मरिसरि आसुथिबा समय मेथिरे
तमे नाहँ, आसिबार संभावना मबु
एते अल्प महजरे गणि होइ याए
हाड़माळ शिरमाळ दिशि आसुथिबा आंगठिरे।

मुँ यिबि मो चमड़ार ग्रीष्मऋतुरे, मो
एका एका रहिबार खराबेळ सारा,
शागुणामानक डेणा छाइ पड़ि कळा असुन्दर
छोट छोट ईर्षा बाटे, बहु दिनुँ खण्डिआ खाबरा
उत्तेजनामानंक भितरे, एपरि
शद्धंक भितरे याहा हुलस्तु होइ याउथिबे
निहाति मामुलि भाबे देह थरिगले।
लोक गहळिरे यिबि, खंजि देउथिबि
मो ओठरे चाहिदानुयायी
हस बा उत्तरटिए, यदिओ मुँ जाणि सारिथिबि
तमे केबे आसिबनि मो ओठरे चुमा देबापाइँ।

मन को समझाती कि तुम जिस वक्त तुम नहीं होते
तब होते खूब निकट हो, इसलिए
क्या फर्क पड़ता है केवल एक रात्रि की लक्ष्यभ्रष्टता में?

हम किंतु मिले एक-दूसरे से लम्बे
अंतराल के बाद, हमारी सारी प्रत्याशाओं के सबसे अंतिम
समय, इसलिए तुम्हारे एक बार न आने पर
मेरी आँखों से आंसू नहीं, बाकी बची आयु का टूटा-फूटा
अहंकार बह जाता है। आगे केवल
बीतता जाता समय है, उसमें
तुम नहीं हो, आने की संभावनाएं
बड़ी आसानी से गिनी जा सकती हैं
और शिराएं दिख रही अंगुलियों से।

मैं जाऊंगी अपनी त्वचा की ग्रीष्म ऋतु में,
अपनी एकाकी रह रही दुपहरियों में,
गिद्धों के डैनों की छाया पड़ी काली असुंदर
नन्हीं-नन्हीं ईर्ष्याओं के होकर, बहुत दिनों से क्षत-विक्षत
उत्तेजनाओं से होकर, ऐसे
शब्दों के बीच जो हलचल मचाते होंगे
जरा-सा बदन कांपते हो।
लोगों की भीड़ में जाऊंगी, खोंसती रहूंगी
अपने होंठों पर आवश्यकतानुसार
मुस्कान या उत्तर, यद्यपि मैं जान चुकी होऊंगी
तुम कभी नहीं आओगे मेरे होठों पर चुम्बन देने।

ମୁଁ ସବୁ ଜାଣିଛି ମୋର ଶ୍ୟାମବର୍ଣ୍ଣ ପ୍ରିୟତମ, ଜାଣେ
କ୍ରମେ କ୍ରମେ ତମେ କୃଷ୍ଣବର୍ଣ୍ଣ ହୋଇଯିବ
ତାପରେ ଅଦୃଶ୍ୟ ହେବ ନିରାକାର ହେବ ଓ ମୁଁ ଯେତେ
ନିରେଖି ଚାହିଁଲେ ତମ କଟାକ୍ଷ ଓ ହସ ନ ଦିଶିବ।
ମୁଁ ଜାଣିଛି ପ୍ରିୟତମ ସୟମର ମାନେ କଣ, ମୋର
ଅସହାୟ, ନିଷ୍ପଳ ଆତ୍ମାରେ
ତମେ ନଥିବାର ପ୍ରତିବିମ୍ବ ପଡୁଥିବ
ଏକାନ୍ତରେ, ମଧ୍ୟଯାମିନୀରେ।

मैं सब कुछ जानती हूँ मेरे श्याम वर्ण प्रियतम, जानती हूँ
धीरे-धीरे तुम कृष्ण वर्ण हो जाओगे
उसके बाद अदृश्य हो जाओगे निराकार हो जाओगे और मैं जितना
भी ध्यान से देखूं तुम्हारी कटाक्ष और हँसी नहीं दिखेगी।
मैं जानती हूँ प्रियतम समय का अर्थ क्या है,
मेरी असहाय, निष्फल आत्मा में
तुम्हारे न होने का प्रतिबिंब पड़ता होगा
एकांत में, मधु रात्रि में।

16

जाणे जाणे तमे दिने चालियिब आउ फेरिबनि।
जाणे जाणे मुँ तमकु चिन्हिबा आगरु
दिनमाने आउथरे लेउटि आसिबे,
दिने भांगि देइथिबा नानादि संपर्क
मोर प्रतिवाद सत्वे योडि होइ यिबे।

जाणे जाणे तमे फेरि आसुथिब प्रतिदिन मोर
आयुपर बाकी थिबा वर्ष वर्ष धरि
आजि परि नुहें - तमे आउ न थिबार
कलवल करुथिबा हतोत्साह परि।
वर्ष वर्ष धरि ठिआ होइथिबि तम
आलोकित रहिबार सीमान्त बाहारे
प्रेत परि, काळे केतेबेळे
तमे गोटि गोटि सब आलोक लिभाइ
बाहारि पाडिब पणि नागर बेशर।

मुँ जाणे नागर बेशे बाहारिब नाहिँ।
प्रत्येक सकाळे फलमाने दिशुथिबे
कागजर फल परि, राति होइ थिब,
निद हेउ न थिब कि अनिद्रा हेबार
कौणसि रहस्यमय कारण नथिब।

सोलह

जानती हूँ एक दिन तुम चले जाओगे और नहीं लौटोगे फिर
जानती हूँ मैं तुम्हें जानने के पहले के वे दिन
एक बार फिर आएंगे लौट कर
कभी तोड़े गये रिश्ते ....
मेरी आपत्ति के बाद भी जुड़ जाएंगे फिर से।

जानती हूँ तुम लौटकर आया करोगे प्रतिदिन मेरी आयु के
बाकी के वर्षों में, आज की तरह नहीं
तुम्हारे न होने से छटपटाते हतोत्साह की भाँति
वर्षों के लिए मैं खड़ी रहूंगी तुम्हारे
आलोकित होकर रहने की सीमा के बाहर
प्रेत की तरह, शायद कभी तुम,
एक एक-कर सभी आलोक बुझाकर
निकल आओगे फिर से नागर वेश में।

मैं जानती हूँ तुम नागर वेश में निकलोगे नहीं
रोज सुबह सभी फूल दिखते होंगे
कागज के फूलों के समान, रात होती होगी
पर नींद न आएगी और उन्नींदी रहने का
एक भी रहस्यमय वजह न होगा।

मुँ तमकु भुलिपारू नथिबि कि पाइ पारू नथिबि, आखिरू
आखि पाणि मरि यिाइथिब,
तमे मुँ एकाठि हेबा दिन आउ नथिब केबळ
तमे मुँ अलगा होइ रहि थिबा दिन रहिथिब।
चन्द्र तारा वृक्ष लता नदी आगपरि
जड़ होइ रहि थिबे, यदि
हठात् उत्ताप आसे कदापि रक्तरे
आपे आपे थण्डा हेब, नग्ळ पाउँश
बोहि यउथिब मोर शिरा प्रशिरारे।

मुँ जाणिछि दरहास, वाष्परूद्ध कथा गहणरे
तमे दिन रहि यिब। बहुदूरे मोर
देह रहि यिब, ताकु बोहि चालिथिबि
भिड़ ठेलि रास्ता आउ लोकमानंकर
फटा दर्पणटे परि तमे ताकु फिंगि देबा परे।
मेथिपाइँ देखुनाँह निगाड़ि देउछि
आजि मोर सबु आशा बुन्दा बुन्दा श्रमझाळे आउ
आत्महत्या सदृश चमारे?

मैं तुम्हें न भूल सकूंगी न ही पा सकूंगी
और आंखों में आंसू सूख गया होगा
तुम्हारे और मेरे एक साथ
रहने के दिन भी न होंगे
तुम्हारे और मेरे
अलग-अलग रहने के दिन ही तो होंगे
चंद्र, तारा, वृक्ष, लता, नदी, पहले की भांति
जड़ बने होंगे, अगर अचानक
उष्मा आए कभी भी खून में
अपने आप शीतल होगी
तरल राख बन बहती जाएगी नस-नस मे मेरी।

मैं जानती हूं मुस्कान, वाष्परूद्ध बातों के साथ
रह जाओगे तुम एक दिन। काफी दूर रह जाएगी
मेरी देह। उसे ढोकर चलती रहूंगी भीड़ में से
और टूटे आईने की तरह उसे तुम्हारे
फेंक देने के पश्चात्; इसलिए देखते नहीं क्या
उंडेल देती हूं मेरी सारी आशाओं को
बूंद-बूंद श्रम के पसीने में और
आत्मघात की तरह चुंबन में।

17

सबु किछि यदि तम कल्पनाप्रसूत
हे महामहिम तेबे मो कोळकु काहिँकि आसुछ?
काहिँकि अधैर्य भाबे मो खोमणि भिड़ाभिड़ि कर?
तम ओठ काहिँकि मो ओठरे योड़ुछ?

तमर निजकु निजे
रखिबाकु यदि सबु आधार केबळ,
जणे जणे यदि तम चाहिदा ओ
प्रत्येक चाहिदा विना वाक्यव्यये विना रक्तस्राबे
पूर्ण करिबाकु तम निजर कौशल
तेबे याअ शोइपड़
कल्पकल्पान्तर जळशून्य जळधिरे।
एठि खुब झड़ हुए, निज चिन्हवर्ण उड़ियाए
हिताहित ज्ञानशून्य भल पाइबारे।

देहरे लागिले देह
मुँ निजकु पासोरि पकाए,
सुतरां जाणिशुणि किन्तु किछि न जाणिलाभळि
बारम्बार तम देहे मुँ देह बजाए।
पासोरिबा लागि मोर व्याकुळता, तमे

सत्रह

यदि सबकुछ तुम्हारा कल्पना प्रसूत है
हे महामहिम तब मेरी गोद में आते क्यों हो?
क्यों अधीर हो मेरा पल्लू खींचते हो?
अपने अधर क्यों मेरे अधरों से जोड़ते हो?

तुम्हारा स्वयं का स्वयं ही बनाए
रखने का यदि सारा आधार है केवल,
एक ही एक यदि तुम्हारी चाह है और
प्रत्येक चाह बिना वाक्य-व्यय के बिना रक्तस्राव के
पूरा करना तुम्हारा अपना कौशल है
तो जाओ जाकर सो जाओ
कल्पकल्पांत की जलशून्य जलधि में।
यहाँ खूब आँधी आती है, अपना चिह्न-वर्ण उड़ जाता है
हिताहित ज्ञानशून्य कामना में।

देह से देह सटने पर
मैं स्वयं को भूल जाती हूँ,
इसलिए जान-बूझकर पर अनजान-सी
बारंबार तुम्हारे देह से देह सटाती हूँ।
भूल जाने की अपनी व्याकुलता तुम

ବୁଝ ନାହିଁ, ଅନ୍ୟ ସବୁ ପାସୋରିବା ପରେ
ତମକୁ ଆଦର କରି ନେଇଯାନ୍ତି, ସମ୍ପାଦି ରଖନ୍ତି
କେବଳ ତମେ ଓ ମୁଁ ଥିବା ମୋର ଏକାଗ୍ର ମନରେ।

ପାସୋରି ଯିବାକୁ ଚାହେଁ ସବୁକିଛି - ତମକୁ ଚିହ୍ନିବା
ଆଗରୁ ଅନେକ ବର୍ଷବ୍ୟାପି ନିଷ୍ଫଳଲା,
ତମେ ଚାଲିଯିବା ପରେ ରହସ୍ୟ ନଥିବା
ବଂଚିବାର ବାଧ୍ୟବାଧକତା,
ପାସୋରି ଯିବାକୁ ଚାହେଁ ଅଥଚ ସେ ସବୁ
ବେଶି ବେଶି ମନେ ପଡ଼ି ବେଶି କାନ୍ଦ ମାଡ଼େ।
ସବୁ ଦିଶେ - ମୋ ନିଜର ହତୋତ୍ସାହ, ମୋ ନିଜର ଅସୁନ୍ଦରପଣ
ମୁଁ ତମକୁ ପାଇବାର ମୁହୂର୍ତ୍ତ ଉହାଡ଼େ।
ସେଥିପାଇଁ ଏ ମୁହୂର୍ତ୍ତେ
ନିଜକୁ ମିଶାଇ ଦିଏ ନାନାଦି ପର୍ଯ୍ୟାୟ
ମିଶିଥିବା ଉନ୍ମାଦର ସଚରାଚରେ,
ସେଥିପାଇଁ ଚାହେଁ କିଛି ବାକୀ ନରହୁ ଏ
ମୁହୂର୍ତ୍ତକ ସରିଯିବା ପରେ।

ତମେ କଣ ବୁଝ? ତମ ପାଇଁ କେଉଁ
ମୁହୂର୍ତ୍ତର କିଛି ଅର୍ଥ ନାହିଁ।
ମୁଁ ତମକୁ ଭିଡିଧରି ଥିବା ବେଳେ ତମେ
ଚାଲିଯାଅ ମତେ ଛାଡ଼ି ଦେଇ।
କିନ୍ତୁ ପୁଣ ଯାଅ ନାହିଁ, ବାରମ୍ବାର ଫେରି
ଅସ୍ତବ୍ୟସ୍ତ କର ମୋର ଲୁଗାକୁ, ମନକୁ।
ସବୁ କିଛି ଯଦି ତମ କଳ୍ପନା ପ୍ରସୂତ
ତା ହେଲେ କାହିଁ କି କେଉଁ ଯୁଦ୍ଧଭୂମି ବା ସିଂହାସନରୁ

नहीं समझते और सब कुछ भूल जाने के बाद
तुम्हें सादर ले जाती हूँ, सहेजकर रखती हूँ
केवल तुम और मैं वाले अपने एकाग्र मन में।

भूल जाना चाहती हूँ सब कुछ तुम्हें पहचानने से
पहले अनेक वर्षों तक व्याप्त निष्फलता,
तुम्हारे चले जाने के बाद रहस्यहीन
जीने की विवशता,
भूल जाना चाहती हूँ पर वे सब
और अधिक याद आकर अधिक रुलाते हैं।
सब कुछ दिखाई देता है—मेरा अपना हतोत्साह,
मेरी अपनी असुंदरता,
मेरा तुम्हें पाने के क्षणों की ओट में।
इसीलिए इस क्षण
स्वयं को मिला देती हूँ नानादि स्तरों में
मिले उन्माद के सचराचर में
इसलिए चाहती हूँ कुछ बचा न रह जाए यह
क्षण बीत जाने के बाद।

तुम क्या जानो? तुम्हारे लिए किसी
क्षण का कोई अर्थ नहीं।
जब मैं तुम्हें भींचकर पकड़े होती हूँ तुम
चले जाते हो खुद को छुड़ाकर।
किंतु पूरा नहीं जाते, बार-बार लौटकर
अस्त-व्यस्त करते हो मेरे कपड़े मेरा मन।
सब कुछ यदि तुम्हारा कल्पना प्रसूत है
तो फिर क्यों किसी युद्धभूमि
अथवा सिंहासन से

କିଛି ଛାଡ଼ି ଯାଇଥିଲା ପରି କିଛି ବାକୀ ଥିଲା ପରି
ଏତେ ଥର ଲୁଚି ଲୁଚି ଆସ ମୋ ପାଖକୁ?

कुछ छूट गया-सा कुछ बाकी बचा-सा
बार-बार छुप-छुप कर आते हो मेरे पास?

18

ଯଦି ଏଇ ନଈକୂଳ ମିଛ ସବୁ ଫୁଲ ମିଛ ଆମେ

यदि एइ नईकूळ मिछ सबु फुल मिछ आमे
लुचिलुचि आसुथिबा कुंजबन यदि हुए,
यदि तमे मते किम्बा मुँ तमकु टाणिनेबा खाग्नि
काल्पनिक पत्र दाढ़े टळटळ काकर टोपाए,
यदि तम निकटकु धइँसइँ होइ
दिन सारा राति सारा यिए धाइँ आसे से मुँ नुहें,
यदि ए उन्माद भाब लोड़िबार बतास भितरे
मुँ प्रकृत पक्षे यिए से निश्चल होइ रहिथाए,
यदि तमे प्रकृतरे क्लान्त होइ फेरि आसुनाहँ
मो कोळकु दिनसारा जंगलरे बुलिबा उत्तारे,
यदि तमे पिन्धि नाहँ हळदिआ लुगा,
यदि तमे खेशि नाहँ बइँशी अण्टारे,

तेबे बि त मोर किछि याए आसे नाहिँ।
फुलमाने आगठारू बेशि सुन्दर दिशन्ति,
हठात् तांकर पाटि फिटि य। ए, केते
मिनाति करन्ति मते रहि यिबापाइँ
क्षणे मात्र, केबे नथिबार

अठारह

यदि यह नदी का किनारा झूठा है
मारे फूल झूठे हैं हम
छिप-छिपकर आए जिस कुंजवन से यदि वह झूठा है,
यदि तुम्हारा मुझे या मेरा तुम्हें खींचकर ले जाना केवल
काल्पनिक पत्ते की कोर पर ढुलमुल करती
ओस की बूंद है,
यदि तुम्हारे पास हाँफते हुए
दिन भर रात भर जो दौडी आती है वह मैं नही,
यदि इस उन्माद-सी कामना की आंधी मे
वास्तव मे मैं वह हूँ जो निश्चल रहती है,
यदि तुम वास्तव में थककर नही लौट आते
मेरी गोद मे दिन भर जंगल में डोलने के बाद,
यदि तुमने नही पहने पीले कपडे,
यदि तुमने नहीं खोसी बाँसुरी कमर मे,

तब भी तो मुझे कोई फर्क नही पडता।
फूल पहले से भी अधिक सुंदर लगते हैं
सहसा उनके बोल फूट पडते हैं, कितनी
मिन्नतें करते हैं मुझसे रुकने के लिए
पल भर के लिए, कभी न हुए

ଅଧାରରେ ମେମାନକ ଚିହ୍ନବର୍ଣ୍ଣ ଲିଭିଯିବା ଆଗଁ।
नईर डाकरा शुभे, ता प्रतिध्वनिरे
भिजियाए मरूभूमि मो परगजयर
पृणिथरे घास उठे, सबुज उद्भिद
माडियाए बालिचर याक।
पृणिथरे कुजबनु दिगविदिगरू
गोटिए शून्यता कहे मते तम दीर्घनिःश्वासरे
टिकिए आउँसि दिअ, टिकिए मात्रक।

से मुहूर्त्ते पथरठु भिन्न होइ करि
पथर प्रतिमाटिए ठिआ होइ रहे,
माटिर कळसीटिए आदिम माटिठु
काहिँ केते दूर चालियाए।
क्रोधजर्जरित अश्रुजर्जरित सेइ
महूर्त्ते मँ छाएं मो देह कु, तमर
उत्तापक अनुभव करे,
आशा करे आशा हारे ईर्षारे जळे ओ
से मुहूर्त्ते मँ माफ करिदिए
तमर निर्दयपण इच्छाकृत पक्षपातितारे।

तमे आउ कण जाण? सबुरि अन्तिम
परिणाम भावे रस गोटिए मृत्युकु,
गोटिए चडान्त विस्मरणरे लिभाअ
सब धन्दि हेबाकु ओ सब घटणाकु।
तमे जाणि नाहँ द्विधा, तम पाईं केउँ
कथार पार्थक्य नाहिँ अन्य काहाठारू,

अंधेरे में उनका चिह्न-वर्ण मिट जाने से पहले।
नदी की पुकार सुनाई देती है उसकी प्रतिध्वनि से
भीग जाता है रेगिस्तान मेरी पराजय का।
फिर एक बार घास उगती है, हरियाली
फैल जाती है पूरे बंजर में।
फिर एक बार कुँजवन में दिशा-दिशांतरों से
एक शून्य कहता है मुझे अपनी गहरी सांसों से
थोड़ा सहला दो, बस थोड़ा-सा।

उस पल पत्थर से भिन्न हो
पत्थर की प्रतिमा बन खड़ी रहती हूँ,
मिट्टी का घड़ा आदिम मिट्टी से
न जाने कितनी दूर हो जाता है।
क्रोध-जर्जरित अश्रु-जर्जरित उस
पल मैं छूती हूँ अपनी देह, तुम्हारा
उत्ताप महसूस करती हूँ,
आस लगाती हूँ आस टूटती है
ईर्ष्या से जलती हूँ और
उस पल मैं तुम्हें अपने अनजाने ही
चाहती हूँ, क्षमा कर देती हूँ
तुम्हारी निर्दयता अपनी इच्छा के पक्षपात में।

तुम और क्या जानते हो? सबके अंतिम
परिणाम के रूप में रखते हो एक मृत्यु,
एक चरम विस्मरण से मिटाते हो
सारी उलझनों को और सारी घटनाओं को
तुम नहीं जानते दुविधा, तुम्हारे लिए एक
बात से किसी दूसरी में अंतर नहीं,

ମତେ କିନ୍ତୁ ସବୁ ଦିଶେ ଅଲଗା, ଗୋଟିକୁ
ବାଛିବାକୁ ହୁଏ ନାନାବିଧ ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟରୁ।
ସେତେବେଳେ ମୋ କ୍ଷମତା ଅମାପ, ଚାହିଁଲେ
ଯାହା ଇଚ୍ଛା ତାହା ବାଛି ନେବି,
ଠିକ ସେତେବେଳେ ମୋର ହୃଦକମ୍ପ ବି ଅମାପ, ଯେହେତୁ
ମୁଁ ଯାହା ବାଛିବି ତାକୁ ଆଜୀବନ ଭୋଗି ଚାଲିଥିବି।
କେବଳ ତାହାହିଁ ଥିବ, ଅନ୍ୟ କିଛି ନଥିବ ଅଥବା
ଦିନେ ଥିବା ଶୋଚନାରେ ଥିବ,
ଥରକ ପ୍ରୟୋଗ ପରେ ସେ କ୍ଷମତା ଚିରକାଳ ପାଇଁ
ଦାସତ୍ୱରେ ପରିଣତ ହେବ।

ତମକୁ ବାଛିଲି। କ୍ଷଣ, ମନ ଦେଇ କ୍ଷଣ
କାହାରି ଇଚ୍ଛାରେ ନୁହେଁ ମୋ ଇଚ୍ଛାରେ ତମକୁ ବାଛିଲି,
ତମକୁ ରଖିବା ପାଇଁ ଜୀବନର ପ୍ରତି ମୁହୂର୍ତ୍ତରୁ
ଅନ୍ୟ ସବୁ ଭାଗ୍ୟ କାଢ଼ି ଦେଲି।
କିଛି ବାଧ୍ୟବାଧକତା ନଥିଲା, ଏବେ ବି
ମନେ ପଡ଼େ ବହୁଦିନ ଧରି
ତମେ ଯାଉଥିଲି ସମସ୍ତଙ୍କପରି।
ମୁଁ ମୋର ଅଲଗାପଣ ଭିତରୁ ତମକୁ
ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ସ୍ନେହ ଦେଉଥିଲି,
ତମର ରହସ୍ୟ ଥାଉ ତମଠାରେ ମୁଁ ପର୍ଯ୍ୟାୟ କ୍ରମେ
ସାରିଯିବି ବୋଲି ଭାବୁଥିଲି।

ତମକୁ ବାଛିବା ପରେ ତମ ମୋର ସବୁ ଚାହିଁବାର
ଶ୍ୟାମଳ ସାରାଂଶ ହେଲ। କି ବଣ୍ୟ ଭାବରେ
ମୁଁ ତମର ନ ଆସିବା ରାତିକୁ ବିଦାରି

मुझे लेकिन दिखता है सब अलग, एक को
चुनना होता है नानाविध तात्पर्यों मे ।
तब मेरी क्षमता अमाप होती है, चाहूं तो
इच्छानुसार चुन लूं,
ठीक उस समय मेरी धड़कन भी
अमाप होती हैं क्योंकि
मैं जो कुछ चुनूंगी उसे आजीवन भोगती रहूंगी ।
केवल वही होगा, और कुछ नहीं होगा या
फिर कभी हुए पछतावे मे होगा,
एक बार प्रयोग के बाद वह क्षमता हमेशा के लिए
दासत्व में बदल जाएगी ।

तुम्हें चुना । सुनो, ध्यान से सुनो
किसी की मर्जी से नहीं अपनी मर्जी से तुम्हें चुना,
तुम्हें रखने के लिए जीवन के प्रत्येक क्षण से
अन्य सारे भाग्य निकाल दिए ।
कोई विवशता नहीं थी, अब
याद आती है बहुत दिनों तक
तम जाते थे अपनी राह मैं अपनी राह
जाती थी सबकी तरह ।
मैं अपने अलगपन से तुम्हें
निश्चिन्त स्नेह देती थी.
अपना रहस्य धरे रहो अपने पास मैं क्रमशः
मरने की सोच रही थी ।

तुम्हें चुनने के बाद तुम मेरी हर कामना के
श्यामल सारांश बने । कितनी हिंस्रता से
अपने नकीले असंतोषों से

दिए मो शागित असंतोषमानंकरे!
तमे आसिथिबा रातेमान मण्डि दिए
नईरि फुलरे कुंजभितर अंधारे,
मो जीवद्दशार शेषे थिबा निर्धारित
निश्चिन्हता भुलियए तमर कोळरे।

मुँ एपरि भावे भल पाए, मोर सरि आसुथिबा
आयुषर आतंक कु लुहरे लुचाइ,
लुह कु लुचाइ पुणि हसरे, मुँ हसिहसि तम
देहर मुहूर्त्तमान याह छुइँ देई।
जाणे से मुहूर्त्तमान चालियिबे, चारिआड़े अबा
फुल झड़ियिबे आउ नई शुखियिब,
जाणे दिने तम हस अन्य केउँठारे
आउ काहा समयकु कृतार्थ करिब।
जाणे दिने मो समय स्तब्ध हेब, ताहा बोलि कण
मिछ मणि रहि यिबि याहा बाछिथिलि,
बाछिबा बेळरे याहायाहा साक्षी थिले?
केउँठि रहिबि अबा तमकु मो लोड़िबापणर
भत भविष्यत वर्त्तमान छाड़िदेले?

चीर डालती हूँ उन रातों को जिनमें तुम नहीं आए!
जिन रातों में तुम आए उन्हें सजा देती हूँ
नदी से फूलों से, वनों के अंधेरों से,
अपनी जीवन दशा के अंत की निर्धारित
निश्चिह्नता भूल जाती हूँ तुम्हारी गोद में ।

मैं इतना चाहती हूँ कि अपनी बीत चली
आयु के आतंक को आँसुओं में छिपाकर,
आँसुओं को छिपा मुस्कुराहटों में,
मैं हँसते हुए तुम्हारे
देह की घड़ियां छूकर गुजर जाऊँ।
जानती हूँ वे घड़ियां बीत जाएंगी, चहुँओर के
फूल झड़ जाएगे और नदी सूख जाएगी,
जाननी हूँ एक दिन तुम्हारी मुस्कुराहट और कहीं
और किसी का समय कृतार्थ करेगी।
जानती हूँ एक दिन मेरा समय स्तब्ध रह जाएगा,
तो क्या झूठ समझकर रह जाऊँ जिसे चुना था,
चुनते समय जो-जो साक्षी थे?
भला कहां रहूंगी तुम्हें अपनी कामना का
भत भविष्य वर्तमान सौंपकर?

19

निअ निअ मो परमायु
अवशिष्ट मुहूर्तरू अदौ नेइयाअ,
ताबदले मो पाखरे रहिथिबा मुहूर्तमानकु
तमर आग्रहद्वारा पूर्ण करिदिअ।
मुं कण मागिलि खुब बेशी? नाहाहेले
गोटिए मुहूर्त रखि सबु नेइ याअ,
किन्तु से मुहूर्त आद्यटारू प्रातयाएँ
तमेहिं आकाशपरि व्यापि रहिथाअ।

आकाश भितरे नहे, आहुरि निकट
हअ, मेघपरि मोर
त्रिकाळर घोटियाअ येपरि मुं निजकु छुइंले
छुइंबि मौसुमीवाय परि तम आर्द्र कळेबर,
केउं दूर समुद्रर हताशा भितरू
आसिथिबा झड तम दीर्घनि श्वासर
बोहुथिब, चुप होइयिब
हसिहसि मुं निजकु छुइंदेला परे।

आउ अल्प बाट थिबा मृत्युयाएं मोर
परमायु निन्नि याइथिब

उन्नीस

लो ले जाओ मेरी आयु के
बचे क्षणों में आधा ले जाओ,
उसके बदले मेरे पास बचे क्षणों को
अपने आग्रहों से भर दो।
क्या मैंने कुछ अधिक मांग लिया? तो फिर
सिर्फ एक क्षण छोड़कर बाकी सब ले जाओ,
लेकिन उस क्षण पर आदि से अंत तक
तुम्हीं आकाश की तरह छाये रहो।

आकाश की तरह नहीं, और निकट
आओ, बादल की तरह मेरे
त्रिकाल में छा जाओ ताकि मैं स्वयं को छुऊँ
तो छुऊँ तुम्हारा मौसमी वायु-सा आर्द्र कलेवर,
किसी दूर समुद्र की हताशा में
आई आँधी तुम्हारी उसासों में
बह रही होगी, शांत हो जाएगी
हँसते हुए मैं स्वयं को छू लेने पर।

और थोड़ी देरी पर मृत्यु तक मेरी
आयु भीग गई होगी,

ୟେତେଥର ୟେତେଦୂର ଗଲେବି ତମର
କୈଶୋରକୁ ସବୁବେଳେ ଫେରି ଆସୁଥିବ।
ତମେ ଆଉ କିଛି ନୁହଁ, ଖାଲି ମୋ ଚାହିଁବା
ମୁତାବକ ଘନୀଭୂତ ନୀଳ,
ସବୁ ଅର୍ଦ୍ଧ-ପରିଚିତ ଅପରିଚିତ ଓ
ପରିଚିତ ଆକାଂକ୍ଷାର ନୀଳ ୟୋଗଫଳ।
ନୀଳ ହେଲ କାହିଁକି ନା ଅଧିକାଂଶ ବେଳେ
ନୀଳ ଶାଢ଼ୀ ପରିଧାନ ମୋର
ନୀଳ ହେଲ କାହିଁକି ନା ମୋର ଇଚ୍ଛା ନୁହେଁ
ତମେ ହୁଅ ଅଲଗା ରଂଗର।

ମୁଁ କଣ ମାଗିଲି ଖୁବ ବେଶି? ତାହା ହେଲେ
ଗୋଟିଏ ମୁହୂର୍ତ୍ତ ମଧ୍ୟ ରଖ ନାହିଁ, ସବୁ ନେଇ ୟାଅ,
ନେଲାବେଳେ କିନ୍ତୁ ମୁହଁ ପୋତ ନାହିଁ ମତେ
ଥରେ ମାତ୍ର ସିଧା ସିଧା ଚାହଁ।
ଦେଖ ମୋର ଦୁଃସାହସ ନିର୍ଭୟରେ ୟାହା
ନର୍କ ପରେ ନର୍କ ଡେଇଁୟାଏ
ଓ ଅନ୍ତିମ ନର୍କ ପରେ ତମ ଅପେକ୍ଷାରେ
କଦମ୍ଭ ଗଛର ତଳେ ଠିଆ ହୋଇଥାଏ।

कितनी ही बार, कितनी ही दूर जाने पर भी अपनी
किशोरावस्था में हमेशा लौट आते होंगे।
तुम और कुछ नहीं, केवल मेरी चाहत के
मुताबिक घनीभूत नील हो,
अर्धपरिचित अपरिचित और
परिचित आकांक्षाओं के नीले कुल जोड़ हो।
नीले हुए क्योंकि अधिकांश समय
नीली साड़ी मेरा परिधान रहा
नीले हुए क्योंकि मेरी इच्छा नहीं है कि
तुम बनो किसी दूसरे रंग के।

क्या मैंने कुछ अधिक माँग लिया? तो फिर
एक क्षण भी मत छोड़ो, सब ले जाओ,
पर लेते समय सिर मत झुकाओ, मुझे
केवल एक बार सीधे-सीधे देखो।
देखो मेरा दुस्साहस जो निर्भयपूर्वक
नर्क के बाद नर्क लाँघ जाता है
और अंतिम नर्क के बाद तुम्हारी प्रतीक्षा में
कदंब के नीचे खड़ा रहता है।

20

ए देह भितर खब नीरव येहेत
ए देह भितरे खब्र कोलाहळ अछि।
असंख्य चित्कार अछि, किन्त परवर्ती
चित्काररे सबबेळे स्तब्ध होइयाए,
पर्ववर्ती चित्कार ओ तम कथा पाइँ
ए देहर आप आपे जागा होइयाए।

ए देहरे रक्त खब्र शीतल येहेत
असंख्य उत्ताप अछि ए देह भितरे।
प्रत्येक उत्ताप तार पर्व उत्तापकु
जाळिदिए, काकर पवन
कआड़ हठात् आसे आ थराइ दिए
अस्थि मज्जा भूत भविष्यत वर्तमान।

मते कण जणाथिला नीरवता तम
स्वर मते नशाभिबायाएँ?
मते कण जणाथिला शीतळता? दिने
अकस्मात छुइँ देलि तमर कपाळ,
चदन ओ तुषारर समुद्र भितरे
मो हात अटकि रहिगला काळकाळ।

बीस

इस देह के भीतर बड़ा सन्नाटा है, क्योंकि
इस देह के अंदर है बड़ा कोलाहल।
असख्य चीखें है पर अगली
चीत्कार में सदा स्तब्ध हो जाती है
पहली चीख और तुम्हारी बात के लिए
इस तरह मे अपने आप जगह बनती है।

इस देह मे लहू काफी शीतल है क्योंकि
असख्य उत्ताप है इस रक्त के अंदर
प्रत्येक उत्ताप अपने पर्व उत्ताप का
कर देता है दग्ध, शीतल पवन
कहाँ से आता है अचानक और कपा देता है
अस्थि मज्जा भूत भविष्य वर्तमान।

तुम्हारी नीरवता का पता क्या मुझे था
जब तक न सुना था मैंने तुम्हारे स्वर को?
मुझे क्या पता था शीतलता क्या है? एक दिन
अचानक छू कर तुम्हारे ललाट का
चंदन और तुषार के समदर के बीच
मेरे हाथ रुके रह गये काल पर्यन्त।

21

मो समग्र अतीतर दीर्घतर मार्ग
गति बितिगला तम बाट चाहिँ चाहिँ
कण वा भरसा थिला? एतिकि केवळ,
फुलपरि संक्षिप्त ओ अथय तमर
प्रतिश्रुति मिछ हेब नाहिँ।

सखीमाने कहिले ये प्रतिश्रुति पूर्ण हेबा आगरु
आकाश शोचना परि पाण्डुर दिशिब,
गाईंकर हम्बराड़ि ए निषिद्ध समयर सब
नीरवता चिरिचारि देब।

आतंकरे चम शुखि धुड़धड़ होइयिब, हाड़
क्लान्त होइ बंका होइयिब,
मुँ आत्माकु काटिकुटि छोट करि पुणि से संकीर्ण
सुडंगरे फेरियिबि, याहा ए जागारु
आम घरयाएँ लम्बिथिब।

खरा पुणि भांगि देब बहुत दिनरु
कहिबि कहिबि बोलि भाबुथिबा कथामानंकर

इक्कीस

मेरे समग्र अतीत से दीर्घतर घरी
रात बीत गई तुम्हारी बाट जोहते-जोहते
आखिर क्या भरोसा था? इतना ही ना
फूल-सा संक्षिप्त और व्यग्र तुम्हारा
[illegible] नहीं होगा।

सखियां न कहतीं कि [illegible] में पहल
आकाश-[illegible]-सा विवर्ण दिखना
गायों की रंभाहट और निरापद समय की भारी
चुप्पी चीर-चीर डालेगी।

आतंक से त्वचा सूखकर चीमड़ हो जाएगी,
हड्डियां थककर टेढ़ी हो जाएगी,
मैं आत्मा को काट-छाँटकर छोटी करके फिर उस संकीर्ण
सुरंग में लौट जाऊँगी जो यहाँ से
हमारे घर तक फैली होगी।

धूप फिर तोड़ देगी काफी दिनों से
कहने को सोची हुई बातों का

ଅଧାଗଢ଼ା ବଜ୍ରପାତ, ବିସ୍ଫୋରଣ ମିନା
ମୋ ତୋଟି ଭିତରେ ହେବ ବାହାରକୁ କେବଳ ଶୁଭିବ
ଧଡ଼ ଧଡ଼ କଫ ଶବ୍ଦ କେଉଁ ରୁଗ୍ଣା ଦରବୁଢ଼ୀଟିର।

କେବେ ଯଦି ଆସ ତେବେ ମୋ ନୀରବତାର
ପ୍ରତିଧ୍ୱନି କହିବ ଯେ କେନେ ଦୂର ବାଟ
ଆସି ପୁଣି ଫେରିଗଲି ତମେ ଯେଣୁ ନଥିଲ ସେଠାରେ
ବର୍ଷ ଆଉ ମାସକର ମାପ ଦ୍ୱାରା ମପା ଯାଇଥିବା
ଏକମାତ୍ର ଜୀବନକାଳରେ।

ଆଉ କି ସଂତକ ଛାଡ଼ି ଯିବି ଲୁଚାଚୋରା
ଗଳିର ଭିତରେ ଥିବା ଜଂଗଲର ଏ ଫଚ୍ଚା ଜାଗାରେ?
ଆଉ କି ପ୍ରଣାମ ଦେବି? ଦେବି ବା କାହାକୁ?
ପ୍ରତି ଦିନ ମୋ ଗଡ଼ିଗାଡ଼ ଯାଏ ଏକ ଅନୁପସ୍ଥିତିରୁ
ଆଉ କେଉଁ ଅନୁପସ୍ଥିତିକୁ,
ଗୋଟିଏ ଅଶ୍ରୁତପୂର୍ବ ଆର୍ତ୍ତନାଦଠାରୁ
ସହସ୍ର ସହସ୍ର ଥର ବିଦାୟ ବିଦାୟ
ଶୁଭୁଥିବା ମୋ ନିଃସଂଗତାକୁ।

अथवना बज्रपात, विस्फोट ही तो
होगा मेरे गले मे बाहर केवल सुनाई देगी
घुडर-घडर कफ की आवाज किसी क्लान्त वृद्धा की।

यदि कभी आवोगे तो मेरी चुप्पी की
प्रतिध्वनि बताएगी कितनी दूर
आकर फिर लौट गई तुम क्योंकि नहीं थे यहा,
वर्ष और महीने के पैमाने से नापे जा रहे
एकमात्र जीवनकाल में।

और क्या निशानी छोड जाऊँ लुके-छिपे
रात में इस जगल के खुले मे?
और क्या प्रमाण दूँ? दूँ भी किसे?
प्रतिदिन मेरी आयु घटती चली जाती है
एक अनुपस्थिति से
एक दूसरी अनुपस्थिति में,
एक अश्रुतपूर्व आर्तनाद से
सहस्र-सहस्र बार विदाई-विदाई
सन पड़ती अपनी निस्संगता में।

22

कालि गतिसारा शोइ नथिबारू बेळे
सकाळे आकाश एड़े लाल दिशुअछि,
ताहेले काहिँ कि आश्वासना देला भळि
शीतळ पवन मते छुइँ याउअछि?

से क्षण भरसा देइ कहुछि ये अछि
नीळवर्ण उल्लासर गति मो भाग्यरे
एपरि मुहूर्त्तटिए ये मुं मिशियिब
आपणा आत्मार सर्व प्रथम हसरे?

देख सखि कालि येउँ सूर्य उइँ थिला
ताठारू आजिर सूर्य कि अलगा दिशे!
देखन् मयूर पर ठेकारे खोसिछि
स हसुछि—येपरि से जणक हिँ हसे!

बाईस

कल रात भर न सोने मे शायद
सबह आकाश इतना लाल दिखता है
तो क्यों आश्वासन देने की तरह
शीतल हवा मझे छूती जा रही है?

क्या वह भरोसा देकर कह रही है कि
नीलवर्ण उल्लास की रात है मेरे भाग्य मे
ऐसा एक महूर्त कि मैं मिल जाऊंगी
अपनी आत्मा की सबसे पहली हँसी में?

देखो सखि कल जो सूरज उगा था
उससे आज का सूर्य लगता है कैसा भिन्न
देखती नहीं मयूर-चन्द्रिका पगड़ी मे खोसे
हँस रहा है, जिस भांति सिर्फ ही हँसता है!

23

शोइ रह आउ किछि बेळ शोइ रह
अबिळम्बे छायाटिए हेब येउँ बाहु से बाहुरे,
एका एका खालि हाते यिबा पूर्वरू मुँ
तमक् थरटे रखें मोर कर्त्तृत्वरे।

थरटेल हेलेहें किछि
गर्व हेउ, किछि गुप्त कथा रहियाउ,
तापरे पछके कुम्भाटुआ शाढ़ मते
ए अमरत्वरू निर्वासित करि देउ।

आउ किछि बेळ देखें
अतीतकु, किछि क्षण परे
ताकु छुइँ हेब नाहिँ यदिओं से थिब
छाइपरि सर्वदा पाखरे।

आखि यदि खोला थान्ता
चाहिँ रहिथान्ति तार निर्मळ पाणिकु
गोधोइ पड़न्ति, केड़े सुन्दर ओ केड़े
पवित्र मुँ दिशन्ति निजक्!

तेईस

सोये रहो और कुछ देर सोये रहो
अविलंब छाया बनेगी जो बाँह उस बाँह पर,
एकाकी खाली हाथ जाने से पहले मैं
तुम्हें एक बार रखूँ तो अपने वश में।

एक बार ही सही कुछ
गर्व हो, कुछ गुप्त बातें रह जाए,
उसके बाद भले ही कुभाटआ-पक्षी की आवाज मुझे
इस अभरन्व से निर्वासित कर दे।

और कुछ देर देखती हूं
अतीत को, कुछ क्षण बाद
उसे छूआ नहीं जा सकेगा यद्यपि वह होगा
साये-सा हर वक्त आसपास

आँखें यदि खुली रहती
तकती रहती उसके निर्मल जल को,
नहा लेती, कितनो सुंदर और कितनी
पवित्र लगती मैं खुद ही को।

मोर परित्राण कण
एते बड़ कथा ये तमकु
उठाइ आणिबि टाणि मोर समयर
फर्च्चा होइ आसुथिबा अंधार सबुकु?

उठि पड़िलेहिँ दिन आलुअरे तमे
आम समस्तंक परि दिशिब, तापरे
आउ केउँ भविष्यत बाकी थिब ये मुँ
आस्था रखिथिबि तार अनिवार्यतारे?

शोइ रह शोइ रह तमठुँ पछके
बेळकु बेळ मुँ हुएँ दूरूँ दूरतर,
खालि स्मृति भाबे नुहें, सशरीर प्रतिश्रुति होइ
केउँठि हेलेहें थाअ यिबा बाटे मोर।

थाअ कि नथाअ किन्तु
केउँठि हेले हें अछ बोलि लागुथाअ,
मुँ निजकु निजे चिन्हि न पारिला बेळे
मोर परिचय होइ मने पड़ुथाअ।

मने पडुथाअ सबु घटणा पूर्वर
एकमात्र घटणा भाबरे
येतेबेळ मुँ तमकु चाहुँथिला बेळे
निजकु हिँ चाहुँथिलि प्रति मुहूर्त्तरे।

मेरा उद्धार क्या
इतनी बड़ी बात है कि तुम्हें
उठा लाऊँगी खींचकर अपने समय के
छँट रहे अंधेरों में

जगते ही दिन की रोशनी में तुम
तुम सबकी तरह दिखोगे, उसके बाद
और कौन-सा भविष्य बाकी बचेगा कि मैं
आस्था रखी रहूँ उसकी अनिवार्यता में

सोये रहो सोये रहो
धीरे-धीरे हो रही हूँ मैं दूर से अधिक दूर,
केवल स्मृति बन नहीं, सशरीर बचन बन
कहीं भी होते हो मेरी जाने की राह पर।

होते हुए भी नहीं होते किन्तु
कहीं न कहीं होते हो ऐसा लगता रहता है,
मैं खुद ही खुद को न पहचान पाने पर
मेरा परिचय बनकर याद आते रहते हो।

याद आते हो सारी घटनाओं से पहले की
एकमात्र घटना-सी
जब तुम्हें चाहते वक्त मैं
स्वयं ही को चाहती थी हर पल।

काहार मयूरचूळ? काहार बइँशी?
काहार वा कण? केबळ गोटिए
अभिन्न भावर आत्मसचेतनतारे
जणा पड़ुनथिला मुँ किए तमे किए।

शोइ रह एणिकि त तमे हेब तमे,
मुँ मध्य क्रमशः केउँ मुँ होइ यिबि,
तमकु पुनश्च मोर बाहुरे बा जीवनकाळरे
रखिबा पूर्वरु शेष निःश्वास छाड़िबि।

किसका मोरपंख? किसकी बाँसुरी?
किसका भला क्या? केवल एक
अभिन्न भाव की आत्मसचेतनता में
जान पड़ता था मैं कौन हूं तुम कौन हो।

सोये रहो, अब तो तुम हो जाओगे तुम,
मैं भी क्रमशः कोई मैं हो जाऊँगी
तुम्हें पुनः अपनी बाँहों या जीवनकाल में
रखने से पहले अंतिम साँस लूंगी।

24

जाणे जाणे आजि राति पाहिबा मात्रके
महाघोर अपवाद अछि मो भाग्यरे,
मो बंधु कुटुम्ब माने बसि रहिथिबे
दाण्ड पट बाड़ि पट दआर आगरे।

दान्त चिपि बसिथिबे चुपचाप होइ,
मने किन्तु जळजळ दिशुथिब भितरे
फाटि मेला होइथिब, मोते पाइले हिँ
गोटापणे झुणि देबे मनिआँ दान्तरे।

भितरकु गलाबेळे दुआर आगुळि
फँअ फँअ हेबे केते गर्जन करिबे
निजर समस्त नाड़ी भितरू गरळ
चिपुड़ि सकाळ सारा विषाक्त करिबे।

सेमाने कल्पना करिपारू थिबा पाप
कि नगण्य! मुँ त मोर प्रति हताशाकु
निःसंकोचे विवसन करि भुलियएँ
लाजलाज होइ घुंचि यिबाकु पछकु।

चौबीस

जानती हूँ आज रात बीतते ही
घोर लांछन बदा है मेरे भाग्य में,
मेरे सगे-संबंधी बैठे होगें
घर के आगे-पीछे द्वारों पर।

दाँत भींचे बैठै होंगे चुपचाप,
मुझे किंतु ठीक-ठाक दिख रहा हैं अंदर
मुँह खुले होंगे, मुझे पाते ही
परी तरह चीथ डालेंगे अपने नकीले दांतो से।

अंदर जाते समय द्वार रोककर
फुफकारेंगे गरजेंगे,
अपनी समस्त नाड़ियों के अंदर से विष
निचोड़कर परी सबह विषाक्त कर देंगे।

उनकी कल्पना का वह पाप
कितना नगण्य है। मैं तो अपनी प्रत्येक हताशा
बेहिचक विवस्त्र कर भूल जाती हूँ
लजाते हुए पीछे हटते जाना।

मुँ कण गोकिनि मोर उन्मादना येबे
ए देह अथय हेउथिला अतृप्तिरे?
मुँ कण असंख्य थर दआर मुँहरु
फेरियाइ नाहिँ बाट हडिबा भयरे?

ळे मुँ जाणिलि मोर बारम्बार
जन्म हेबा ओ मरिबा अदृष्ट किए,
पछे पछे चालियाए लउटि चाहिँले
पाणिरे ओ पवनरे लाच याउथाए,.

पुणि आपे आपे आसियाए येतेबेळे
आतंकरे कम्पथाए अन्तरात्मा मोर.
सेतेबेळे मुँ किपरि कहिथान्ति ताकु
ए पाप प्रीतिठुँ बर मृत्यु श्रेयस्कर?

काहिँकि बा कहिथान्ति? सेतेबेळे त मुँ
बझिलि ये इच्छाकले फिंगि देइ पारे
जरा मृत्यु, पाप पुण्य याहायाहा मोर
असफलतारे मोते सीमाबद्ध करे।

कालि सकाळकु येउँ अपवाद मोते
मिळिब तार कि अर्थ थिब मो पाखरे?
मुँ कण मागुछि किछि संसारठारु ये
उठ बस हेबि तार निर्देशानुसारे?

मैंने क्या नहीं रोका अपना उन्माद जब
यह बदन आकुल था अतृप्ति से?
मैं क्या असंख्य बार द्वार से
लौट नहीं गई राह भटकने के भय मे?

जब मैंने जाना मेरे बारंबार
जन्म लेने और मरने की ओट में कोई
पीछे-पीछे आता है, पलटकर देखने पर
पानी और हवा मे छुप जाता है,

फिर खुद ब खुद आ जाता है जब
आतंक मे काँपती है अंतरात्मा मेरी.
उस वक्त मैं कैसे कहती उससे
इस पापमय-प्रेम मे तो मृत्यु ही बेहतर है?

कहनी ही क्यों? उसी वक्त तो मैं
समझी कि चाह तो फेंक सकती हूं
जरा-मृत्यु, पाप-पुण्य जो भी कुछ मेरी
असफलता के बाणों मे मुझे घेर लेते हैं।

कल सुबह जो लांछन मुझ पर
लगेगा उसका क्या अर्थ होगा मेरे लिए?
क्या मैं कुछ मांग रही हूँ दुनिया से जो
उठ-बैठ करूँ उसके निर्देश पर?

ୟାହା ୟାହା ମୁଁ କରିବି ତାକୁ ଆଜିଠାରୁ
ଆଉ ଜଣେ ସେ କରିଛି ବୋଲି କହୁଥିବ,
ଦିନେ ଆଉ ମୁଁ ନିଃଶ୍ୱାସ ନେବି ନାହିଁ ବୋଲି
ସେ ବି ଦିନେ ତାର ଶେଷ ନିଃଶ୍ୱାସ ଛାଡ଼ିବ।

जो भी कुछ मैं करूंगी उसे आज से
किसी और ने किया है कहता रहेगा,
कभी मैं साँस नहीं लूंगी सोच
वह भी कभी अपनी अंतिम साँस लेगा।

25

कालि मोर स्वामी मोर बाळ झिंकिले ओ
मुण्डकु कान्थरे बारम्बार कचाड़िले,
मुँ केउँठि पूर्वराति बिताइलि ताहा
साफ-साफ मानियिबा लागि कहुथिले।
बेश् किछि कष्ट हेला बेश् किछि समय, तापरे
येतेबेळे से मो अंग प्रत्यंग सबुकु
तन्न तन्न करि देखि बसिले मुँ आउ
केते बेळ चापि रखि थाआन्ति हसक्?

कहिलि हायरे बिधि एड़े निर्बुद्धिआ
स्वामी लेखिथिलु मो कपाळे!
मोर अविश्वस्ततार प्रमाण खोजुछि
शरीररे, पुणि दिन बेळे!

पच्चीस

कल मेरे पति मेरे केश पकड कर
पटकने लगे मेरा सिर दीवार पर, बारबार
जोर दे कहते रहे मान भी जाऊ मै
कि पिछली रात मैने बिताई है कहा।
काफी कष्ट हुआ मुझे देर तक, उसके पश्चात
जब वे मेरे सारे अंग-प्रत्यग को
जाचने की भांति लगे देखने
तो कब तक रोके रह पाती मे अपनी हंसी

बोली, हाय रे विधाता, ऐसा बद्धिहीन
पति तुमने मढ दिया मेरे ही भाग्य मे
जो मेरी अविश्वस्तता का सबूत ढढना है
मेरे शरीर में वह भी दिन के समय।

26

केते दिन याएँ पक्षी प्राये उड़ि
बसुथिलि डाळुँ डाळ
केउँ डाळ नाआँ धरणीपण त
केउँ डाल नाआँ कूळ।
डाळ बेशि नुहें सेइ मेइ डाळे
बारम्बार बसुथिलि,
डाळर नाआँ मो परिचय थिला
मँ निजे किछि नथिलि।

येउँ दिन लोके कहिले मुँ कूळ
कळंकिनी दोचारुणी
सेदिन हेलि मँ राधिका रमिका-
मानंकर शिरोमणि।
मुँ देखिलि मोर अजाणते थिबा
हताशा दूरेइ याइ,
कल्पनातीत पुलके मोर
प्राण पुलकित हाए।

केहि न बुझिबा सार्थकताए
सार्थक हेलि केते दिन परे!

छब्बीस

कई दिनों तक बन चिड़िया उड़ती थी
आ बैठती इस डाल उस डाल पर
किसी डाल का नाम घरनीपना तो
किसी और का कुल।
डाल अधिक नहीं उसी उसी पर
बारबार आ बैठती थी मैं
डाल का नाम ही परिचय था मेरा
कुछ और नहीं थी मैं।

जिस दिन कहा लोगों ने मैं हूं
व्यभिचारिन कुल कलंकिनी
उस दिन से मैं बनी राधिका
रसिकाओं के शीश की मणि।
मैंने देखा, अनजानी मेरी
हताशाएं दूर होती रही हैं
कल्पनातीत पुलक से मेरे
मन प्राण हों पुलकित।

किसी की अबूझ सार्थकता में
सार्थक हुई काफी दिनों बाद

एते अपयश केते जन्मर
केते सुकृत फल!
बाट हुड़ि येउँ बाट मुँ धरिलि
मोर आलोकित दुःसाहसरे
झटके बेळक बेळ।

इतने अपयश कि कई जन्मों के
कितने सुकृतों का फल।
राह भूल मैंने जिस पथ को चुना
मेरे उजले दु:साहस में
चमके वह प्रतिपल।

27

हे अस्थिर महुमाछि, केते इच्छा हुए
तम डेणा भांगि देबि, तमे आउ चालियिब नाहिँ,
तम अपेक्षारे थिबा महुर आकाश
मेघाच्छन्न करि देबि काळकाळ पाइँ,

विष देइ मारिदेबि समस्तंकु—येउँमाने तम
आग्रहरे रहि थान्ति, येउँमाने निजर अपेक्षा
बखाणि बसन्ति तम कान पाखे चापिला गळारे
किन्तु यदि तम्गे चाहँ उड़िभ्रिब किछि क्रमिकता
न थिबा मो समय बाहारे,

ता हेले से कथा कह साफ साफ, ओहरि यिबार
शुश्रुषारे तम डेणा योड़ियाड़ि देबि,
आकाश निर्मळ करि खरा टाण हेबा आगुँ निजे
तमकु उड़ेइ देइ मो अंधार भितरू सबुरि
चेहेरा ओ स्वर पोछि देबि।

सताईस

हे चंचल मुधुमक्खियों, अतीव इच्छा है
तुम्हारे डैने तौड़ दूं, तुम फिर जा नहीं सकतीं,
तुम्हारी प्रतीक्षा करते मधु-आकाश को
बादलों मे ढँक दूंगी मैं सदा-सदा के लिए,

विष पिलाकर मार डालूंगी उन सबको-जो तुम्हारी
प्रतीक्षा में होते हैं, जो अपनी प्रतीक्षा
बखानने लग जाते हैं, तुम्हारे कानों में फुस-फुसाकर,
किंतु यदि तुम चाहती हो उड़ जाना क्रमहीन
मेरे समय से परे,

तो बता दो सच-सच, पीछे हटने की
सुश्रुषा से तुम्हारे डैने जोड़ दूंगी,
आकाश स्वच्छ होकर धूप तेज होने से पहले
स्वयं तुम्हें उड़ाकर अपने भीतर से सबका
चेहरा और स्वर पोंछ डालूंगी।

28

दूरे रह दूरे रह शिखण्डचूळिआ
हमहम सुन्दर प्रेमिक,
ए बेळारे आत्मा मोर हिंस्र जन्तु परि
शिकार खोजुछि बुलि जंगल गोटाक।

कौणसि शिकार नाहिँ जंगलरे, खालि
छाइ मोर पडु न पडुणु
पवन बोबाळि छाड़े सते येपरि मुँ
झर्णुछि ता धुर्णिवायुतक।

नमपाइँ कान्दु नाहिँ, तेणु एक लुहकु
आपणार करि निअ नाहिँ।
ए मोर निजर भाषा केंहि न थिबार
रातिरे निजर सांगे कथा हेबा पाइँ।
कुआड़े नजाइ मध्य चालिचालि हालिआ हेबार
अवस्थारे कांदिबा व्यतीत
मुँ किपरि बुझान्ति मो निजकु ये मुँ नुहें
एकाकार मो मृत्यु सहित?

अठाईस

दूर ही रहो, दूर ही रहो हे मोरपंखधारी
हँसमुख सुंदर प्रियतम मेरे,
इस घड़ी मेरी आत्मा विक्षुब्ध पशु
शिकार ढूँढ़ रही है वन-वन में।

कोई शिकार नहीं जंगल में सिर्फ
मेरी छाया पड़ते ही
हवा गुर्राने लगती है मानों मैं
नोच रही हूं संपूर्ण बवंडर।

तुम्हारे लिए नहीं रो रही, इसलिए ये आँसू
मत जानो अपने
यह मेरी अपनी भाषा है जिस रात
कोई न हो उस रात स्वयं से बतियाने की।
कहीं गए बिना ही चलते-चलते थक
जाने पर रोने के अलावा
मैं कैसे समझाती अपने आप को कि मैं नहीं हुई हूं
एकाकार अपनी मृत्यु से?

मो आड़कु चाहँ नाहिँ गोळा चन्दनरे
बोळा मोर सुकुमार प्रिय,
निजर समम्त इच्छा बोहि करि फेरि आसुथिबा
लोके कि भीषण दिशे तमे जाणिनाहँ।
मे खूब अथर्व दिशे, खुब हिंस्र दिशे
चाहाणिरे खिन्‌भिन्‌ करे पवनकु,
मते कि पवन केउँ गुम्फारे लुचाइ
रखिछि ता प्रार्थना सबक।

मेरी ओर मत देखो चंदन-चर्चित
मेरे सुकुमार प्रिय,
अपनी समस्त इच्छाएं ढोकर लौट रहा
व्यक्ति कितना भयावह लगता है तुम नहीं जानते।
वह जराग्रस्ता लगता है, खूँखार लगता है,
दृष्टिपात से ही वह छिन्न-भिन्न करता है हवा को,
मानों हवा ने किसी गुफा में छिपा दी है
उसकी समस्त प्रार्थनाएं।

29

येतेबेळे से कहिले मोर सौन्दर्यर
पटान्तर नाहिँ, प्राण थिलायाएँ
से भल पाइबे नाहिँ आउ काहारिक
जाणिथिलि सबु कथा मिछ बोलि किन्तु
शुणिगलि येपरि मुँ सत मणिथिलि
याहा याहा कहुथिले प्रत्येक कथाकु
(से पर्यन्त नाकु जणा नथिला किपरि
कथा कहि हए किछि नकहि काहाकु)।

क्षणकपाइँ मुँ अनुभव करिथिलि
तारामाने झिलमिल करुथिले मोर
छाति तळे, कुळुकुळु होइ
प्रत्येक अतळ तळ शिरा प्रशिरारे
वाष्परुद्ध बालि आउ कादुअ उपरे
रक्तपरि बोहुथिला नई,
तोफा चन्द्र किरणरे लम्बि याइथिला
परमाय् दिगबळय डेइँ।

क्षणक पाइँ। मुँ पुणि क्षणक उत्तारे
बुझिगलि से बि दिने निजकु कहिबे

उनतीस

जब उन्होंने कहा मेरे सौंदर्य की
तुलना नहीं, प्राण रहने तक
वे नहीं चाहेंगे किसी और को, मैं भली तरह
समझ रही थी कि यह सारी बातें झूठी हैं
पर सुनती गई मानों मैं सच समझ रही हूं
जो भी कुछ कह रहे थे वह हर बात
(तब तक उन्हें मालूम नहीं था किस तरह
बातें कही जाती हैं बिना कुछ कहे किसी से।)

क्षण भर के लिए मुझे लगा
तारे झिलमिला रहे हैं मेरी
छाती तले कल-कल करके
प्रत्येक अनल तल नस-नस में
वाष्परुद्ध रेत और कीच पर
रक्त-सी बह रही थी नदी,
साफ चांदनी में पसर गई थी
आय क्षितिज लांघ।

क्षण भर के लिए। क्षण भर के बाद पुनः
समझ गई वे भी एक दिन स्वयं से कहेंगे

केते कण अन्य केहि नथिबा समये,
से बि दिने सबुथिरू फेरि आसिबे ओ
देखिबे केउँठि किए नाहिँ ये़तेबेळे
निज भाग्य मरि सारि ठिआ होइ थाए,
से बि मुण्ड पोति पोति आगेइ चालिबे
सर्वशेष आत्महत्या या़यँ।

न जाने क्या कुछ जब कोई नहीं होगा,
वे भी एक दिन सबसे होते हुए लौट आएंगे और
देखेंगे कोई नहीं है कहीं जब
अपना भाग्य मरने के बाद
तब भी खड़ा रहता है,
वह भी सिर नीचे गड़ाए आगे-आगे चलेंगे
अंतिम आत्महत्या तक।

30

से राति मो मने अछि येतेबेळे तमे
चुपचाप एकुटिआ ठिआ होइ थिल,
येपरि देखिबा पाइँ किछि नथिला कि
किछि दिशु नथिला तमकु,
येपरि बितिगला किन्तु तमे मरि नाहँ,
येपरि बंचिबा नाहीं कि मरिबा नाहिँ
किछि नाहिँ गणाकि आगकु।

सेतेबेळे मुँ तमर पछआड़ थाइ
भाबुथिलि मनकु मनकु,
आउ किए जाणि धीरे आउँसि देब मो
नथिबापणर रक्तमांस शरीरकु?

तीस

वह रात याद है मुझे जब
चुपचाप थे अकेले खड़े तुम
इस तरह तक रहे थे अँधेरा।
जैसे देखने का कुछ भी नहीं था
या कुछ दिखाई नहीं देता था तुम्हें,
जैसे तुम्हारी आयु का अंतिम
दिन बीत गया और तुम नहीं मरे
जैसे कि मरना नहीं जीना भी नहीं है
अब आगे कुछ भी नहीं है।

तब मैं तुम्हारे पीछे रह कर
मन ही मन सोचती थी
क्या और कोई जकड़ कर सहला देगी
मर न होने पर रक्त मांस के शरीर को।

31

मुँ नमक दिन दिन रानि राति चहिँ रहे किन्तु
तमे जमा देखा दिअ नाहिँ।
मो चाहिँ रहिबा कण? नाना चचळना
पर्ण चाहिँ रहिबारे तमे पूरापूरि
रहिबाक एते जागा काहिँ?

जेनेबेळे ब दिशुछ तम चेहेरार
अर्धाधिक रहे दृष्टि बहिर्भूत होइ,
याहा दिशे ताहा बि मो अशान्तिप्रसूत
नाना दृश्य नाना स्मृति नाना आकांक्षारे
आच्छादित होइ स्पष्ट दिशायाए नाहिँ,

त्था दिशाछि हलचल पाणिरे येपरि
कळे थिबा गछकर छाइ।
गोटिए नाआँर रूप दिशिबा मात्र के
अन्य एक नाआँ थिबा अन्य रूपटिए
से जागारे दिशे एकमात्र रूप होइ।
गोटिए रूपक मध्य आपणार करिबा भाजन
एतेकाळ धीर हेलि नाहिँ।

इकतीस

मैं तुम्हारी दिन-दिन रात-रात बाट देखती हूँ पर
तुम बिल्कुल अदीख हो।
मेरा देखते रहना क्या है? इस नाना चंचलताओं में पूर्ण
बाट जोहने में तुम्हारी पूरी तरह
टिके रहने भर को ठौर कहाँ?

जब दिखते भी हो तुम्हारे चेहरे का
आधे से अधिक रहता है फिर भी दृष्टि से परे,
जो कुछ दिखाई देता है वह भी मेरी अशांति से उपजे उन
नाना दृश्यों स्मृतियों आकांक्षाओं में
या तो ढँककर अस्पष्ट होता जाता है,

या फिर दीखता है अस्थिर पानी में जैसे
तट के पेड़ों की परछाईं।
एक नाम का चेहरा दिखते ही
अन्य एक नाम वाला दूसरा रूप
उस जगह दीखता है एकमात्र चेहरा बन।
एक चेहरे को भी अपना बना रख सकने की पात्रता
इतने अरसे तक नहीं मिल पाई।

ଆଉ କେତେ କାଳ ବାକୀ ଅଛି ଯେ ଭାବିବି
ତମେ ୟାହା ସେପରି ଭାବରେ
ଦିନେ ଆସି ପହଁଚିବ ମୋ ପରମାୟୁର
ଆଉ କେହି ନଥିବା କେଳରେ?

और समय बचा ही कितना है जो सोचूँ
तुम उस रूप में
एक दिन आ पहुंचोगे जब मेरी आयु का
और कोई भी नहीं होगा?

32

केहि छुँइनाहुँ काहाकु पदे बि
कथा कहिनाहुँ केहि,
किए मे परने यिबये एपरि
मोर गति गला पाहि?
आगरु तमकु याहा जाणिथिलि
तमे खालि ताहा नुहँ,
तमे अशरीरी, अथच मो पाखे
सबु बेळे रहि थाअ।
केते रूपे दिशुथाअ,
मो दासानदास केबे त केबे मो
सहारकारी हुअ।

तमे नीळकइँ रंगर छुरी
मते चिरि देइ याअ,
चाहिँला बेळकु मुँ नुहें तमे हिँ
रक्तरे बुड़िथाअ,
आहा करु करु हसि हसि तमे
मो बाट आगुळि बस,
न चाहिँबि बोलि आखि बुजि देले
हृदय भितरे दिश।
न शुणिबि बोलि स्वर

बत्तीस

किमी ने छुआ नहीं किसी को,
एक शब्द भी नहीं कहा किसी ने,
किसे विश्वास होगा इसी तरह
सारी रात गई है बीत?
पहले से तुम्हें जानती थी जितना
तुम नहीं हो मात्र उतना
तुम हो अशरीरी, फिर भी मेरे पास
सदा रहते हो।
कई रूपों में दिखते हो,
मेरे दासानुदास कभी न कभी मेरे
संहारक बनो।

नीले कुमदिनी रंग की छुरी हे.
तम मुझे चीरते जाओ,
देखने पर मैं नहीं तुम्हीं
रक्त में डूबते रहो,
सीत्कार भर-भर मुस्कराते हुए तुम
मेरी राह रोके रहते हो,
नही देखूंगी सोच आखें मूंद लेने पर
हृदय में दिख जाते हो।
नहीं सनूंगी सोच स्वर

कान रुन्धि देले तमे अभिळाष
पालटि अथय कर।

रातिरे तमकु मुँ छुइँलि नाहिं
काळे छुइँ देबा परे
तमे य़ेउँ पाणि य़ेउँ पवन मुँ
मिशियिबि ता भितरे,
काळे जन्म जन्म तमकु लोड़िबा
कर्मफळ सरियिब,
काळे मो चेतना बाहारे तमर
केउँ रूप रहियिब।
प्राण य़ाउ, प्राण रहु,
पाइ न पाइबा न पाइ पाइबा
द:ख सख लागिथाउ।

कान रूद्ध करने पर भी तुम अभिलाषा
बन अधीर करते हो।

गत तुम्हें मैंने छुआ नहीं,
कहीं छूने पर
तुम जो पानी जो हवा हो मैं
मिल जाऊंगी उसमें,
शायद जन्म-जन्म तुम्हें चाहने का
कर्मफल खत्म हो जाएगा,
शायद मेरी चेतना से परे तुम्हारे
किसी रूप में समा जाएगा।
प्राण जाए, प्राण रहे,
पाकर न पाना न पाकर पाना
सुख दुख चलना रहे।

33

राति पाहि आसिलाणि. एथर मुँ याएँ.
एथर नमे वि याअ. एणिकि मन न
विभिन्न अंधार द्वारा आलोकित हेब.
केबे अभिन्नता थिला समय नथिला
से कथा समय क्रमे भ्रान्ति होइ यिब।

दिन आलुअर एब आमर विच्छेद
जळजळ देखायिब. नानादि भ्रान्तिर
श्यामल भूभाग देखायिब धीरे-धीरे.
एक परे अन्य एक गच्छ सर्वोच्च
डालुँ डाळ उड़ि आविष्कार करुथिबि
येते यते विफळता थिब मो भाग्यरे।

मो निर्वासनर दीर्घ दिन बेळ याक
भाविथिबि समयानुक्रमे मुँ केबळ
दरक, दरक सिना चालि याउथिबि.
दिने त पहँचि यिबि एने दरे ये
सब बुद्धि वृत्ति टळ करि भाविलेबि
नम रूप आउ कण भावि पारुथिबि?

तेंतीस

रात बीत चली है, अब मैं चलती हूं,
अब तुम भी जाओ, इसके बाद तो मन
विभिन्न अंधेरों से आलोकित होगा,
कभी अभिन्नता थी समय न था,
वह बात समयानुसार हम भूल जाएंगे।

अब दिन के उजाले में हमारा विछोह
धुँधला दिखेगा, नाना भ्रांतियों का
श्यामल भू-भाग दिखेगा धीरे-धीरे,
एक के बाद एक पेड़ों के सर्वोच्च
डालों पर उड़कर आविष्कार करती रहूंगी
जितनी-जितनी असफलताएं हैं मेरे भाग्य में।

अपने निर्वासन के लंबे अरसे तक
सोचती रहूंगी समयानुसार मैं केवल
दूर से दूर तक जाती ही रहूंगी,
कभी तो पहुंचूंगी इतनी दूर कि
सारी बुद्धि-वृत्ति एकत्र कर सोचने पर भी
क्या तुम्हारा चेहरा फिर स्मृति में ला पाऊंगी?

ମୋ ସାମର୍ଥ୍ୟ ଅନୁଯାୟୀ ସବୁ କଳ୍ପନା ଓ
ସବୁ ଭାଷା ବ୍ୟବହାର କଲେ ବି କ୍ରମଶଃ
ତମେ ଦୂରତର ହେଉଥିବା ଦେଖୁଥିବି,
ନାପରେ ମୁଁ ଆତଙ୍କରେ ତମକୁ ଭାବିବା
ବା ବର୍ଣ୍ଣନା କରିବାର ଦୁଃସାହସ ଛାଡ଼ି
ନାନାଦି ମୃତ୍ୟୁରେ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ହୋଇ ଯିବି।

ସେ ସବୁ ମୃତ୍ୟୁକୁ କିଏ ଗଢିଛି? ତମେ ହିଁ
ନିଜକୁ ବିଭକ୍ତ କରି ନାନା ମୁହୂର୍ତ୍ତରି
ସଭିଙ୍କ ଭାଗ୍ୟରେ କିଛି କିଛି ରଖିଯାଅ,
ସଭିଏଁ ତମକୁ ଖାଲି ସେତିକି ମାତ୍ରକ
ଭାବୁଥିଲା ବେଳେ ତମେ ଶୂନ୍ୟନା ପାର୍ଲାଟି
ସଭିଙ୍କ ଭାଗ୍ୟରୁ ସେତିକି ବି ନେଇଯାଅ।

ଏମିତି କର? ନା ତମେ ଭାବୁଛ
ଉଭା ହେବ ସମୁଦାୟ ଲାବଣ୍ୟ ସହିତ
ଦିନ ସର୍ବଶେଷ ନିଷ୍ଫଳତାର ସୀମାରେ?
ଓଦାଓଦା ଆଖି ଆଉ ହସହସ ମୁହଁ
ଚାହିଁଲା ମାତ୍ରକେ ଭୁଲି ହୋଇ ଯାଉଥିବ
ଜୀବନଯାକର ଦୁଃଖ ପଲକପାତରେ?

ଏତେ କାଳ ଅଗୋଚର ଅଥଚ ସର୍ବଦା
ଅପରିବର୍ତ୍ତିତ ଅଭିଜ୍ଞତା ହୋଇକରି
ତମେ କଣ ଇତିହାସ ସାରା ଦେଖାଯିବ?
ଖାଲି ମୁଁ ନିଜକୁ ସତ ନ ମଣିବାଯାଏଁ
ସନ୍ଦେହଜନକ ପରିତ୍ରାଣ ହୋଇ ମତେ
ପ୍ରତି ମୁହୂର୍ତ୍ତରି ଦଣ୍ଡ ଦେଇ ଚାଲିଥିବ?

अपनी सामर्थ्य के अनुसार सारी कल्पना व
सारी भाषाएं प्रयोग करके भी क्रमशः
तुम्हें दूर होते देखती रहूंगी, उसके बाद मैं आतंक से तुम्हारे बारे में सोचने
या वर्णन करने का दुस्साहस छोड़
नानादि मृत्युओं मे निरुद्दिष्ट हो जाऊंगी।

वह सब मृत्यु किसने गढ़ी है? तुम्हीं
स्वयं को बाँटकर नाना क्षणों में
सबके भाग्य में कुछ-कुछ रख जाते हो,
जब सभी तुम्हें सिर्फ उतना ही
समझते है तुम शून्य बनकर
सबके भाग्य से उतना भी छान लेते हो।

क्यों करते हो यह सब? या तुम सोचते हो
खड़े होंगे पूरे लावण्य सहित
कभी अंतिम निष्फलता की सीमा पर?
गीली-गीली आँख और हँसमुख चेहरा
देखते ही भूल जाते होंगे
जीवन भर का दुःख पलक झपकते ही?

इतने अरसे तक अगोचर पर सर्वदा
अपरिवर्तित अनुभव बनकर
क्या तुम पूरे इतिहास में दिखोगे?
सिर्फ मैं खुद को सच न मानने तक
संदेहजनक परित्राण बनकर मुझे
हर क्षण दंड देते चलोगे?

ତମକୁ ନଭାବି ଯଦି ରହି ପାରୁଥାନ୍ତି
ତେବେ କଣ କେଉଁ ଅଲକ୍ଷିତ କେନ୍ଦ୍ରବିନ୍ଦୁ
ଚତୁଃ ପାର୍ଶ୍ୱେ ଘୂରୁଥାନ୍ତି ଏପରି ଭାବରେ?
ତମେ କଣ ଉପସ୍ଥିତ ନୁହଁ ଯେତେବେଳେ
ତମର ଅନୁପସ୍ଥିତି ବ୍ୟାପି ରହି ଥାଏ
ଅଚେତନ ସମୟର ଦିଗ୍‌ବିଦିଗରେ?

ସବୁ କାରଣର ପୂର୍ବବର୍ତ୍ତୀ ପରିଣାମ
ଭାବେ ସବୁ ବେଳେ ଥିବ, କେବେ ତ ତମକୁ
ଭେଟିବି, କେବେ ତ ମିଚ୍ଛିମିଚ୍ଛିକା ଦିନର
ଆଲୁଅ ଲିଭିବା ପରେ ଦେଖିବି ଯେ ତମେ
ନିଜ ଅନ୍ତରାତ୍ମା ଛନ୍ଦି ମୋ ଅନ୍ତରାତ୍ମାରେ
ମତ୍ତ ନିଜ ଚେତନାରେ ପରିଣତ କର।

ସେତିକି ବୁଝିବା ମାତ୍ରେ କେନେ ଦମ୍ଭ ଆସେ!
ସବୁ ଅସଂଲଗ୍ନ ଭାବ କଟିଯାଇ ଲାଗେ
ଆଗକୁ ଆଗକୁ ଗଳା ଗଳେ ପ୍ରକୃତରେ
ମୁଁ ଫେରି ଆସୁଛି, ଆଦୌ ହତାଶା ନଥିବା
ମୋ ହୃଦୟ କୃଷ୍ଣ କୃଷ୍ଣ ଡାକିବା ମାତ୍ରକେ
ତମେ ଦେଖାଯିବ ତମେ ନଥିବ ଜାଗାରେ।

तुम्हारे बारे में सोचे बिना यदि रह पाती
तो क्या किसी अलक्षित केंद्र-बिंदु के
चारों ओर घूमती रहती इस तरह?
तुम क्या उपस्थित नहीं रहते जब
तुम्हारी अनुपस्थिति व्याप्त रहती है
अचेतन समय के क्षितिज में?

सभी कारणों के पहले के परिणाम के
रूप में हमेशा रहोगे, कभी तो होगी
भेंट तुमसे, कभी तो झूठमूठ के दिनों का
प्रकाश बुझने के बाद देखूँगी कि तुम
अपनी अंतरात्मा में उलझकर मेरी अंतरात्मा में
मुझे ही अपनी चेतना में बदलते हो।

उतना समझने ही कितना दंभ होता है!
सारे असंलग्न भाव मिटकर लगता है
आगे से आगे जाते समय वास्तव में
मैं लौट आती हूं.
मेरा हृदय कृष्ण-कृष्ण पुकारेगा
और तुम दिखने लगोगे वहाँ भी जहां तुम नहीं होगे।

34

ମେ ଦିନେ ପିନ୍ଧାଇ ଦେଲେ ଆଗଣ୍ଠିରେ ମୋର
ମୁଦିଟିଏ । ନାକ କାଢ଼ି ଦେଲି,
ଲେଉଟାଇ ଦେଇ ନାକ କହିଲି ମୁଁ କଣ
ପତ୍ନୀ ପରି ନମକ ଦିଶିଲି ?

ସେ କିଛି କହିଲେ ନାହିଁ, ଖାଲି ଆଖି ବୁଜି
ନିଜ ମୁହଁ ଗାଜି ଦେଲେ ମୋ ଛାତି ଭିତରେ,
ମୁଁ ବୁଝିଲି ମୋର ମାରା ପରମାୟକ ସେ
ସଶୋଭିତ କରିଦେଲେ ଦୀର୍ଘ ନି ଶ୍ୱାସରେ ।

चौंतीस

उस दिन पहना दी उंगली में मेरी
मुंदरी एक। मैंने निकाल कर
वापस दे कहा उनसे
क्या मैं तुम्हें पत्नी सी दिखती हूं

उन्होंने कुछ न कहा, बस आंखें मूंदे
मुंह अपना छिपा लिया मेरी छाती में
मैंने समझा मेरी सारी आयु को उन्होंने
सजा दिया गहरी उसांसो से।

35

ୟାଅ ୟାଅ ମୋ ଦୁଆରୁ ୟାଅ।
ତମେ ରହିଥିବାୟାଏଁ ମୁଁ ତମର ହସ ଖିଏ ଧରି
ଖରା ବର୍ଷା ଜରା ମୃତ୍ୟୁ ସବୁ ଭୁଲିୟାଇ
ଭାସି ଚାଲି ୟାଉଥିବୀ, କାଳକାଳ ଭାସିବା ପରେ ବି
ମୁଁ ଜାଣିଛି ତମ ସାଂଗେ ଭେଟ ହେବ ନାହିଁ।

ତମେ ରହିଥିବାୟାଏଁ ଲାଗୁଥିବ ମୋର
ଭାଗ୍ୟ ଅଛି, ଦିନେ ରକ୍ତ ମାଂସର ଦେହରେ
ତମେ ଆସି ପହଁଚିବ ଭବିଷ୍ୟତ୍‌ବାଣୀ
ଧରି ମୋର ରକ୍ତ ମାଂସ ଦେହର ଦ୍ୱାରେ।

ଲାଗୁଥିବ ମୋର ସବୁ ଲୋଡ଼ିବାର, ସବୁ ଅପେକ୍ଷାର
ଅର୍ଥ ଅଛି, ଆଜି ନହେଲେ ବି
କେଉଁ ଦିନ ସର୍ବଶେଷ ଦିଗବଳୟରେ
ତମ ବାଟ ଆଗୁଳି ମୁଁ ଠିଆ ହୋଇୟିବି।

ସେତେବେଳେ ମତେ ୟାହା ଭଲଲାଗେ ସବୁକିଛି ଥିବ,
ତମେ ଦେଖାୟାଉଥିବ ମୋ ନିଜର ଇଚ୍ଛା ଅନୁୟାୟୀ,
ମୁଁ ଚାହିଁବା ମାତ୍ରେ ଜନ୍ହ ଉଁଇବ ଓ ବୁଡ଼ିୟିବ ୟେବେ

पैंतीस

जाओ जाओ मेरे द्वार से जाओ।
तुम्हारे रहने पर मैं तुम्हारी मुस्कान की छोर के पकड़
धूप वर्षा जरा मृत्यु सब भूलकर
बहती चली जाऊंगी, काल प्रतिकाल बहने पर भी
मैं जानती हूं तुमसे भेंट नहीं होगी।

तुम्हारे रहने तक लगेगा मेरा
भाग्य है, एक दिन रक्त मांस की देह में
तुम आ पहुंचोगे भविष्यवाणी लिए
मेरे रक्तमांस की देह के द्वार पर।

ऐसा लगेगा मेरी सारी कामनाओं, सारी प्रतीक्षाओं का
अर्थ है, आज न सही
किसी दिन अंतिम क्षितिज पर
तुम्हारी राह रोककर मैं खड़ी हो जाऊंगी।

उस समय मुझे जो अच्छा लगता है सबकुछ होगा,
तुम दिख रहे होगे मेरी इच्छाओं के अनुकूल,
मेरे चाहते ही चन्द्रमा उगेगा और डूबेगा जब-जब

जन्ह किछि देख् बोलि मँ् चाहिँबि नाहिँ।

य़ाअ य़ाअ मो दुआरू तमे एठि रहिले तमकु
लोड़िबार दिन थिब राति थिब बयर बि थिब
खरा धाँस मरिबार धाँस बाजि तम
चित्तचोरा निराकार मँ्ह श्ा्खियिब।

मैं नहीं चाहूंगी कि चन्द्रमा कुछ देखे।

जाओ जाओ मेरे द्वार से तुम यहां रहे तो तुम्हारी
कामना से भरे दिन रात होंगे आयु भी होगी,
धूप की झाँस मरने की झाँस लगकर तुम्हारा,
चित्तचोर निराकार चेहरा सूख जाएगा।

36

जाणिथिलि तमे दिने चुप होइ यिब,
हठात तमे दिने आउ हसिबनि, आमकु देखिले
अचिन्हा बारिब, निजे रहिथिबा
गाआँ ओ सहर सबु हठात दिने चिन्हि पारिबनि,
आमर निर्भर होइ इतिहास बाहारे बुलिबा
दिन आउ मने पड़िबनि।

सेनेबेळे चुप रहिलेबि
दुनिआँ कु केते कण कहुथिलु, दुनिआँ काहिँकि,
आकाश मयूर एवं राशि राशि बालि
सभिंकु केते ये कण कहुथिलु, आमे हिँ रातिकु
पुणि आशा करिबाकु शिखाइलु, बहुत काळरू
निश्चिन्ह रास्तांकु आज्ञा देलु चळप्रचळ हेबाकु।

सेतेबेळे लागुथिला यतुसामान्य अस्वीकार परे,
इतस्तत: पृथिवीकु यतुसामान्य मजड़ामजड़ि
कला परे, यतुसामान्य रक्तपात परे
ए अणनि: श्वासीपण कटियिब, मरिबा पर्यन्त
याइ हेब हसि हसि बिना आतंकरे।

छत्तीस

जानती थी तुम एक दिन चुप हो जाओगे
सहसा एक दिन तुम फिर नहीं हँसोगे, हमें देख
अनजाने बनोगे, अपना
गाँव और शहर सब सहसा किसी दिन पहचान नहीं सकोगे,
हमारा निर्भय होकर इतिहास से परे घूमने के
दिन फिर याद नहीं आएंगे।

उस समय चुप होते हुए भी
दुनिया को कितना कुछ कहा था, दुनिया ही क्यों,
आकाश, मोर और ढेर की ढेर रेन
सबको न जाने कितना कुछ कहा था, हमने ही रात को
सिखाया था आस लगाना, काफी अरसे से
निश्चिह्न राहों को आदेश दिया था चलने-फिरने का।

उस समय लगता था किंचित अस्वीकार के बाद,
अस्त व्यस्त पृथ्वी को किंचित सजाने सँवारने के बाद
किंचित रक्तपात के बाद
यह रीतायन मिट जाएगा, कि ठीक मरने की सीमा तक
जाया जा सकता है मुस्कुराते हुए, बिना आतंक के।

सेपरि दिन त केभैं रहे नाहिँ, मोर मध्य नाहिँ।
देखुना हँ मुँ किपरि मोर अन्तः सारशून्य दिन
स्वप्नरे बुलिला परि खालिबुलुथाए,
किछि मिळिबार नाहिँ जाणि सुदा निति
निद बाउळारे केते कण खोजुथाए?

देखुनाहँ मुँ किपरि मोर भस्मसात्
भविष्यत नीळवर्ण करिसारि ताकु
चन्दनरे चित्र करे, कोळाग्रत करे?
देखु नाहँ मुँ किपरि हसे कान्दे रागे रुषे आउ
सबु राग रुषा छाड़ि आक्षि बुजि मिशि याउअछि
कपोळकल्पित बाहुबंधन भितरे?

तमे किन्तु चुप हेब आपणा समेत
सबु किछि असत्य मणिब;
पुणि केउँ दुःख किम्बा पुणि केउँ खेळ
भितरे हठात् दिने संध्याटिए सर्जना करिब
याहा किछि थिब तार सबु इतिवृत्त
निश्चिन्ह करिब घोर अंधार भितरे,
निःशब्द करिब सबु शब्द, निजे हिँ रहिब
अधा मृत्यु अधा जीबनरे।

मुँ किन्तु मरिबा परे संपूर्ण भाबरे
मरियिबि, जीइँथिबा याएँ
बेळ काहिँ? तमे यदि प्रहेळिका हुअ
ता हेले बि कण हेला? बेशभूषा होई थरे धरु

वैसे दिन कभी रहते नहीं, मेरे भी नही हैं।
देखते नहीं मैं कैसे अपने अंत:सार रहित दिन
सपनों में घूमने-सी सिर्फ घूमती रहती हूं
कुछ मिलने को नहीं जानकर भी प्रतिदिन
नींद के झोंके में न जाने क्या कुछ ढूंढ़ती रहती हूं?

देखते नहीं मैं कैसे अपना भस्म
भविष्य नीला करके उसे
चंदन से चित्रित करती हूं, गोद में बिठाती हूं?
देखते नहीं मैं कैसे हँसती-रोती खीझती रूठती हूं और
सारा खीझना-रूठना छोड़ आँखें मूंद समा जाती हूं
कपोल-कल्पित बाहुबंधन में?

लेकिन तुम चुप रहोगे, अपने समेत
सब कुछ झूठ समझोगे,
फिर किसी दु:ख या फिर किसी खेल में
सहसा किसी दिन एक शाम की सर्जना करोगे,
जो भी कुछ होगा उसका संपूर्ण इतिवृत्त
निश्चिह्न करोगे घोर अंधेरे में,
नि:शब्द करोगे सारे शब्द, खुद ही रहोगे
आधी मृत्यु आधे जीवन में।

किंतु मैं मरने के बाद पूरी तरह
मर जाऊँगी, जीते जी
समय कहां? तुम यदि पहेली बनो
तो भी क्या? बन सँवरकर एक बार घर से

ବାହାରି ଆସିବା ପରେ ଆଉ କେତେ ବେଳ ଥିବ ଯେ ମୁଁ
ଫେରିଯିବି ମୋର ଶେଷ ନିଃଶ୍ୱାସ ପାଖରୁ?

निकल आने के बाद और समय ही कितना बचेगा कि मैं
लौट जाँऊ अपनी अंतिम सांस के निकट से?

37

ୟେତେ ଥର ମୁଁ ପହଁଚେ ତମ ନିକଟରେ
ସେତେଥର ଆପେ ଆପେ ଚୁପ ହୋଇଯାଏଁ,
କେଉଁ ଶବ୍ଦ ପଇଟିବ ମନ ସେତେବେଳେ
ପ୍ରତ୍ୟେକ ଶବ୍ଦର୍ଥ ସଂଗେ ମିଶି ସାରିଥାଏ
ୟେତେବେଳେ ଆଉ କିଛି ଆକୃତିରେ କିଛି
ଅର୍ଥ ରହେ ନାହିଁ, ୟେତେବେଳେ ପ୍ରତି
ଆକୃତି ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ସବୁ ଆକୃତି ସଦୃଶ
ଦେଖାୟାଏ, ୟେତେବେଳେ ଫୁଲ
ନରହି କେବଳ ରହେ ସୁବାସ ଫୁଲର
ଓ ସୁବାସ କ୍ରମେ କ୍ରମେ ରଂଗଡ଼ିଏ ହୋଇ
ଅନ୍ୟ ସବୁ ରଂଗ ସଂଗେ ହୁଏ ଏକାକାର?

ୟେତେଥର ମୁଁ ପହଁଚେ ତମ ନିକଟରେ
ସେତେ ଥର ଲାଗେ ହାୱା ପରି ମୁଁ ଉଶ୍ୱାସ,
ଦେହର ଉଜନ ନାହିଁ, ଓଢ଼ଣାପରି ମୁଁ
ତାକୁ ବୋହି ଧୂରି ଆସେ ସମଗ୍ର ଆୟୁଷ,

ପାସୋରି ପକାଏ ସବୁ ଗହଳଚହଳ
ଅଥଚ ନିର୍ଜନ ଦିନ, ପରାଧୀନ ରାତି,
ପାସୋରି ପକାଏ ସବୁ ଚିକିଟା ଘଟଣା,

सैंतीस

जितनी भी बार पहुंचती हूँ मैं तुम्हारे पास
उतनी बार अपने आप चुप हो जाती हूं,
कौन-सा शब्द ठीक बैठेगा मन जब
प्रत्येक शब्दार्थ के साथ मिल चुका हो,
जब और किसी आकृति में कोई
अर्थ नहीं रह जाता, जब प्रत्येक
आकृति अन्य आकृतियों-सी
लगती है, जब फूल
न रहकर केवल बचती है महक उसकी
और महक क्रमशः एक रंग बनकर
अन्य सारे रंगों के साथ हो जाता है एकाकार?

जितनी भी बार पहुंचती हूं मैं तुम्हारे पास
उतनी बार लगता है मैं हवा-सी हल्की हूं,
देह का वजन नहीं, आँचल सा
उसे ढोए मैं घूम आती हूं सारी उम्र,

भूल जाती हूं सारी चहल-पहल
जबकि निर्जन दिन, पराधीन रातें,
भूल जाती हैं सारी चिकटी घटनाएं,

चन्द्र, सूर्य तारांकर जन्म ओ मरण।
मो आत्माकु आउ काहा डाक शुभु नाहिँ,
खालि य़ाहा प्रतिध्वनि परि शुभुअछि
मो निज भितरू डाक केबळ मोपाइँ।

ये़ते थर मुँ पहँचे तम निकटरे
केबे क्लान्त लागे नाहिँ, ये़परि जमारू
मुँ कुआड़े य़ाइ नाहिँ, ये़परि कदापि
तमे भिन्न न थिल मोठारू।
मो परि तमर मिछिमिछिका चेहेरा,
सेहिपरि नाना रंग, थरक कान्दरे
सबु रंग धोइ होइय़ाए, मुँ अटकि
रहियाए लुहभिजा अनुपस्थिति रे।

तमकु किपरि कह वर्णना करिबि?
किपरि वर्णता करि हेब निशाधरि
झरझर वर्षा हेबा परि स्मृतिटिए?
किपरि वर्णना करि हेब जन्म जन्म धरि येउँ
आशा आशारेहिँ रहियाए?
केउँ शुद्ध थिबा येबे मरिबार स्पृहा छाड़िदेले
वर्णना करिबि ये़बे मरिबार स्पृहा छाड़िदेले
अन्य स्पृहा निजर नथाए?

चांद सूर्य तारों का जन्म व मृत्यु।
मेरी आत्मा को अब किसी की पुकार सुनाई नहीं दे रही
बस सिर्फ प्रतिध्वनि-सी सुनाई दे रही है
मेरे अपने भीतर की पुकार जो केवल मेरे लिए है।

जितनी भी बार पहुंचती हूं मैं तुम्हारे पास
कभी थकान नहीं लगती, मानों कहीं
मैं गई ही नहीं, मानो कभी
तुम अलग थे ही नहीं मुझसे।
मेरी तरह तुम्हारा झूठ मूठ का चेहरा,
वैसे ही नाना रंग, एक बार की रुलाई से
सारे रंग धुल जाते हैं, मैं रुकी
रह जाती हूं आंसुओं से भीगी अनुपस्थिति में।

कैसे वर्णन करूँ तुम्हारा कहो तो?
कैसे वर्णन किया जा सकता है आधी रात में
रिमझिम बारिश सोने-सी उस याद को?
कैसे वर्णन किया जा सकता है जन्म-जन्म से जो आस
आस ही बनी रहती है?
किस शब्द वाले किस वाक्य से खुद का
वर्णन करूंगी जब कि मरने की आस छोड़
अन्य आस अपनी होती नहीं?

38

केते बाट आसिलिणि? लागुछि येपरि।
एठाकु आसिलि उडि उड़ि पवनरे।
मुँ हाटकु यिबा बाट लेउटिबा बाट
पासोरि अटकि रहे ए नई कूळर,
सतेकि एक नईकूळ मोर सबु यिबाआसिबार
शेषसीमा, सतेकि संसार
सरियाए येउँठारे मो आग्रह सरे;
सतेकि मो अतीत, प्रति परिचित
आत्मीय स्वजन, जनपद लुचिगले
रसा तळे, चारि आड निःशब्द मो निज
निःश्वास ओ ए नईर शब्द छाडिदेले।

तथापि से आसन्तिनि काहिँकि? आउन
अन्तराय होइ केहि नाहिँ,
मुँ बसिछि मोर सब अंगीकार धरि
से पहँचि यिबा मात्रे तांक

केते प्रतिरोधर मुँ प्रतिरोध करि
केते अनिद्रारे केते दीर्घनिःश्वासरे
केते निर्निमेष चाहिँ रहिबारे केते

अड़तीस

कितनी दूर निकल आई? लगता है जैसे
यहां पहुंची हूं उड़ती हुई हवा में
मैं हाट जाने की और वापस आने की राह
भूलकर रुकी रहती हूं इस नदी तट पर;
मानों यह नदी तट मेरी समस्त आवाजाही की
अंतिम सीमा है, मानो दुनिया
खत्म हो जाती है जहां मेरा आग्रह समाप्त होता है:
मानो मेरा अतीत, प्रत्येक परिचित
आत्मीय स्वजन, जनपद छिप गए
रसातल में, चहुँओर निस्तब्धता है मेरी अपनी
उँसांस और इस नदी का कलकल छोड़!

फिर भी वे आते नहीं क्यों? अब तो
कोई बाधक भी नहीं,
मैं बैठी हूं अपने सारे अंगीकार लिए
वे पहुंचते ही उन्हें सौंपने।

कितने विरोधों का मैं विरोध कर
कितनी उनींदों से कितनी दीर्घ उँसांसों से
कितना निर्निमेष तकते रहकर

ଚେତନାରେ ଅବଚେତନାରେ
ମୁଁ ତିଆରି କରିଛି ମୋ ଅଂଗୀକାର କଣ
ସେ ବୁଝୁନାହାନ୍ତି? କିମ୍ବା ଯଦି ଚାହୁଁଥିବେ
ଆମ ଭେଟ ହେଉ ବୋଲି ଅନ୍ୟ କେଉଁଠାରେ
ସେତିକି ତ କହି ଥିଲେ କେତେବେଳୁଁ ଏ ନଈ ଉପରୁ
ଆକାଶ ଉଠାଇ ରଖି ସାରନ୍ତିଣି ସେ ଜାଗା ଉପରେ।

ସେ କିଛି କହନ୍ତି ନାହିଁ, କିମ୍ବା କହିଥିବେ
ଏଠାରୁ ଅନେକ ଦୂରେ, ଅନ୍ୟ କେଉଁଠାରେ
କହିଥିବେ ଦିନ ଦିନ ରାତିରାତି ବର୍ଷବର୍ଷ ଧରି,
ମୁଁ କିପରି ଶୁଣିଥାନ୍ତି? ମୋତେ କଣ ଜଣା ଥିଲା ଯେ ସେ
ଅନ୍ୟ ଜାଗା ବାଛିଥିବେ ମୋତେ ନ ପଚାରି?

ମୁଁ କଣ କଳ୍ପନା କରିଥିଲି ଯେ ଏଠାକୁ
ନ ଆସି ସେ ରହିଯିବେ ତାରାମାନେ ଝିଲମିଲ ହେଲେ,
ପବନ ଦକ୍ଷିଣ ଦିଗୁ ବହିଲେ, ମୋ ଯୌବନ ପୂର୍ଣ ନା
ଆରମ୍ଭ ହେବାର ମୁହୂର୍ତକୁ ଫେରିଗଲେ,
ଲେଉଟିବି ନାହିଁ ବୋଲି ପ୍ରତିଜ୍ଞା କରି ମଁ
ସର୍ବଶେଷ ଥରପାଇଁ ବାହାରି ଆସିଲେ,
କହିବାକୁ ଥିବା ଏତେ କଥାରେ ଓ ଏତେ
ଆଶାରେ ମୁଁ ଗୋଟାପଣେ ସାଜି ହୋଇଥିଲେ?

ଏବେ ତ ଏ ନଈକୂଳ ଲାଗୁଛି ଯେପରି
ସଂସାର ଆରମ୍ଭ ହୁଏ ସେ କୂଳ ଉତ୍ତାରେ।
ଏ କୂଳରେ କିଛି ନାହିଁ, କେବଳ ନିଷ୍ଫଳ
ଦାମ୍ଭିକତା ବ୍ୟାପି ଅଛି ଦିଗଦିଗନ୍ତରେ।

कितनी चेतनता से अचेतनता से
मैंने बनाया है अपना अंगीकार क्या वे नहीं समझते?
या फिर यदि चाहते हों
हमारी भेंट हो कहीं और
यह कह देते तो इस नदी के ऊपर से
आकाश उठाकर रख चुकी होती उस जगह।

वे कुछ नहीं कहते, या फिर कहा होगा
यहां से बहुत दूर, कहीं और,
कहा होगा दिन-दिन, रात-रात साल-साल भर,
मैं भला कैसे सुनती? मुझे क्या पता कि उन्होंने
कोई और जगह चुनी होगी मुझे पूछे बिना?

क्या मैंने कल्पना की थी कि यहां
न आकर वे रुक जाएंगे तारे झिलमिलाने पर,
हवा दक्षिण दिशा से बहने पर, मेरा यौवन पुनः अपने
प्रारंभिक क्षण में लौट जाने पर,
वापस न लौटने की प्रतिज्ञाकर मैं
अंतिम बार निकल आई.
कहने को सहेज रखी उन सारी बातों उन सारी
आशाओं से पूरी तरह सुसज्जित हो?

अब तो यह नदी-तट लगता है मानों
दुनिया शुरू होती है उस पार से।
इस पार कुछ नहीं, केवल निष्फल
दंभ व्याप्त है दूर-दूर तक।

नई केबे बढ़े पुणि केबे शुखियाए,
पाणि केबे माटिआ त नीळ दिशे अन्य समयरे,
केतेबेळे गोटाकेते फूल फुटिथान्ति
सेइ गोटाकेते गछमानंक डाळरे।
मोते कण जणा अछि मो संकल्प बाहारकु बाट
ये तांकु भेटिबि केउँ पृथक जागारे?

चाहुँ चाहुँ काहिँ केते बयस हेलाणि,
मुँ त आउ आग परि देखायाउ नाहिँ,
से यदि सनकु सत आसन्ति मुँ कण
नांकु भेटिबि ए जराजीर्ण रूप नेइ?

आउ केते दिन अछि ये मुँ नूआ करि
प्रीति करि कहिबि, से प्रीतिरे नथिब
मो निजर निर्धारित स्थान ओ समय,
लेशमात्र आशा ये मो प्रति मुहूर्त्तर
उत्कण्ठा प्रतिदान पाइबि निश्चय,
केहि नथिबे ओ किछि नथिब, मुँ निजे
नथिबि कि मो जीवनवृत्तान्त नथिब,
से हिँ खालि महाशून्य परि थिबे, से महाशून्यरे
सत्य ओ असत्य एका कथा होइथिब?

नदी कभी बढ़ती है तो कभी सूख जाती है,
पानी कभी मटमैला तो कभी नीला दिखता है,
कभी-कभार एकाध फूल खिले होते हैं
उन चंद पौधों की टहनियों पर
मैं भला क्या जानूँ
अपने संकल्प से बाहर की राह
कि उनसे मिलूँ किसी और जगह?

देखते-देखते आयु कितनी बीत गई,
मैं तो अब पहले-सी नहीं लग रही
वे यदि कहीं सचमुच आ गए मैं क्या
उनसे मिलूंगी यह जीर्ण-शीर्ण रूप लिए?

और समय ही कितना है कि मैं उन्हें नए सिरे से
चाहूँ और कहूं उस चाहना में नहीं होगा
मेरा अपना निर्धारित स्थान और समय,
जरा-सी आशा है कि अपने प्रत्येक क्षण की
उत्कंठा का प्रतिदान मिलेगा ज़रूर,
कोई नहीं बचेगा और कुछ नहीं बचेगा, मैं खुद नहीं बचूँगी ना ही
मेरा जीवन वृतांत बचेगा
सिर्फ वे ही महाशून्य-से बचेंगे, उस महाशून्य में
सत्य और असत्य एक ही बात होगी?

39

मुँ बा कण? शून्यरे केबळ
क्षणे अछि क्षणे नाहिँ एपरि आलोक
येतेबेळे याहा याहा आलोकित करे
सेतेबेळे ताकु भाबे ब्रह्माण्ड गोटाक।
तार कन्दिविकन्दिरे असंख्य थर मुँ
रहियाए असंख्य जागारे,
परमायु बितियाए शून्यरे अंकित
आकृतिक इतिवृत्त मने रखिबारे।

केते कान्दमाड़े भाबि बसिले दिने त
सबु चिन्हवर्ण लिभियिब ए देहर,
तापरे नथिब किछि, नाआँ कि चेहेरा
कि सामर्थ्य कथा कहिबार।
तमकु यदिबा भेटें किपरि कहिबि
देख देख मुँ पहन्चिगलि?
तमे बा देखिब कण? मुँ त सेतेबेळे
नथिबि कि केबेबि नथिलि।
केबे यदि फरिआसे एठाकु अपूर्ण
लोड़िबापणर झड़ होइ बोहिबाकु

उनतालीस

मैं भी क्या हूं? शून्य में केवल
इस पल हूं, उस पल नहीं ऐसा आलोक
जब जिसे करता है आलोकित
सोचती हूं तब कि वही ब्रह्माण्ड है।
उसकी गलीकूचों में असंख्य बार मैं
रह जाती हूं अनेक जगह,
बीत जाती है आयु, शून्य में अंकित
आकृतियों की कहानी याद रखने में।

रोना आता है बेहद जब मैं सोचती हूं
कि एक दिन मिट जाएंगे सारे
नाम-निशान इस शरीर के
उसके पश्चात न होगा कुछ भी
नाम या चेहरा
न ही वह समर्थता बात करने की।
तुम से अगर भेंट हुई भी तो किस तरह कहूंगी
देखो मैं पहुंच गयी हूं? मैं तो तब
न होऊंगी, न ही कभी थी मैं।
अगर कभी लौट आऊं यहां मैं
अपूर्ण चाहना की आँधी बन बहने के लिए

पुणि एहि मनगढ़ा पृथिबीर नाना
कन्दिविकन्दिरे खोजि बुलिबि तमकु।
जन्म जन्म व्यापि थिबा दुर्भिक्ष भितरे
निति निति हेउथिबि आर्त्तनादटिए,
मुँ त आउ तमे नहें ये मोर लोड़िबा
थरकर प्रहेळिकारे हिँ सरियाए!

फिर इसी मनगढ़ंत धरती के
कोने-कोने में मैं तुम्हें ढूंढ़ती फिरूंगी।
जन्म से जन्म तक व्याप्त अकाल में।
रोज रोज होती रहूंगी मैं चीख एक,
मैं तो अब तुम नहीं हूं कि
एक ही प्रहेलिका में
मेरी चाहना हो जाए निःशेष।

40

मुँ जाणिछि तमे केउँ दिगरू आसिब
जन्ह आलुअरे नोफा हृदयर पूर्वदिगुँ तमे
निश्चय आसिब, मोर शेष मुहूर्त पर्यन्त
व्यापिथिबा बालिचरसारा तम छाइ पड़िथिब।

मुँ तमर हात धरि नेइयिबि ओ देखाइ देबि
उत्तर नशुभिथिबा गोटिगोटि बेळ
सेतेबेळे कण तमे आसिब आसिब
बोलि पड़थिला उठथिला भमण्डल?

ꣳ त मुँ तमे आसबिकि नाहिँ
भाबि घुरू थिलि मोर जन्मगत चेतना गोटाक।
तमे बा किपरि आसिथान्त येउँठारे
तमे न आसिब बोलि एतिकि आतंक
घोटिथिला? सेतेबेळे त मुँ
तमकु मो चाहिँबार अधकरे चाहिँ रहिथिलि।
बाकी अधकरे निजे गढ़िथिबा दिन ओ रातिरू
निजे फाँदि थिबा आश्वासना खोजथिलि।

चालीस

जानती हू मैं तुम किस दिशा से आवोगे,
चाँदनी से स्वच्छ हृदय की पूर्वी दिशा से तुम
ज़रूर आवोगे, मेरी अंतिम घडी तक
फैले बलुआ-दलदल पर तुम्हारी परछाइं पड़ी होगी।

मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर ले जाऊँगी और दिखा दूंगी
प्रत्येक निरुत्तरित पल,
क्या तुम उस वक्त आवोगे आवोगे?
कहकर उठना-पड़ना था भूमंडल?

उस समय तो मैं तुम आवोगे या नहीं
सोचते हुए डोल रही थी अपनी जन्मगत चेतनाओ में।
तुम भला किस तरह आते जहाँ
तुम्हारे न आने का इतना आतंक
छाया हुआ था? उस वक्त तो मैं
तुम्हें अपने चाहने के आधे से तक रही थी,
बाकी आधे से खुद बनाए दिन व रातों से
खुद ही गढ़े दिलासा तलाश रही थी।

सेतेबेळे तमे दिशुर्नाथिल, मुँ किन्तु
भाबुथिलि तमे निश्चे थिब केउँठारे।
हुएत चन्दन टोपा घेनुथिब हुएत किएसे
हठात पहंचि अटकाइ थाइपारे,
हुएत असुस्थ हेले, हुएत हठात्
नईबढि आसिगला, हुएत मिछरे
तमकु किएसे कहिथिब ये मुँ आजि
बाहारि पारिबि नाहिँ कौणसि प्रकारे।
भाबुथिलि डेरि पछे हेले हेउ तमे
अवश्य दिने ना दिने एठाकु आसिब,
एते चाहिँ रहिबा कि मुँ मरिबा जाएँ
खालि चाहिँ रहिबा हिँ होई रहियिब?

पुणि बेळेबेळे किन्तु लागुथिला तमे
जमारू आसिब नाहिँ, तमे कण एजन्म पर्यन्त
कौणसि अपरितृप्त चाहिँ रहिबारे
बिताइ देइछ मोर आयुष निजर?

तमे कण याहा याहा येतेबेळे दिशे
ताकु सत मणिछ कि मुँ मणिला परि।
याहा दिशुथिला ताहा आउ न दिशिले
दिन राति खोजिछ कि मुँ खोजिला परि?
तमर निकट कण दूर कण? तमेत सबुठुँ
सबुबेळे रहिथाअ समान दूररे,
निज सुखदुःख निज देह बि अस्थायी
उत्तेजनाटिए तम उदासीनतारे।

तब तुम नहीं दिखते, लेकिन मैं
सोचती थी तुम होगे ज़रूर कहीं न कहीं।
शायद चंदन का टीका लगा रहे होगे शायद किसी ने
सहसा पहुँचकर रोक लिया होगा,
शायद अस्वस्थ हो गए होंगे, शायद सहसा
नदी बढ़ आई होगी, शायद झूठे ही
तुम्हें किसी ने कह दिया होगा कि मैं आज
नहीं निकल सकती किसी कारणवश।
सोचती थी देर भले ही हो तुम
एक न एक दिन आवोगे अवश्य यहां,
यह बाट जोहना क्या मेरे मरने तक
महज बाट जोहना ही बनकर रह जाएगा?

और कभी कभी किंतु लगता था तुम
आवोगे ही नहीं, तुमने क्या इस जन्म से पहले
किसी अतृप्त बाट जोहने में
बिताई है पूरी जिंदगी अपनी

तुमने क्या जो भी कुछ दिखता है जब भी
उसे सच समझ लिया मेरी तरह?
जो कुछ दिखता था वह फिर न दिखने पर
क्या दिन-रात तलाशा है उसे मेरी ही तरह?
तुम्हारे लिए निकट क्या दूर क्या? तुम तो सबसे
हर समय रहते हो समान दूरी पर,
अपना सुख-दुःख अपना शरीर भी एक अस्थायी
उत्तेजना है तुम्हारी उदासीनता में।

मुँ किन्तु जाणिछि तमे एथर निश्चय
आसिब, एणिकि आउत
मो भितरे केहि नाहिँ यिए दिन काळ
हिसाब करिब शेष निःश्वास पर्यन्त
एणिकि तमे त केउँ पूर्व परिचित
आकृतिविशिष्ट नुहँ, तेणु तमे दिश कि न दिश
मुँ जाणे ये मे कल्पनातीत केउँ एक
आनंद भावरे तमे मो पाखकु आस।
पहंचि गलाणि प्राय हृदयर एइ
ए याएँ अज्ञात विस्तीर्णता सीमान्तरे,
आहा मुँ न बुझिपारि जीवन गोटाक
केते रूषिलि मो जीबजीवन उपरे!

लेकिन मैं जानती हूँ तुम इस बार
ज़रूर आवोगे, अब तो और
मेरे अन्दर कोई नहीं है जो दिन भर
हिसाब लगाएगा अंतिम सांस तक
अब तो तुम कोई पूर्वपरिचित
आकृति विशेष नहीं हो, इसलिए तुम दिखो या न दिखो
मैं जानती हूँ मेरी कल्पनातीत किसी
आनंदभाव से तुम मेरे पास आते हो।
पहुंच चुका है लगभग हृदय के देखो
यहां तक अज्ञात विस्तीर्ण सीमांत पर,
हाय मैं बिना समझे-बूझे जीवन भर
कैसे रूठी रही अपने प्राणों के प्राण से!

41

आम्म मुँ तमकु बेश करिदिएँ मोर
उपादानमांकरे, प्रथमे तमकु
धोइधाइ देइ मोर चाहिँ रहिबार
दीर्घनिःश्वासरे पोछि देबि श्रीअंगक।

काळकाळ धरि लोर्ड़थिबा सांत्वनार
चन्दनरे गालरे ओ भूलता उपरे
लता करि खंजिदेबि मोर कान्दकान्द
कुंकुमर फुलमान मझिरे मझिरे।

आक्षिरे लगाइ देबि मोर अंधारर
कजळ ओ आंकिदेबि मझि कपाळरे
उज्वळ तिळकटिए तमकु देखिबा
दिनठुँ एयाएँ शोइ नथिबा रक्तरे।

तिळक मझिरे देबि मोर चूनाचूना
आशांक त्रिभुजटिए धूसर वर्णर,
मो चमकि पड़िबार माणिक्यखचित
मुकुट पिन्धाइ देबि मुण्डरे तमर।

इकतालीस

आओ मैं सजा दू तुम्हें
अपने ही उपादानों से, पहले तुम्हें
धो दूं और अपने निहारने की
गहरी सांसों से पोंछ दूं श्रीअंग।

कालकाल से इच्छित सांत्वना के
चंदन से गालों पर और भौंहों पर
लता बना कर लगा दूं उच्छ्‌वासों के
कुंकुम फूल भीतर-भीतर।

आंखों में लगा दूंगी अपने अंधेरे का
काजल और चित्रित कर दूंगी मध्य ललाट पर
उज्ज्वल तिलक एक तुम्हें देखने के
दिन से अब तक न सोने के रक्त से।

तिलक के बीचों बीच बना दूंगी एक
चूर्णीभूत आशाओं का त्रिभुज धूसर वर्ण का
मानिक मुकुट अपने चौंकने का
पहना दूंगी मैं तुम्हारे मस्तक पर।

मोर सबु लज्जारूण स्वप्नमानंकर
अळता लगाई देबि तमर पादरे,
मुँ नदेइ पारिथिबा चुमांकर माळ
तिआरि पिन्धाइ देबि तमर गळारे।

मोर शिरा प्रशिरारे भिणा झीनवास
तमकु पिन्धाइ देबि, एपरि तमकु
वेश करि सारि फेरियिबि मुँ येउँठि
आसिथिलि पाणि थरे से निष्फळताक।

मेरे लज्जारुण सपनों का
अलता मैं लगा दूंगी तम्हारे पत्रतलों में
न दे पायी हूँ जो चुंबन माला बनकर
उन्हीं को पहना दूंगी तुम्हारे गले में।

मेरे नस-नस में बने झीने वस्त्र
पहना दूंगी, और इस भांति
सजाधजा कर लौट चलूंगी जहां से
आयी थी फिर मैं उसी निष्फलता को।

42

तमकु ईश्वर बोलि किए कहे? तमे
लवणी पितुळाटिए, आक्षिरे आक्षिए
लुह धरि याआआस कर,
कथा कहुँ कहुँ तमे रहि याअ हठात, येपरि
तम गळा रुंधि दिए केते शताद्वींक
नैपथ्यरे थिबा हाहाकार।

समस्ते बाहुड़ि यिब उत्तारे तमे हिँ
अंधाररे ठिआ होइ थाअ
काहार अचिन्हा लास् धुआंधोइ करि
पुनश्च दरोटि कथा कहिबाकु साकुलाउ थाअ।
राति दुइ घड़ि हेले मुरुकि मुरुकि
हसुथाअ, येपरि शुणुछ
ता मुँहरु प्रेमाळाप, येपरि ता दीर्घनिश्वासरे
आपाद मस्तक तमे दोहलि याउछ।

किपरि काटिल राति तमे जाण,
किन्तु भोर हेले
तमे ये ईश्वर नुहँ जणा पड़ियाए
थरे तम मुहँकु चाहिँले।

बयालीस

तुम्हें कौन कहता है ईश्वर? तुम
मक्खन के पुतले हो, आँखों में भर-आँख
आँसू लिए आवाजाही करते हो,
बातें करते-करते सहसा रुक जाते हो, मानो
तुम्हारा गला रुँधा डालता है कई शताब्दियों के
नेपथ्य का हाहाकार।

सब चले जाने के बाद तुम ही
अंधेरे में खड़े रहते हो,
किसी की अनजानी लाश धो-धाकर
फिर तोतली बोली में चिरौरी करते हो।
रात दो घड़ी होने पर मन ही मन
मुस्काते हो, मानो सुन रहे हो
उसके मुँह से प्रेमालाप, मानो उसकी लंबी उँसासों से
सिर से पैर तक तुम सिहर उठते हो।

कैसे बितायी रात यह तुम्ही जानते हो,
पर सुबह होने पर
तुम ईश्वर नहीं हो यह पता चल जाता है
एक बार तुम्हारा मुख देखने पर।

अनिद्रारे लाल आक्षि, लुह बोहिबार
चिन्ह दिशे गण्ड मण्डळ रे,
तोटि पडियाइथाए सते अब चित्कार करिछ
गतिसारा काहा विरुद्धरे।

निज विरुद्धरे किए केबेहे चित्कार
करिलाणि? सुतरा हे अणईश्वर
तमे याहा नुंह ताहा नमे अट बोलि
भाबिले भाबन्तु लोके दुनियायाकर,
मँ जाणिछि तमे सब
क्रोधजर्जरित शोकजर्जरित होइ
क्रमश वयस्क होइ चालिथिब, शेषरे सेपरि
चालियिब सर्बदिन पाइँ।

आस आस पोछिदिग नागाकु नुआंइ
आणि न पारिबा यागुं हतोत्साह तम हृ
तम भाग्य लेखाथिबा असख्य निष्फळ
रक्तपातमानकर छिटिका देहरु।
सचराचरगे केहि फाशी देलाबाला
नाहान्नि कहडिरे बेश बदळाइ

गोपदाण्डे पणि बिजे हअ।

नींद से ललियाई आँखें गालों पर,
निशान दिखते हैं गालों पर,
गला बैठा होता है जैसे कि चीखा हो
सारी रात विरुद्ध किसी के।

अपने ही विरुद्ध भला कोई चीखता है?
इसलिए हे अनीश्वर
तुम जो नहीं हो वह तुम हो यदि ऐसा
सोचते हों दुनिया भर के लोग तो सोचने दो,
पर मैं जानती हूँ तुम अति
क्रोध जर्जरित शोक जर्जरित होते हुए
क्रमशः वयस्क होते रहोगे, अंत में मेरी तरह
चले आवोगे हमेशा के लिए।

आओ आओ पोंछ दूँ ताराओं को झुकाकर
न ला पाने से हतोत्साहित तुम्हारे हृदय को,
तुम्हारे भाग्य मे लिखे असंख्य निष्फल
रक्तपात के छींटों का बदन से।
सचराचर में कोई फाँसी देने वाला
नहीं है, अब फाँसी के मंच से उतर आओ,
गोपपुर की राह में फिर से आन बसो,
भोर-भोर कोहरे में भेष बदलकर।

43

तमेहिँ ईश्वर किन्तु एपरि ईश्वर
जाहांक राजत्व सुरु हेब तांक मरिबार काळकाळ परे
वर्त्तमान विराजित ईश्वरंक राजत्वर अबसान परे
बेळेबेळे दिनपरि अपलक नेत्र रात्रि पाहियिबा परे
सर्वांगरे पटि बांधि तथापि बि हसहम पृथ्वी उपरे

प्रत्यह उदय होई आसुथिबा सूर्य
सर्व शेष थर पाइँ अस्त हेबा परे
प्रथम पवित्र संध्या काळे येतेबेळे
तारामाने फुलंकठुँ एते दूरे आउ
रहिबा विषम मणि आसिबे ओल्हाइ
खड्ग ओ कृपाणंकर काकुति मिनति
काहारिकु शुणायिब नाहिँ
बहु पूर्व काळे ध्वंस होई याइथिबा
मुँहमाने फुटुथिबे कइँ फुल परि;
तमे ठिआ होईथिब जन्ह आलुहरे
हद्र कळे दिग्विजय मारि।

सेदिन मे संध्या बेळे मे राति तापरे
सेपरि असंख्य दिन संध्याबेळ राति आउ किए

तेंतालीस

तुम ही ईश्वर हो लेकिन ऐसे ईश्वर
जिसका राजपाट शुरू होगा उसके मरने के सदियों बाद
वर्तमान विराजमान ईश्वर का राजपाट समाप्त होने के बाद
कभी-कभी दिन-सा पलकों में रात बीत जाने पर
सर्वांग में पट्टी बाँध फिर भी हँसमुख पृथ्वी पर

प्रतिदिन उदय होने वाला सूर्य
अंतिम बार अस्त होने के बाद
पहली पवित्र संध्या में जब
तारे फूलों से इतनी दूर अब
रहना मुश्किल समझ उतर आएंगे
खड्ग और कृपाण की अनुनय-विनती
किसी को सुनाई नहीं देगी
काफी अरसे पहले ध्वंस हुए
चेहरे खिल रहे होंगे कुमुदिनी की तरह
तुम खड़े होगे चाँदनी में
झील किनारे दिग्विजय पूरी करके।

उस दिन उस साँझ उस रात उसके बाद
वैसे ही असंख्य दिन साँझ रातें और कौन

ସର୍ଜ୍ଜନା କରିବ ଯଦି ତମେ ନୁହ ଘଡ଼ଘଡ଼ୀ ପରି
କ୍ରୋଧ ଜର୍ଜରିତ ତମେ ସବୁକାଳେ ଅବୁଝା କିଶୋର
ତମ ସ୍ୱର ନିରୁଦ୍ଦିଷ୍ଟ ହୋଇଯିବ କୋଳାହଳ ଭିତରେ ନିଶ୍ଚୟ
ନିରର୍ଥକ ଶବ୍ଦ ଆଉ ବାକ୍ୟମାନଙ୍କର
ପୁଣି ଦିନୋ ମିଳିଯିବ
ଆମର ଅପରାଜିତ ଭବିଷ୍ୟତ ଭିତରେ କେଉଁଠି
ଆଉ କିଏ ଯଦି ହମେଁ ନୁହଁ
ମନୁଷ୍ୟମାନଙ୍କପରି କାଳକାଳ ଈଶ୍ୱର ତମେ ତ
ଚନ୍ଦ୍ର ପରି ଦିନୁଁଦିନ ହ୍ରାସ ପାଅ ଅବଶେଷେ ଲୋପ ପାଇଯାଅ
ଚଡ଼ାନ୍ତ ଅଂଧାରେ ଯେଉଁ ଅଂଦାର ଉତ୍ତାରେ
ମୁଁ ଜାଣେ ମୋ ଦେହ ସ୍ପଷ୍ଟ ଦିଶୁଥିବ ଜନ୍ହ ଆଲୁଅରେ
ମୁଁ ଜାଣେ ସର୍ବାଙ୍ଗ ମୋର ଶିହରି ଉଠିବ
ସେନେଥର ଯେନେଥର ଚମା ଦେଉଥିବ ।

सृजित करेगा यदि तुम नहीं हो बिजली की कौंध जैसे
क्रोध जर्जरित तुम हर हाल में हठी किशोर हो
तुम्हारा स्वर निरुद्दिष्ट हो जाएगा निश्चित ही कोलाहल में
निरर्थक शब्दों और वाक्यों के
फिर कभी मिल जाएगा
हमारे अपराजित भविष्य में कहीं
यदि तुम और कोई नहीं हो
मनुष्यों की भांति काल-कालांतर तक ईश्वर तुम तो
चंद्रमा की तरह दिन पर दिन ह्रास होते हो
अंत में मिट जाते हो
चरम अंधेरे में जिस अंधेरे के बाद
मैं जानती हूँ मेरा शरीर स्पष्ट दिखता होगा चाँदनी में
मैं जानती हूँ सर्वांग मेरा सिहर उठेगा
उतनी बार जितनी बार तम चमोगे।

44

आजिकालि मुँ तमकु बाहुरे बाहुकु
छन्दि करि धरिथिला बेळे
मने हुए तमे तम देहरु बाहारि
पहंचि जाइछ केउँ अनागत कोळे
ये़उँठि अपरिचित ओ सशस्त्र लोके आकाशकु
रक्ताक्त कलेणि निज निज आशंकारे,
ये़उँठि क्रन्दन रोळ बेळेबेळे शुणा नगले बि
बारम्बार लेउटुछि जुआर भाबरे।
मते दिशे तम मुँह झाँउळि पड़िछि,
सतेकि केउँठि किछि चिन्ह्वर्ण नाहिँ,
असंख्य यु़ग ओ युगान्तर व्यापि थिबा
आलुअ पवन पाणि नथिबा अथर्व
समयरे एकुटिआ रहिछ तमेहिँ।
शोचना सर्वस्व मने पड़िबा तमर
आक्षिरे पालटि या़इ बुन्दाटिए चिकुचिक् करे।
मोठारु लुचाअ मुँह, सतेकि केबळ
तम हसहस मुँह मोते मुग्ध करे!

शुण शुण मोर मध्य दुःख अछि, तम दुःखठारु
ऊणा कि अधिक ताहा किपरि कहिबि?

चौवालीस

आजकल मैं तुम्हें बांहों में बाहें डाल
आश्लेषित कर रखने की बेला में
लगता है तुम अपनी देह से निकल कर
पहुँच गये हो किसी अनागत की गोद में
जहाँ अपरिचित और सशस्त्र लोग आकाश को
करने लगे हैं रक्ताक्त अपनी आशंका से,
जहाँ रोने की आवाज कभी-कभी न सुनाई देने के बावजूद
बार बार लौटती है ज्वार की तरह।
मुझे दिखता है कि तुम्हार चेह ा मुरझा गया है
मानों कहीं कुछ भी चिह्नवर्ण है नहीं
असंख्य युग और युगान्तर में व्याप्त
आलोक हवा पानी गहन अथर्व समय में
अकेले हो तुम ही।
सोचना मर्वस्व स्मरण तुम्हारा
आंखों में एक बूँद बन कर चमकती।
मुझसे छिपाओ नहीं, सच क्या केवल
तुम्हारा हँमता चेहरा मुझे लुभाता है।

मुनो सुनो मेरा भी दुःख है, तुम्हारे दुःख से
कम है या ज्यादा कैसे मैं कह पाऊँगी?

मो समय सरियिबा परे आउ केउँ
उत्तेजना बाकी थिब ये मुँ अकस्मात
तम नाआँ शुणिले हिँ चमकि पडिबी?
आउ केउँ रकत मांस बाकी थिब ये मुँ
मो रक्त मांसकु जाणिशुणि बारम्बार
लंधि तम विशुद्धताठारे पहंचिबि?

तम पाखे पहंचिले प्रतिथर दिशे
ए नई जागारे आउ अन्य नईटिए,
आउ अनय जन्हटिए ए जन्ह जागारे,
प्रतिथर मुँ शिहारि ठिआ होइथाए
सब भिन्न दिशुथिबा कल्पना आगरे।
माटिरे दिने ना दिने मिळेइ यिबार
अदृष्टरे आतंक कि शोचना न थाए,
मँ तम पाखरे पहंचिबा मात्रके हिँ
अदृष्ट-त पूरापूरि भिन्न होइयाए।

संतेबेळे इच्छा हुए तमे रहिथान्त
काळकाळ धरि मोर अनुभूति होइ,
काळकाळ धरि मो सबु अशुद्धता
चालियाउथान्ता मँ तमकु छुइँले हिँ,
तमर अभावस्पाग व्यापि रहि थान्ति
तम निज इच्छाशक्ति रूपे,
तमर येतेक लह शुखाइ दिअन्ति
मो चमार सर्यपरि प्रचंण्ड उत्तापे।

मेरे समय का अंत हो जाने के पश्चात
और कौन सी उत्तेजना बाकी बची होगी जो
अचानक तुम्हारा नाम सुनते ही चौंक पड़ूंगी मैं?
और कैसे रक्तमांस बाकी होंगे जो मैं
भुला कर रक्त और मांस को जानबूझ कर बार बार
उन्हें लांघ कर, तुम्हारी शुद्धता के पास पंहुचूंगी?

तुम्हारे पास पहुंचने से दिखता है
इस नदी की जगह है और कोई नदी,
एक और चांद है इस चांद की जगह,
और हर बार मैं रोमांचित होकर खड़ी रहती हूँ
सभी भिन्न लगतीं कल्पना के आगे।
मिट्टी में एक न एक दिन मिल जाने के
अदृष्ट में आतंक या शोचना न होती।
मेरे तुम्हारे पास पहुंचते ही
अदृष्ट तो भिन्न हो जाता है पूरी तरह से।

उस समय होती है इच्छा कि तुम रहते कालकाल
मेरी अनुभूति बनकर,
कालकाल की मेरी अशुद्धता
चली जाती मेरे तुम्हें छू देने भर से।
मैं तुम्हारे अभावों में व्याप्त होकर रहती
तुम्हारी अपनी इच्छाशक्ति के रूप में।
तुम्हारे सारे आंसू सुखा डालती मैं
मेरे चुंबनों के सूरज की भाँति
प्रखर ऊष्मा में।

ଏ ସବୁ ଦିନେନା ଦିନେ ସରିଯିବ, ତମେ
ରହିଥିବ, ମୁଁ କିନ୍ତୁ ନଥିବି,
ନିଆଁ ପରି କିଛି କାଳ ଜଳି ମୁଁ ତାପରେ
ନିଆଁ ପରି ଲିଭି ଯାଇଥିବି
ଅନନ୍ତ ସମୟ ଯାଏଁ ଜଳିବା ପାଇଁ ତ
ମୋ ପାଖରେ ସାମଗ୍ରୀର ଅଭାବ ନଥିଲା,
ତମର ପ୍ରତ୍ୟେକ ଦିଗଦିଗନ୍ତ ନଛୁଇଁ
ମରିବାକୁ କିଏ ଲୋଡ଼ିଥିଲା?

ଆସ ଆସ ମୁଁ ତମର ଅନ୍ତଃ କରଣ ରେ
ରହିଯାଏଁ ନଈ ଆଉ ବାୟୁ ହୋଇକରି।
ମୁଁ ନଥିବା ବେଳେ ତମ ଆକ୍ଷି ଛଳଛଳ
ହେବା ମାତ୍ରେ ବୋହିଯିବି ଲୁହଧାର ପରି।
ତମ ଦୀର୍ଘଶ୍ୱାସ ପରି ପ୍ରତି ପରବର୍ତ୍ତୀ
ଦୁଃସମୟେ ମୁଁ ସଂଚରିଯିବି।
ସ୍ୱପ୍ନର ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ ଉପାଦାନ ପରି
ତମ ହୃଦୟରେ ତିଷ୍ଠି ଥିବି।

ତମେ ତ ମୋ ହତାଶାର ପରିପୂର୍ଣ୍ଣ ରୂପ।
ସବୁବେଳେ ସବୁଠାରେ ମୋର
ବାହୁରେ ତମର ବାହୁ ଛନ୍ଦି ନାଚୁଥିବି
ମୋ ନାଆଁ ପଛକେ ମନେ ନଥାଉ ତମର।

ये सब खतम हो जाएंगे एक न एक दिन
तुम होगे, पर न होऊंगी मैं
आग की तरह कुछ काल के लिए जल कर
बुझ चुकी होऊंगी मैं आग की तरह
अनंत समय तक जलने के लिए तो
मेरे पास सामग्री की कमी भी नहीं थी
तुम्हारे प्रत्येक दिगदिगंतों को न छूकर
मरना भी किसने चाहा था?

आओ आओ मैं तुम्हारे अंतःकरण में
रह जाऊं नदी और हवा बन।
मैं जब होती नहीं तुम्हारी आंखें तब
छलछला उठें तो आंसू बन बह जाऊंगी मैं।
तुम्हारी गहरी सांस बन कर परवर्ती
दुःसमय में हो जाऊंगी संचारित।
स्वप्न के अप्रत्याशित उपादानों की तरह
तुम्हारे हृदय में मैं बनी रह जाऊंगी।

तुम तो हो मेरी हताशा का परिपूर्ण रूप
हर समय हर जगह मेरी
तुम्हारी बांहों में बांहें डालकर नाचती रहूंगी
तुम्हे मेरे नाम का स्मरण न रहे फिर भी।

45

थरे तमे दिशिथिल येपरिकि जण जण करि
आम सभिंकर आक्षि भितरकु चाहिँ रहिथिल,
तमर नीरब शेष कथा पदकरे
समस्तंकठारू चाहिँल नाहिँ, पवन ओ अंधार पालटि
लेउटि चाहिँल नाहिँ, पवन ओ अंधार पालटि
पवन ओ अंधाररे एका चालिगल।

सभिएँ भाबिलु तमे सते कण दिने
आमरि सहित थिल, आमे नाचुथिलु
ए देहरे नुहें अन्य अक्लान्त देहरे,
आमर ओढ़णा तमे झिंकि देउथिल
कोटि कोटि सूर्य परि उज्वळ हातरे,
भिड़ि नेउथिल पद्मपाखुड़ारे बुजा
निर्जन जागाकु रंगा ओठर हसरे?

तापरे दिन ओ राति यिबा आसिबार
कोळाहळे तम नाआँ शुणागला नाहिँ,
निद्रित असंख्य आशा निराशा उठिले
हसरे कान्दरे निज भूलोक कम्पाइ,
तमे पालटिल एक किम्बदन्ती याकु
गीत करि बोलुथिले भिकारीमाने हिँ।

पैंतालीस

एक बार तुम ऐसे दिखे जैसे एक एक करके
हम सबकी आँखों में झाँक रहे थे तुम,
तुम्हारी अंतिम बोली के पद में
सब से तुमने मांगी अंतिम बिदाई,
मुड़ कर देखा नहीं तुमने, हवा और अंधकार बन
पवन और अंधेरे में अकेले चल दिए।

हम सबने सोचा कि तुम थे हमारे साथ सचमुच
एक दिन, हम नाचती थीं
इस देह से नहीं एक और अक्लांत देह से,
तुम उठा देते थे घूंघट हमारे
करोड़ों सूर्य की भाँति उज्वल हाथों से अपने
खींच कर ले लेते थे तुम. हमें कमल पंखुड़ी से
घिरे एकांत स्थल को, रंगाधर की मधुर हँसी से।

उसके बाद दिन और रात के, आने जाने से
मचे कोलाहल में सुनाई न दिया तुम्हारा नाम और
निद्रित संख्याहीन आशा निराशाएं जाग गयीं
रोने-हँसने से काँपकर अपने भूलोक को।
तुम बन गये एक किंवदन्ती जिसे
भिखारी ही गाते थे गीत बनाकर!

ଆଉ କଣ ଘଟିଥାନ୍ତା? ତମେ ନିଜେ ବିତ
ଯାଇଥିଲ ଶୂନ୍ୟହସ୍ତ ଭିକାରୀଙ୍କ ପରି,
ତମେ ବି ତ ଆସିଥିଲ ଯେପରି ଆମର
ସେପରି ଅକୃତକାର୍ଯ୍ୟ କର୍ମଫଳ ଧରି।

और क्या भी होता? तुम भी तो गये थे खुद
शून्य हस्त भिखारी की भांति
तुम भी तो आये थे हम-सा
अकृत कार्य कर्मफल लेकर।

46

राति त अधारू बळि पड़िलाणि आउ
कान्दुथिबा केतेबेळ धरि?
राति पाहिले हिँ हमे तम परि देखायिब आउ
मँ बि देखायिब निज परि

मुँ त मरियाइ नाहिँ, तेबे ए पर्यन्त
सजाड़ि न काहिँकि मो अलरा बाळकु?
काहिँकि धरिन तम हातरे मो हात,
ए पर्यन्त चाहिँन मो आखि भितरकु?

राति सबु बेळे खुब छोट, सबु बेळे
आमे झुंटि पड़ँ ता सीमारे,
स्वप्न देखा नसरूणु रक्तर जुआर
माड़ियाए शरीर भितरे,

आमे सबु गणि बसुँ—टंका कउड़ि ओ
गाई गोरू जीवनर अवशिष्ट दिन,
छातिर प्रत्येक धड़धड़ आवाज ओ
गाँटिगोटि लुह बुंदामान।

छियालीस

रात तो आधी से अधिक बीत चुकी, और
कब तक यों रोते रहेंगे हम?
रात के बीतने पर तुम तुमसा और मैं भी अपनी सी
दिखने लगंगी।

मैं तो मर नहीं गयी हूँ, फिर किसलिए अब तक
संवारे नहीं है। मेरे बिखरे केशों को?
क्यों पकड़े नहीं हाथ मेरे अपने हाथों से
अब तक झांका नहीं तुमने मेरी आंख के भीतर को?

रात सदा छोटी होती है बेहद
हर पल हम खाते हैं ठोकर उसी की सीमा में
स्वप्न देखने का अंत होते न होते ही
रक्त-ज्वार उठ आता है शरीर में,

हम सब गिनने लगते रुपये पैसे
गाय-गोरु अवशिष्ट दिन जीवन के
छाती की हर धड़कन और
एक एक बूँद आंसुओं को।

शुखि शुक्षि आसुथिबा हातरे खण्डार
छाइ धरि आमे पवनकु
तुकुडा तुकुडा करूँ, केहि काहा कथा
शुणिपारु नाहिँ सकाळकु।

तथापि काहिँकि सारा राति कटियिब
कान्दरे कान्दरे? ए राति व्यतीत
आमे कण होइथान्तु एक उन्मादना
निज बिलयरे यहा निजे उल्लसित?

निजकु निजकु देलुँ बहु जन्म आगुँ
हजिथिबा असीमता मात्र थरकर
स्वेच्छाचार फळे, देख चिन्हवर्ण नाहिँ
आमर अलगा भावे रहिबा दुःखर।

सकाळ आमकु आम भाग्य अनुसारे
पुणि भिन्न भिन्न करि करिब तिआरि
पुणि आम शरीररु भिक मागुथिबा
दिनंकर, गोबरर गन्ध बाहारिब।

आमे कण जाणिनुकि राति पाहिगले
झुण्टबाकु, रक्तस्नान हेबाकु पड़िब,
हेले कण हेला? राति कथा मने पड़िले हिँ
छाएँ छाएँ सबु कष्ट सहि होइयिब।

सूखते आते हाथों से तलवार की छाया
पकड़ कर हम पवन को
टुकड़े टुकड़े करते, कोई किसी की बात
सुन नहीं पाते सुबह

फिर भी क्यों बीत जाएगी सारी रात
रोने रोने में? इस रात के अतिरेक
हम क्या होतीं बस एक उन्मादना
अपने ही विलय से स्वयं उल्लसित?

अपने आपको दे दी जन्मों के पहले
मात्र एक बार के स्वेच्छाचार के कारण
खोयी हुई असीमता, देखो है नहीं कोई पहचान
हमारे अलग रहने के दुःख की।

सुबह हमें हमारे भाग्य के अनुसार
फिर से भिन्न भिन्न कर बनाएगी
फिर से अपने शरीर से भीख मांगते दिन
और गोबर की गंध निकलेगी।

क्या हमें नहीं है पता रात के बीतने पर
ठोकर खाना रक्तस्नान होना ही पड़ेगा
तो क्या हुआ? रात की याद के आते ही
अपने आप दुःख कष्ट सहा ही जाएगा।

47

सिन्दुरा फाटिबा मात्रे मुँ लेउटि आसें,
पुणिथरे आलुअर आज्ञाधीन हुए,
पुणिथरे सत मणे आकाशर नीळवर्णकु ओ
मो आखिकु येउँयेउँ रंग दिशुथाए,
पुणिथरे मुण्ड पोति धीरे धीरे चाले,
किछि मने पडे नाहिँ सिन्दुरा फाटिले।

राति हेबा मात्रे लागे सबु मिछ, किछि,
रंग नाहिँ किछि नाहिँ सच्चराचररे
केते लक्षाधिक राति बितिले मुँ पहंचिबि मते
स्वप्नरे बि देखायाइ नथिबा भाग्यरे!
हृदय अधैर्य हुए, बेगे बेगे पाद पडुथाए,
मुँ चालु न थाए, राति सारा मुँ दउडु थाए।

सैंतालीस

पौ फटते ही मैं लौट आती हूँ,
फिर से रोशनी की आदेशाधीन होती हूँ,
फिर से सच मानती हूँ आकाश के नील वर्ण को और
मेरी आंखों को जो-जो रंग दिखते हैं,
फिर से सिर झुकाकर धीरे-धीरे चलती हूँ,
कुछ याद नहीं आता पौ फटने पर।

रात होते ही लगता है सब झूठ है, कोई
रंग नहीं कुछ नहीं सचराचर में,
लाखों से भी अधिक कितनी रातें बीतने पर मैं पहुँचूंगी मुझे
स्वप्न में भी न दिखे भाग्य में!
हृदय अधीर होता है, जल्दी-जल्दी डग पड़ते हैं,
मैं चल नहीं रही होती, रात भर दौड़ती रहती हूँ।

48

पवन बोहिला बेळे
गछरे लटकि थिबा अधाशुका पत्रंक भितरे
जणायाए तमे अबा मो पाखकु आस
चालि चालि यमुनार आण्ठुए पाणिरे।

तमे जमा आस नाहिँ
तथापि काहिँकि सूर्य पछ आड़े थाइ
इसारा देउछ राति पाहिायिबा परे?
आउ केते बेळ अछि ये आसिबि बोलि
निर्भर जबाब देबि मुँ बि इसारारे?

अड़तालीस

हवा के बहते समय
पेड़ों पर लटके अधसूखे पत्तों में
लगता है शायद तुम आते हो मेरे पास
चल कर यमुना के घुटने तक पानी में।

तुम बिल्कुल आते नहीं
फिर भी क्यों सूरज के पीछे रह कर
करते हो इशारा रात के बीतने पर?
और समय ही कितना बाकी है जो
भरोसा दूं, कह दूँ कि आऊंगी जरूर
तुम्हें इशारे से?

49

तमे मोर परमायु बाटे चालियाइ
अयथा उठाइ देल एते आलुअरे
मुँ किपरि शोइरहि थान्ति येपरिकि
राति जमा पाहि नाहिँ सचराचररे?
तमकु चाहिँबा मात्रे बुझिलि एयाएँ,
मुँ जाणि नथिलि मोर कण प्रयोजन,
तम स्वर शुणायिबा मात्रे बुझिलि कि
नीरवता मते घेरिथिला एते दिन।

तमे हिँ चिन्हाई देल मते मोर आखि आउ कान,
तमर ओ मोर अगोचर
नाना अभिलाष, पणि मो भाग्यरे थिबा
एपरि दिन ये येबे घोटियिब घोर अंधकार,
तमे आउ दिशिबनि, तम स्वर आउ
शुभिबनि, धुडधड पर्दा उहाडरे
मुँ शखिला मांसपिण्ड होइ केउँ दृश्यान्तर पाइँ
बसिथिबि धैर्य सहकारे।

एणिकि एणिकि मोर अहर्निशि कटे
हृतकंपरे, दिन परे दिन
विन तम बाट चाहिँचाहिँ

उनचास

तुमने मेरी आयु की डगर से विचर कर
नाहक जगा दिया इतने उजास में
मैं किस तरह सोयी रहती ऐसे मानो
रात ज़रा भी नहीं बीती है सचराचर में?
तुम्हें चाहते ही समझ गई अब तक
मुझे नहीं मालूम था मुझे क्या चाहिए,
तुम्हारी बोली सुनते ही समझ गई कि
चुप्पी ने मुझे घेर रखा था इतने दिनों तक।

तुम्हीं ने बताया मुझे मेरी आंखें और कान,
तुम्हारी और मेरी अगोचर
नाना अभिलाषाएं, और मेरे भाग्य के
ऐसे दिन कि जब छा जाएगा घोर अंधेरा,
तुम फिर नहीं दिखोगे, तुम्हारा स्वर फिर
सुनाई नहीं देगा, सिलवट पड़े पर्दे की ओट में
मैं सूखा मांसपिंड बनी किस दृश्यांतर के लिए
बैठी होऊंगी धीरज धरे।

अब आगे-आगे मेरे दिन रात बीतते हैं
हृदय की ध्वनियों में, दिन-पर-दिन
बीतते हैं तुम्हारी रात तकते-तकते

ये़दिओ मुँ जाणे तमे आउ थरे मोर परमाय् बाटे यि़ब नाहिँ।

जबकि मैं जानती हूँ तुम मेरी
आयु की राह से नहीं ही निकलोगे, फिर से।

50

केउँठाकु यिबि? सबुठारे
मोर ठिआ हेबा स्थान देखायाए रेखांकित होइ?
अंधाररे लुचिबार स्थान देखायाए
अंधाररे लचियिबि भाबि बसिले हिँ।

गछतळ देइगले पत्रंक भितरे
भुटभाट कथावार्ता शुणे—
उठ उठ जणे याइ सारिछि कि नाहिँ
आम्लिाणि पणि आउ जणे।

पक्षीटिए मो मुण्डकु प्राय दुइँ देइ
उपरकु पुणि उड़ियाए,
धनधन करतालि ध्वनिरे रातिर
निर्जनता फाटिपडुथाए।

तारांकु कहिबि कण? मुँ त सेमानंक
उत्तररे प्रतिशद्ब जाणिछि आगरु,
चुप हेले बि निस्तार काहिँ? शुणुथिबि

पचास

कहाँ जाऊँ हर ओर
मेरे खड़े होने की जगह रेखांकित दिखती है
अंधेरे में छिपने की जगह दिख जाती है
अंधेरे में छिपने की बात सोचते ही।

पेड़ के नीचे से गुजरने पर
पत्तों के बीच की फुसफुसाहट सुनती हूँ–
उठो उठो, कोई गया ही होता है कि
कोई और आ पहुँचता है।

एक पक्षी मेरे सिर को लगभग छूते हुए
पुनः ऊपर उड़ जाता है,
तालियों की गड़गड़ाहट से रात की
निर्जीनता फटने लगती है।

तारों से क्या कहूं?
मैं तो उनके उत्तर का
हर शब्द जानती हूँ पहले से,
चुप रहने पर भी छुटकारा कहाँ?

ଶୁଣିବାକୁ ଥିବା କଥ ପବନ ପାଖରୁ।

मोर भाग्यफल मोर निजर बोलि मुँ
केतेकाळ धरि भाबिथिलि!
मुँ किपरि जाणिथान्ति ताकु बि संसार
तार केउँ तालिकारे योड़िदेब बोलि?

मृत्युर आतंकठारु बळि आतंकरे
मुँ निजकु डेइँ पड़े, धाइँयाए मोर अतीतकु
येतेबेळे लागुथिला तमे जन्म होइछ केबळ
मते खोजिबाकु एवं मते पाइबाकु।

सुनती रहूंगी सुनने की बातें
हवा से।

मेरा भाग्य मेरा अपना है
काफी दिनों तक मैं यही सोचा करती थी।
भला मैं कैसे जानती कि उसे भी संसार
अपनी किसी सूची में जोड़ लेगा?

मृत्यु के आतंक से भी भयावह आतंक में
मैं स्वयं कूद जाती हूँ, दौड़ जाती हूँ अपने अतीत में
जब लगता था कि तुम जनमे हो
सिर्फ मुझे ढूंढ़ने और मुझे पाने के लिए

51

सूर्य बुड़िलेणि किन्तु आउ किछिबेळ
ए आकाश लाल दिशुथिब,
केहि बंशी बजाउनि किन्तु प्रतिध्वनि
आउ किछि दिन शुभुथिब,
केतेथर आसुथिबि ए नई कूळकु,
फेरूथिबि बेशि राति हेले,
सबुबेळे लागुथिब येपरि किए से
मुहूर्तक आगे एठि थिले।

किए से से ? मुँ तांकु भेटिछि
कि भेटिनि मने पड़नाहिँ,
केबळ मो रक्त मांस नथिबा अतीत
दिशुछि मो भविष्यत होई।

इक्यावन

सूरज डूब चुका पर कुछ समय और
यह आकाश लाल दिखता रहेगा,
कोई न बजाते बांसुरी पर प्रतिध्वनि
देगी सुनाई कुछ और दिनों तक
कितनी बार आती रहूंगी मैं इस नदी के तट पर
लौटती रहूंगी देर रात गये
हर पल लगेगा जैसे कोई
था यहीं पल भर पल पहले

कौन हैं वह? मैं उससे मिली हूँ
या नहीं मिली याद नहीं आती
सिर्फ मेरा रक्त-मांसविहीन अतीत
दिखाई देता है मेरा भविष्य बनकर।

52

केतेबेळे आसिथिले पुणि केतेबेळे
ये‌उँ गीत आउ केबे शुभिबनि तार
ध्वनिपरि चालिगले जाणि पारिलिनी।
तांकु चाहिँ बसिथिलि, भाबुथिलि ये से
आसिबा मात्रके तांकु भिड़ि धरिबि मो
बाहुरे, कदापि आउ यिबाकु देबिनी।
मते कण जणाथिला पवन परि से
पलस्तरा झड़ुथिबा कान्थ ओ तोरण
छुइँ देख चालियिबे नीळवर्ण ज्योतिरे उज्वळ
करि देइ चालियिबे मोर बासस्थान
येतेबेळे आक्षि मोर लाखिथिब हातरे पादरे
गढ़ा अंतः सारशून्य बाटमानंकरे ?

एबे त बहुत डेरी हेलाणि, एठारु
चालियाइ सारिबेणि अनेक कोळरू।
से आसन्ति थरे मात्र, भेटिले कोळकु
उठाइ निअन्ति कर्मफळरू, धूळिरू।
यदि भेट हुए नाहिँ दिन जमा कटेनि, केबळ
वयस हिँ बढ़ुथाए, लुह बोहुथाए
तांक पाखकु त नुहें, मृत्युरू मृत्युकु
एकाएका चालिबाकु हुए।

बावन

कब आए थे और कब
जो गीत फिर कभी सुनाई नहीं देगा उसकी
ध्वनि की तरह चले गए जान ही नहीं पाई।
उनकी बाट जोह रही थी, सोचती थी कि वे
आते ही उन्हें भींचकर पकड़ लूंगी अपनी
बाँहों में, फिर कदापि जाने नहीं दूंगी।
मुझे क्या पता कि वे हवा की तरह
पलस्तर झड़ रही दीवार और तोरण
छूकर चले जाएंगे, नीले रंग की ज्योति से प्रकाशमय
करके चले जाएंगे मेरा निवास-स्थान
जब आंखें मेरी तक रही होंगी हाथों से पैरों से
गढ़े अंत:सार विहीन राहों को?

अब तो काफी देर हो चुकी है, यहां से
जा चुके होंगे काफी अरसे पहले।
वे आते हैं सिर्फ एक बार, मिलने पर गोद में
उठा लेते हैं कर्मफल से, धूल से।
यदि भेंट नहीं होती दिन काटे नहीं कटता, केवल
उम्र ही बढ़ती जाती है, आँसू बहते रहते हैं,
उन तक नहीं, मृत्यु से मृत्यु तक
एकाकी चलना पड़ता है।

53

बालि बालि खालि बालि। बालि पृथिवीर
एकरंगी धूळिसान आत्मा, आउ कण मने अछि तार
पाणि मुन्दे मागिबार भाषा र
एंठमेंठि फिंगि दिए बुदाटाए
बा शुखिला घासरू केराए
स्वप्नर प्रमाण भावे, येउँ स्वप्न घटणाचक्रे
से देखि पारिला नाहिँ सपर्ण भावरे।

मण्ड गोळमाळ होइ याइथिबा नागी परि नई
कुआडे कुआडे याए निजे जाणे नाहिँ।
केतेबेळे चुप त से केतेबेळे मनकु मनकु
केते कण कहे यार अर्थ अगोचर ता निजकु।

धीरे धीरे नईकूळू उठि
समय येउँठि सरे सेठाकु यिबाकु
ए दिगन्तव्यापी बालि अतिक्रम करुथिबा अनुपस्थितिर
मस्तकर मुकुटरे झलमल मणिमुक्तापरि
आजिबि उँइबे तारामाने पुनर्वार।

तिरपन

बालू बालू केवल बालू ही। बालूका पृथ्वी की
इकरंगी धूलीसात आत्मा है, और क्या याद है उसे
एक बूँद पानी मांगने की भाषा?
इत उत फेंक देती है एक आध झुरमुटें
या मुट्ठीभर सूखी घास
सपनों के प्रमाण की भांति
जिस स्वप्न को देख न सकी वह
पूर्णतया घटनाप्रवाह में।

सरफिरी नारी की तरह नदी
कहां कहां जाती है खुद नहीं जानती
कभी चुपचाप तो कभी बुदबुदाती रहती
जिसके अर्थ का पता उसे नहीं होगा।

धीरे धीरे नदी तट से उठ कर
समय जहाँ हो जाता है खतम
वहां जाने के लिए इस दिगंतव्यापी
बालू को अतिक्रम कर जाने वाली अनुपस्थिति के
मस्तक के मुकुट पर झिलमिलाते मणियों की भांति
आज भी उगेंगी ताराएं फिर से।

54

केतेदिनुँ आउ नाहिँ
काहाप्रति असंतोष, आपणाकु अचिन्हा बारिबा,
दराण्डिबा, निज भाग्यठारू
प्रतिदिन द्रुततर गतिरे चालिबा,

केतेदिनुँ मुँ ये़परि
पाहाड़ याहार
उपरे पथर आउ
भितरे पथर।

चौवन

कई दिनों से और है नहीं
किसी के प्रति अंसतोष,
स्वयं न पहचानना, टटोलना
अपने भाग्य से प्रतिदिन द्रुततर गति से चलता,

कई दिनों से मानों मैं
बन चुकी हूँ पहाड़
जिसके बाहर पत्थर है
अंदर भी है पत्थर।

55

नमे येणु र्गठि नाहँ येणु तंमे एठाकु कदापि
फेरिबाॅनि तमलागि मोर दुश्चिन्तार
शेषनाहिँ, काळे तमे सहास्यबदने
सबुबेळे यार्उथिब येपरिकि प्रत्येक प्रश्नर
उत्तर रहिछि, काळे तमे दिने हर्जियिब
सेमानक गहळिरे येउँमाने निरुद्विग्न भाबे
चळन्‌शक्ति आशाकरि रहिथिबा प्रतिमामूर्त्ति परि
बा मडक अपेक्षारे बसिथिबा गृध्रपल परि
उत्तर मिळिब बोलि आजीवन चाहिँ रहिथिबे,
काळे तमे महाबळी योद्धामानंकर
पाहुल पड़िबा शद्व शणिशणि पाशोरि यिब ये
फल झाडियार शद्वठारु बेशि निःशद्व भाबरे
दिने नमे आसथिल निजे,
काळे अस्त्रशास्त्रमान चकचक कलाबेळे तमे
भलियिब उज्वळना छळछळ दृष्टि आक्षिर,
काळे गनि हेले तमे भुलियिब दिने
अन्यान्य नाआँ वि थिला रातिरे तमर।

तमलागि मोर दुश्चिन्तार शेष नाहिँ
येण आउ केहि नाहिँ नम भितरे ओ

पचपन

तुम जबकि यहां नहीं हो जबकि तुम यहां कदापि
नहीं लौटोगे तुम्हारे लिए मेरी दुश्चिंता का
अंत नहीं, शायद तुम पुलकित हो
हमेशा रहोगे जैसे कि प्रत्येक प्रश्न का
उत्तर है, शायद तुम कभी खो जाओगे
उनकी भीड़ में जो लोग निरुद्विग्न रूप से
चलने की शक्ति की आस में खड़ी प्रतिमा की तरह
या महामारी की प्रतीक्षा में बैठे गिद्धों की झुंड की तरह
उत्तर पाने की आस में आजीवन तक रहे होंगे,
कहीं तुम महाबली योद्धाओं के
टाप पड़ने की आवाज सुनते-सुनते भूल जाओगे कि
फूल झड़ने की आवाज से भी अधिक शांत हो
कभी तुम आते थे खुद ही;
शायद अस्त्र-शस्त्र चमकते वक्त तुम
भूल जाओगे उज्वलता छल-छल दोनों आंखों की,
शायद रात होने पर तुम भूल जाओगे कभी
दूसरे भी नाम थे रात में तुम्हारे।

तुम्हारे लिए मेरी दुश्चिंता का अंत नहीं
क्योंकि और कोई नहीं है तुम्हारे भीतर और

बाहारे बि यिए रहिथिब,
तम कार्यव्यस्तता कु हमरे उड़ाइ
देउथिब, किन्तु कानडेर
गोटिगोटि तम नीरवता शुणुथिब,
तमे रजाबेश होइ बाहारिला बेळे
बाटकु आगुळि ठिआ होइ याउथिब,
तमठुँ छड़ाइ नेइ सबुकिछि येउँठु आसिल
सेठाकु बाहुड़ि यिबालागि कहुथिब।
किए जाणे पुणिथरे आसिले तमे कि
नूआनूआ बाटरे आसिब!
आहा तमे थरे फेरि आसन्त कि ! तेबे
मुँ तमकु अटकाइ रखन्तिनि मोर अभाबरे,
तमकु कहन्ति खालि केतेक्षणपाइँ
ठिआ हुअ मुँ येउँठि अछि से जागारे,
एठारे कौणसि काळे कौणसि उत्तर
मिळे नाहिँ, मृत्युयाएँ एकुटिआ होइ
रहिबाकु पड़े, एपरिकि प्रश्न पचारिबा
लागि मध्य मनबळे नाहिँ।

तमलागि मोर दुश्चिन्तार शेष नाहिँ
काळे तमे भाबिब ये एणिकि सबुत
नियमानुयायी हेब, आउ अछि केउँ
भविष्यत मरिबा व्यतीत,
काळे तमे भुलियिब ये फेरि यिबार
बेळ एबे मध्य अछि, सबुबेळे थिब,
खुब हेले बाळ पाचि याइथिब किम्बा
प्राणवायु उड़ि याइथिब ...

बाहर भी जो रुका होगा,
तुम्हारी कार्यव्यस्तता को हँसी में उड़ा रहा
होगा, लेकिन कान लगाकर
तुम्हारी एक-एक चुप्पी सुन रहा होगा,
जब तुम राजा का भेष बनाकर निकलोगे
राह रोककर खड़ा हो जाता होगा,
तुम से छीनकर सारा कुछ जहाँ से आए हो
वहीं लौट जाने को कहता होगा।
कौन जाने, फिर एक बार आने पर तुम
किस-किस नए रास्ते से आवोगे।
काश तुम एक बार लौट आते! तो
मैं तुम्हें रोके नहीं रहती अपने अभाव में,
तुमसे बस इतना ही कहती कुछ पल के लिए
खड़े रहो मैं जहां हूँ उस जगह,
यहां कभी भी कोई उत्तर
नहीं मिलता, मृत्यु तक अकेले
रहना पडता है, यहां तक कि प्रश्न पूछने
को भी मन नहीं करता।

तुम्हारे लिए मेरी दुश्चिंता का अंत नहीं,
कहीं तुम सोचोगे कि अब तो सारा कुछ
नियमानुसार होगा: और बचा ही कौन-सा
भविष्य है मरने के सिवाय,
शायद तुम भूल जावोगे कि लौट जाने का
समय अभी भी है, हमेशा रहेगा,
अधिक से अधिक बाल पक गए होंगे या
प्राण-पखेरू उड़ चुका होगा ......

56

किए जणे कहिला ये
तमे फेरि आसिछ एठाकु।

सभिएँ उच्चाट हेले, एपरिकि नई
पवनरे देखागला नूआ चंचलता,
वर्षवर्ष व्यापिथिबा शृंखिलापणरु
क्रमेक्रमे फेरि आसिथिले वृक्षलता।

मते किन्तु जणाथिला
तमर फेरिबा मिछ, केवळ गुजब,
आगकआगक खालि चालिथिब, दूरनर होइ
चालिथिब, अकस्मात दिने
तमक कल्पना आउ करि हेब नाहिँ।

सभिएँ उच्चाट हेले, मुँ किन्तु चाहिँलि
तमे हेले न फेरन्त, तम फेरिबार
सम्वाद हुअन्ता हेले कपोळकल्पित,
माटिरे ओ पवनरे याहा मिशि याइछि अथवा
याहा मिशिआसुअछि मे मबुकु हेले
नकरन्त पुनरुज्जीवित।

छप्पन

किसी ने कहा कि
तुम लौटकर आ रहे हो यहां।

सभी उतावले हुए, यहां तक कि नदी
हवा में दिखाई दी नई चंचलता,
वर्षों से व्याप्त सूखेपन से
क्रमशः उबरने लगे पेड़-पौधे।

पर मैं जानती थी
तुम्हारा लौटकर आना झूठ है, मिथ्यापवाद है,
तुम आगे से आगे जा रहे होगे, दूर दूर
जा रहे होगे, अचानक एक दिन
तुम्हारी कल्पना फिर नहीं की जा सकती।

सभी उतावले हुए, लेकिन मैंने चाहा
काश! तुम न लौटते, तुम्हारे लौटने का
समाचार कपोल-कल्पित ही हो,
मिट्टी और हवा में जो मिल चुका है या
जो मिलता जा रहा है काश उन सबको
न करते पुनर्जीवित।

ତମେ ଡାକିଦେଲା ମାତ୍ରେ ସଭିଏଁ ଚାହିଁବେ
ନିଜନିଜ ଦ୍ୱିଧାଗ୍ରସ୍ତ ମରିବାପଣରୁ
ଲେଉଟି ଆସିବେ, ପୁଣିଥରେ ଯୋଡ଼ାଯୋଡ଼ି କରି
ହୃଦୟ, ଅଂଗପ୍ରତ୍ୟଂଗ, ଘଟଣାବଳୀଂକୁ
ଅତିକ୍ରାନ୍ତ ସମୟର ମନୋନୀତ ଉଲ୍ଲାସ ଭିତରେ
ରହିଥିବେ କାଳକାଳ ଧରି ।

କିପରି ଫେରିବେ ଆଉ କିଛିକ୍ଷଣ ପାଇଁ
ଛାଟିପିଟି ହେବେ, କିଛି ଉଚ୍ଛୁର କରିବେ,
ଜରାଜୀର୍ଣ୍ଣ ବା ବିଲୁପ୍ତପ୍ରାୟ ଚେହେରାରେ
ଖବ ବିକଳାଂଗ ଖବ କଦର୍ଯ୍ୟ ଦିଶିବେ ।

ସେମାନେ ଯାଆନ୍ତୁ, ତାଂକୁ ମିଛରେ ମିଛରେ
ଡାକ ନାହିଁ । ତମେ ନିଜେ ବିତ
ଆଉ ଫେରି ଆସିବନି ବିତିଯାଇଥିବା ସମୟକୁ,
ନୀଳବର୍ଣ୍ଣ ପ୍ରତିଶ୍ରୁତିକୁ ବା ଲାଜଲାଜ
ଆଲିଂଗନକୁ ବା ସର୍ବ ପ୍ରଥମ ଥରର
ଗୋପନୀୟ ପରିକଳ୍ପନାକୁ ।

ସେମାନେ ଯାଆନ୍ତୁ ମାଟି ଲେଉଟାଇ ନେଉ
ସେମାନଂକ ଚେହେରାକୁ, ପବନ ଫେରାଇ
ନେଉ ତାଂକ ନିଶ୍ୱାସକୁ, ସମସ୍ତେ ଶୂନ୍ୟରେ
ମିଶିଯାଆନ୍ତୁ, ତମେ ଯେଉଁପରି
ପ୍ରାୟ ମିଶିସାରିଲଣି ଆଦ୍ୟପ୍ରାନ୍ତ ନଥିବା ନିଜର
ଆଲୋକରେ ବା ଅଂଧକାରରେ ।

तुम्हारे पुकारते ही सभी चाहेंगे
अपने-अपने दुविधाग्रस्त मृत्यु से
लौट आएं, फिर से जोड़-जाड़कर
हृदय, अंग-प्रत्यंग, घटनाओं को
बीते समय के मनोनीत उल्लास में
रहें युग-युग तक।

और कैसे लौटेंगे? कुछ क्षणों तक
छटपटाएंगे, कुछ देर लगाएंगे,
जीर्ण-शीर्ण या लगभग विलुप्त चेहरों में
अति विकलांग अति कदर्य लगेंगे।

जाएं वे लोग, उन्हें नाहक मत
पुकारो। तुम स्वयं भी तो
अब नहीं लौटोगे बीते समय में,
नीलवर्णी शपथों में या लजीले
आलिंगन में या सबसे पहली बार की
गोपनीय परिकल्पना में।

जाएं वे लोग, मिट्टी लौटा ले
उनका चेहरा, हवा लौटा ले
उनकी सांसें, सभी शून्य में
समा जाएं, जिस तरह तुम
लगभग मिल चुके हो आद्योपांत रहित अपने
प्रकाश में, या अंधेरे में।

57

मुँ जाणिछि तमे मते भलपाअ तेणु
तमे दिने मो मनरे जागा हेलाभळि स्मृतिटिए
रखि देइ मरियिब इच्छा कले तार
उठ टिपि देउथिबि, छातिरे आउजि
याहा इच्छा हेब ताहा कहि जाउथिबी,
मो देह उपरू तम अमळिन हात
ठेलि देबि येतेथर इच्छा सेतेथर।

तमे इच्छा करिथिले नक्षत्र माने त
नमपाइँ बाट छाड़ि घुंचि याइथान्ते,
पवन निश्चळ होइ याइथान्ता, नदी समुद्ररे
निआँ जळि उठिथान्ता हुत्हुत् होइ,
गछपत्र बदळरे पाउँश थाआन्ता।
मुँ कण थाआन्ति र थिले बि मुँ कण
जाणि पारूथान्ति तम आरंभ ओ शेष

तमे किन्तु सबुकिछि यथास्थाने रखि देइ यिब
बिदेशकु किछिदिन याइथिबा स्वामीपरि तमे
लुगा केते खण्ड छड़ा किछि नेब नाहिँ।
यआड़े चाहिँले तमे दिने थिल बोलि

सत्तावन

मुझे पता है कि तुम प्यार करते हो मुझसे
इस लिए मेरे मन में जगह होने लायक
स्मृति एक रख कर मर जाओगे, चाहूं तो
दुलारती रहूंगी उसके होंठों को
छाती पर सुला कर उसे जो मरजी करती जाऊंगी
मेरी देह पर से तुम्हारे अमलिन हाथ
सरकाती रहूंगी जो मरजी उतनी बार।

तुम चाहने तो नक्षत्र भी राह बनाकर
तुम्हारे लिए हट जाते
पवन हो जाता निश्चल, नदी समुद्र में
आग जल उठी होनी धधकती
पेड़ पत्तों के बदले राखभर होता।
क्या मैं होती हूँ? अगर होती भी तो
क्या मैं जान पाती
है कहाँ तुम्हारा आरंभ और शेष?

पर तुम सब कुछ सही जगह रख कर जाओगे
प्रवास यात्रा पर गये पति की भांति तुम
एक-आध कपड़ों के अलावा कुछ भी न लोगे
जिधर भी देखूं, जहां एक दिन तुम थे इसलिए

ମଁନେ ପଡ଼ୁଥିବ. ତମର ଅଲରା ବାଲ ଛୁଁଇ ଦେଲା ବେଳେ

मँने पड़ुथिब. तमर अलरा बाल छुँइ देला बेळे
चमकि पड़िला परि मुँ चमकि पड़ुथिबि केउँ
पत्ररे फूलरे मोर हात बाजिले हिँ।

येते थर इच्छा हेब सेते थर अंधार भितरु
तमकु ओटारि आणि मोर अगणाकु
आज्ञा देबि ठिआ हुअ एठि येउँठारे
तम पूरा प्रतिबिम्ब नईरे पड़िब,
किम्बा सेठि येउँठारे पाहाड़ सेपाखु
जन्ह उएँ, बा अन्यत्र येउँठारे राति
पाहि पारे नाहिँ मोर विनानमतिरे।

मुँ कि क्षुद्र ! तमे किन्तु मो अयोग्यपण
बुझिपारि मोठारू बि क्षुद्रतर होइ
निजर जीवन काळ रखिल मो जीवनकाळरे
येपरिकि मुँ मरिबायाएँ येतेबेळे
चाहुँथिबि सेतेबेळे देखिबि ये तमे
मो परि, ओ मुँ ठिक तमपरि
मरिबाक बंचिबारे परिणत करे।

याद आती होगी, तुम्हारे बिखरे बालों को
छूते समय चौंकने की भांति
किसी पत्र या फूल को छूते ही
चौंकती रहूंगी।

जितनी बार इच्छा होगी उतनी ही बार अंधेरे से
तुम्हें खींच कर लाकर, मेरे आंगन को
आदेश करूंगी यहाँ खड़े रहो तुम
जहां से तुम्हारा पूर्ण प्रतिबिंब होगा
प्रतिबिंवित नदी पर
या उस जगह जहां पहाड़ की उस ओर से
चाँद उगता है, या अन्यत्र जिस जगह रात
बीत जाती नहीं मेरी अनुमति बिना।

मैं कैसे क्षुद्र हूँ ! पर तुम मेरी
अयोग्यता समझ मुझसे भी क्षुद्रतर होकर
अपने जीवनकाल रख दिए मेरे
जीवनकाल में
जैसे कि मैं मरते समय तक
जब भी चाहूंगी तब देखूंगी कि तुम
हो ठीक मेरी तरह और मैं ठीक हूँ तुम्हारी तरह
मरने को जीने में बदल देती हूँ।

58

पथरर सुबास हे
हाहाकार प्रत्येक फुलर
चन्द्रर असह्य ताप
शीतळना ज्वळन्त सूर्यर
मुँ निजे निजकु चिठि लेखिबार भाषा
सबु हताशार हसहस सहिष्णुता
सबु अलपल चाहिँ रहिबार युग परे युग
सबु विद्रोहर सर्वशेष निष्फळता

अभिळाषमानंकरे गढ़ा दिव्य सुन्दर प्रतिमा
मरुभूमिमानंकर श्यामळ अतीत
पत्रपुष्प मण्डि होईथिबा वर्षा ऋतु
माटिरँ तारांकु डेइँ स्पष्ट चलापथ
दिन आउ राति मिशा अद्भुत समय
समुद्रर क्षणस्थायी स्तब्धतार चिरन्तन काळ
अधादेखा स्वप्नंकर आश्वासनामय शेषभाग
हठात चमकि उठि पड़िबार अस्तव्यस्त बेळ
फर्चा होई आसुथिबा आकाशरे अनिच्छुक तारा
अव्यक्त शब्द ओ वाक्य बिदाय बेळर
बन्धनरे पड़िथिबा आतिष्ठ पवन
सिंहासनारूढ़ कुज्झटिका कळेबर

अठावन

हे पत्थर की सुगंध
हाहाकार हर फूल के
चंद्र के असह्य ताप
शीतलता ज्वलंत सूर्य की
मैं स्वयं को स्वयं पत्र लिखने की भाषा
सारी हताशा की हँसमुख सहिष्णुता
सबकुछ अपलक निहारने के युग के बाद युग
सब विद्रोह की अंतिम निष्फलता

अभिलाषाओं से बनी दिव्य संदर प्रतिमा
रेगिस्तानों का श्यामल अतीत
पत्र-पुष्प से मंडित वर्षा ऋतु
माटी के तारों तक स्पष्ट राह
दिन और रात मिला अद्भुत समय
समुद्र की क्षणिक स्तब्धता का चिरंतनकाल
आधे देखे सपने का आश्वासन भग शेष भाग
सहसा चौंककर उठने का अस्तव्यस्त समय
स्वच्छ होते जाते आकाश में अनिच्छित तारा
अव्यक्त शब्द और वाक्य हूँ बिदा का
बंधन ग्रस्त आकुल हवा
सिंहासन पर आसीन कलेवर कुहासे का

नईर अतळतळे शोइथिबा प्रतिच्छवि
अमाप संपद थिबा अगोचर ख्रणि
शून्यरे अंकित उन्मादनार आकृति
बिजुळीर केहि शुणि नथिबा काहाणी
मो अयोग्यतार परिणाम हसिहसि
सहुथिबा प्रियतम तमकु त तमे यिबा परे
फेराई आणिबा भाग्य मोर नाहिँ, मरिबा पर्यन्त
तमर तकडामान योड़थिबी एपरि भावरे।

नदी की सतह पर लेटी प्रतिच्छवि
अमाप संपदा भरी अगोचर खान
शून्य में अंकित उन्माद की आकृति
बिजली की किसी ने न सुनी कहानी हूँ
मेरी अयोग्यता का परिणाम मुस्कुराते हुए
सहने वाले प्रियतम तुम्हें तुम्हारे जाने के बाद
लौटा लाने का सौभाग्य मेरा कहाँ, मरने तक
खण्ड-खण्ड तुम्हें जोड़ती रहूंगी इसी भाँति।

59

फेराब फेराअ तांकु,
तमर जीवनकाळ परि छोटकाट,
कइदीखानारे तांकपाइँ जागा काहिँ?
से त बणजंगलर निश्वास य़ाहाकु
धरि हुए नाहिँ किम्बा देखि हुए नाहिँ,
य़ाहार छुँइबा मात्रे बाळ फिटि य़ाए,
रहिबा जागारे शाढ़ी जमा रहे नाहिँ।

तमे त निःशब्द तांकु करि सारिलणि,
जरी पोशाकरे ढांकि देइ सारिलणि

श्यामल पर्वत परि फुंगुळा देह कु,
खालि बाकि रखिअछ दिने चिताग्निरे
पोड़ि देबा लागि तांक सुन्दर मुहँक्।

फेराअ फेराअ तांकु, सेत घड़घड़ि
नाद य़ाहा बंशीस्वर परि शुणाय़ाए,
अविश्रान्त नचान्ति, मुँ जन्मरू जन्मकु
मरिबारू मरिबाकु नाचिनाचि य़ाए।

उनसठ

लौटा दो लौटा दो उन्हें,
तुम्हारे जीवनकाल जैसे छोटे-मोटे
कारागार में जगह कहाँ उनके लिए?
वे तो वन-जंगल की साँस हैं जिसे
पकड़ नहीं सकते या देख नहीं सकते,
जिसके छूने भर से केश खुल जाते हैं,
साड़ी जहां रहनी चाहिए नहीं रहती।

तुम तो कर चुके हो निःशब्द उन्हें
की पोशाक में ढँक चुके हो

श्याम पर्वत-सी खुली देह
सिर्फ बाकी बचा रखा है किसी दिन चिताग्नि में
जलाने को उनका सुंदर मुख।

लौटा दो लौटा दो उन्हें, वे तो बिजली की कौंध भरी
नाद हैं जो बाँसुरी-सी सुनाई पड़ती है,
अनवरत नचाते हैं, मैं जन्म से जन्म तक
मरने से मरने तक नाचती रहती हूँ।

କହ ତାକୁ କିଏ ଜଣେ ଆସିଛି ଯାହାର
ପାଦ ରକ୍ତସରସର ଅଥଚ ଅଥୟ,
ତଥାପି ଯଦି ସେ ବସି ରହିବେ ତାଙ୍କୁ ମୋ
ପରମାୟୁର ଏ ଅବଶିଷ୍ଟାଂଶ ଦେଖାଅ।

से तमकु कहिथिबे कि कहि नथिबे,
मुँ तांकर पत्नी याअ मुँ आसिछि बोलि
कहिदिअ उछुर नकर।
आपे आपे से बाहारि आसिबे येपरि
पचरा नयाइथिबा प्रश्नर उत्तर।

से थिबा जागारे बुढ़ा होइ आसुथिबा
रजा जणे बसिथिब जरी पोशाकरे,
याहायाहा पचारिब सबुरि उत्तर
देउथिब तमे बुझि पारिबा भाषारे।

कहो उनसे कोई आया है कोई जिसके
पग खून से तर हैं पर अधीर हैं,
फिर भी यदि वे बैठे रहें तो उन्हें मेरी
आयु का यह अवशिष्टांश दिखाओ।

उन्होंने तुम्हें बताया होगा या नहीं,
मैं उनकी पत्नी हूँ जाओ कह दो उन्हें कि
मैं आयी हूँ, देर न करो।
खुद व खुद वे चले आएंगे
अनपछे प्रश्न के उत्तर की तरह।

उनके स्थान पर वृद्ध होता
एक राजा बैठा होगा ज़रदोजी की पोशाक में,
जो-जो भी बातें पूछेगा सबका उत्तर
दे रहे होगे तुम समझ आनेवाली भाषा में।

60

ତମେ ସାଂଘାତିକ ଭାବେ
ଆହତ ହୋଇଛ ବୋଲି ଖବର ଆସିଛି।

ଏପରି ଘଟିବ ବୋଲି ବହୁତ ଆଗରୁ
ତମେ ନିଶ୍ଚେ ଜାଣିଥିବ, ଝଡ଼ ହେବା ଆଗୁଁ
ତମେ ଶୁଣି ପାରିଥାଅ ନିଶ୍ୱାସ ତାହାର,
ପ୍ରତ୍ୟେକ ଫୁଲକୁ ଚିହ୍ନ କଢ଼ି ନଧରୁଣୁ,
ନଈର ବୋହିବା ଶବ୍ଦ ମେଘର ଆକୃତି
କଣ ହେବ ତମକୁ ଗୋଚର।
ସୂର୍ଯୋଦୟ ହେବା ଆଗୁଁ ଏହିପରି ଦିନ
ଆସୁଅଛି ବୋଲି ଜାଣିଥିବ,
ତାକୁ ମଧ୍ୟ ଅନ୍ୟ ସବୁ ଦିନ ଆଉ ଅନ୍ୟ ସବୁ ଦିନର ଘଟଣା
ପରି ତମେ ନିଜେ ଗଢ଼ିଥିବ,
ଅଥଚ ସଭିଙ୍କୁ ଏହା ଆକସ୍ମିକ ଦୁର୍ଘଟନା ବୋଲି
ପ୍ରବଞ୍ଚିତ କରି ଚାଲିଥିବ।

ମୁଁ ବି ବେଳେବେଳେ ଭାବେ ଯୋଗଦେବି ବୋଲି
ତମ ଚକ୍ରାନ୍ତରେ ତମ ଅଜ୍ଞାତସାରରେ,
ଅତ୍ୟଳ୍ପ ସମୟ ପରେ କିନ୍ତୁ କ୍ଷମା ମାଗେ
କେତେ କାଳୁଁ ଉପେକ୍ଷିତ ମୋ ଦେହ ପାଖରେ,

साठ

तुम गंभीर रूप से
आहत हुए हो ऐसी आयी है खबर।

ऐसा होगा यह काफी पहले से
तुम्हें अवश्य पता होगा, आँधी के पहले
तुम सुन चुके होते सांसों को उसको
प्रत्येक फूलों को पहचानते हो कली बनने के पहले
नदी के बहने की ध्वनि, बादल की आकृति
कैसी होगी तुम्हें रहता है पता।
सूर्योदय होने के पहले
तुम्हें पता होता है यह दिन ऐसा होगा।
उसे भी अन्य सभी दिन, और दिनों की
भांति तुम्हीं ने बनाया होगा
फिर भी सबको आकस्मिक दुर्घटना कह
प्रवंचित करते जाते हो।

मैं भी कभी कभी सोचती हूँ कि करूं योगदान
तुम्हारे चक्रांतों में तुम्हारे अज्ञात में
पर थोड़े ही समय के पश्चात क्षमा मांगती हूँ
अरसे से उपेक्षित मेरी देह से मैं

ତାକୁ ମାଗେ ଦେଉ ବୋଲି
ତମର କଳ୍ପନାତୀତ ଲୁହ, ଅଂତର୍ଦାହ,
ପୁଣିଥରେ ମୋ ଯୌବନ ଯାହାକୁ ଦେଖିଲେ
ହତବୁଦ୍ଧି ହୋଇଯିବ, ପୁଣିଥରେ ମରିବାର ଏ ମିଛିମିଛିକା
ଖେଳ ସୁରୁ କରୁ କରୁ କଟିଯିବ ଅନେକ ସମୟ।
ସେତିକି ସମୟ ତୁମେ ଯମୁନାର ନୀଳ ପାଣି ଦେଖି
ଆତ୍ମହାର ହୋଇଯିବ, ଫୁଲମାନଂକର
ନାନାବର୍ଣ୍ଣ ଉପଦ୍ରବ ଦେଖି ସ୍ତଂଭୀଭୂତ ହୋଇଯିବ,
ନକ୍ଷତ୍ର ମଣ୍ଡଳ ତୁମ ଆଜ୍ଞାଧୀନ ଏହା
ଭୁଲିଯାଇ ଯଂତ୍ରଣାରେ ଛାଟିପିଟି ହେବ,
ଛାଟିପିଟି ହେବ ଆଉ କଷ୍ଟ ଭୋଗୁଥିବା
ରୋଗୀପରି ମୋତେ ଚାହୁଁଥିବ,
ଆଖିରେ ଆଖିରେ ମୋତେ ରହିଯାଅ ବୋଲି
ଡାକିଦିଅ ବୋଲି କହୁଥିବ।

ମୁଁ ଚାହୁଁଛି ଉଡ଼ିଯାନ୍ତି ସେଠାକୁ ଯେଉଁଠି
ତମ ଦେହ ଯଂତ୍ରଣାରେ ଛାଟିପିଟି ହୁଏ
ଚୁପଚାପ ଘଡ଼ଘଡ଼ି ପରି, ବା ଘୂର୍ଣ୍ଣି ବାୟୁରେ
ପଡ଼ିଥିବା ପତ୍ରପରି, ଗୋଟିଏ ନିଷ୍ଫଳ
ମୁହୂର୍ତ୍ତରି ଯଗଯଗ ଧରି ଯାହା ଧୂରେ।
ତମର ଦେହରଁ ପ୍ରୀତି କୋଣେ ରଖିଯାନ୍ତି
ତମର ସମସ୍ତ ଲୀଳା ଅପେକ୍ଷା ଆହୁରି
ଆଦିମ ଲୋଡ଼ିବା ଭାବ, ଶିରା ପ୍ରଶିରାରେ
ବାରଂବାର ବାଟ ହୁଡ଼ି ଯାଉଥିବା ରକ୍ତର ଅନ୍ଧତା
ଭର୍ତ୍ତି କରି ସାରି ତାକୁ ଧୀରେ ଖୁବ ଧୀରେ
ଧରି ଧରି ଆଣନ୍ତି ମୁଁ ଯମୁନା କୂଳକୁ,

उससे मांगती हूँ दे मुझे
तुम्हारे कल्पनातीत आंसू अंतर्दाह,
फिर से यौवन मेरा जिसे देखने से
हतबुद्धि हो जाओगे, फिर से मरने का
झूठमूठ का वह खेल शुरू करते करते
बीत जाएगा काफी समय,
उतने समय में तुम देख कर नीले पानी यमुना के
आत्महरा हो जाओगे, फूलों के नाना वर्णो का
उपद्रव देख स्तंभीभूत हो जाओगे
नक्षत्र मंडल तुम्हारे आज्ञाधीन हैं यह
भूल कर यंत्रणा में छटपटाओगे तुम,
छटपटाने लगोगे और
पीड़ा भोगते बीमार की भांति
मेरी ओर ताकते रहोगे
आंखों ही आंखों में मुझे रूक जाओ
पुकारो कहते रहोगे।

मैं चाहती हूँ कि उड जाउं जहाँ
तुम्हारी देह छटपटाती है पीड़ा में
चुपचाप बादलों की गर्जना समान
या घूर्णिवायु में पड़े पत्ते की तरह
एक निष्फल मुहूर्त में
युगयुग से जो घूम रहा है।
तुम्हारी देह की हर कोने में रह जाती
तुम्हारी हर लीलाओं से अधिक
और भी आदिम चाहने के भाव,
नस नस शिराओं में बारबार राह भटक कर
बहने वाले रक्त की अंधता
भर कर उसे धीरे खूब धीरे
पकड़ कर लाती मैं यमुना के तट पर,

छोट छोट दुष्टामिर
बड़बड़ सुखर रातिकु,
लुह सुड़ँबुडु ये़उँ बुझामणा सेठाकु ओ मोर
बाहु, जंघ, उरजस्थळकु
सेठि तमे देइथिबा नीळ दागमान
झलमल करूथान्ते, तमर असार
चन्द्र तारा दिशुथान्ते नितान्त मळिन।

तमेत काहार नुहँ, अथच सभींकु
डाकिआणि रखिदिअ आपणार उदासीनतारे।
तमकु दिअन्ति सतसत देहटिए,
मो वर्ष वर्षर दुःख ईर्षा आउ आकांक्षार भाषा
वास्तविक शुभन्ता कानरे,
हात बुलुथान्ता मोर सर्वांगरे, तमें गढुथिबा
ब्रह्माण्डमान कि छोट किम्बा मरिया़इथिबा
हृदय बुझन्ता दूरेथिबा किम्बा मरिया़इथिबा
लोकक् अपेक्षा कराया़ए केड़े अधैर्य भावरे,
शिखान्ति किपरि ये़उँ दिन चालिगला
ताकु झुरिबाकु पड़े, दिहघषा जीवन पाखरू
कि मार्गरि खसिया़इ हुए—
प्रथमे उषुम हातटिए, तामरे से हातर छाइकु
धरि चालुथिब एपरि भावरे
चालु चालु जन्म परे जन्म बितिया़ए।

छोटे-छोटे नटखटपन की
बड़ी-बड़ी सुखों की रात को
आंसू भीगे समझौतों के पास
और मेरी बांह, जांघ उरजस्थल को,
वहां तुम्हारे दिये नीलेनीले दाग
झिलमिलाते रहते और तुम्हारे
असार चंद्र तारा दिखते
बेहद मलिन।

तुम नहीं हो किसी के, फिर भी सब को
पुकार कर रख देते हो अपनी उदासीनता में
तुम्हें देती सचमुच की देह एक
मेरी वर्षों की ईर्ष्या, आकांक्षा और दु:ख की भाषा
वास्तव में सुनाई देती,
हाथ फिरते होते मेरे सर्वांग पर
और तब तुम समझ जाते कि
किस भांति छोटा है, तुम्हारे यह रचित ब्रह्माण्ड,
हृदय समझता दर दूर हुए या मृत
लोगों की प्रतीक्षा, किस अधीरता लिए
की जाती है, सिखा देती किस तरह
बीते दिनों की याद कर होता है बिसुरना,
धूले मिले जीवन के पास से
किस मार्ग से खिसकना संभव होता है
पहले ऊष्मा भरा एक हाथ, फिर उस हाथ की छाया को
पकड़ कर चलते रहोगे
इसी तरह चलते चलते
जन्म के पश्चात जन्म बीतते जाएंगे।

61

तमे आउ नाहँ बोलि खबर आसिछि।

मुँ तमर अन्यतम विधवा नुहें कि
तम शब पछे पछे याउथिबा लोकंक भितरू
जणे नुहें, तमर शब त
बहु दूर बृन्दावनठारू।

सूंथारे सिंदूर मोर
एबे एबे बेशी लाल दिशे।
लोकंक विनोदपाइँ नाचिबा कुदिबा
छाड़िदेइ आस बरवेशे।

कन्यापरि मुँ पिंधिपि
अळंकार, पाट पीतांबरी
येते थट्टा अपयश सबुरि जबाब
देबि चुड़ि झम् झम् करि।

इकसठ

तुम अब नहीं रहे समाचार आया है।

मैं तुम्हारी एक और विधवा नहीं
तुम्हारे शव के पीछे-पीछे जाने वाले लोगों में से भी मैं
नहीं, तुम्हारा शव तो
बहुत दूर होगा मेरे वृंदावन से।

माँग का सिंदूर मेरा
अभी भी अधिक लाल दिखता है।
लोगों के विनोद के लिए नाचना-कूदना
छोड़ आओ दूल्हा बनकर।

वधू की तरह पहन रखा है
आभूषण, वस्त्र पीतांबरी,
जितनी भी हँसी-ठट्ठा अपयश है सबका उत्तर
दूँगी चूड़ियाँ खनखनाकर।

तमे आउ नुहँ काहा
पिता पुत्र स्वामी
आमर बिदायदिन पूर्वराति परि
आजि तमे शुद्ध चगलामि,
ध्वनिपरि छिगुलाअ, छुईंदिअ
मो कुमारी निर्जनपणकु
कांदिबाकु गलाबेळे कुतुकुतु कर
मो निष्पंद चाहिँरहिबाक्।

जूइरे स्थापना करि
तमर शरीर
सेमाने देखिबे निआँ जाळिदेइय़।ए
य़ेतेक संपर्क थिला तमर तांकर।

घरकु फेरिबे, पुणि
दिनाकेते परे
तमे आर नथिबार शून्यस्थान पूर्ण करूथिबे
तमर स्मृति समेत नानादि कथारे।

मुँ किन्तु पारूनि आउ
रोकि मोर सुखसन्तोषकु।
तमे य़दि तांकवाइँ नमरि थांत मुँ
गोटापणे पाइथांति किपरि तमकु?

अब नहीं हो तुम किसी के
पिता पुत्र स्वामी
हमारे विदा के दिन की पूर्व रात्रि-सा
आज तुम पूर्ण चंचल हो,
ध्वनि-सा छेड़ देते हो, छू देते हो
मेरी कुवाँरी निर्जनता, मेरे
गे पड़ने पर, गुदगदी करते हो
निस्पंद मेरे देखते रहने पर।

चिता में रखकर
तुम्हारा शरीर
वे लोग देखेंगे आग जला डालती है
जितने भी सबंध थे तुम्हारे उनके।

घर लौटकर फिर
कुछ दिनों बाद
तुम्हारे न होने का रिक्त स्थान भर रहे होंगे
तुम्हारी स्मृति समेत नाना बातों में।

किंतु मैं नहीं पा रही रोक
अब अपने सुख-संतोष।
यदि तुम उनके लिए न मरे होते मैं
भला पूरी तरह कैसे पा सकती थी तुम्हें?

काहारिकु जणानाहिँ तमे अछ, तेणु
मुँ नईकु आसिबा बाटरे
पछे पछे आसिबेनि केहि,
सेमाने समस्ते मते भुलियिबे किंबा
शोइथिबे अचेतन होइ
येतेबेळे मुँ तमकु भिड़ि धरिथिबि
मो छातिरे, येतेबेळे मो सर्वांगसारा
तम हात बुलि याउथिब,
येतेबेळे बाधा देबा किंबा पदे कथा कहिबाकु
मोर आउ सामर्थ्य नथिब,
येतेबेळे मरि पारू नथिबि अथच
जीइँबा बि पूरा असंभव।

कोई नहीं जानता तुम जीवित हो, इसलिए
मेरी नदी आने की राह में
पीछे-पीछे कोई नहीं आएगा,
वे सभी मुझे भूल जाएंगे या
सोये रहेंगे गहरी नींद
जब मैं तुम्हें भींचकर पकडी होऊगी
अपनी छाती में, जब मेरे सर्वांग पर
तुम्हारा हाथ फिर रहा होगा,
जब बाधा देने या कुछ कहने की
मुझमें सामर्थ्य नहीं होगी,
जब मर नहीं पा रही होऊगी और
जीना भी होगा पूर्ण असंभव।

परिशिष्ट

अनुकथन

इस पुस्तक में राधा पर लिखी गयी कविताएं संकलित हैं, आज के युग में पौराणिक साहित्य में वर्णित चरित्र से संबंधित इन कविताओ को देने का औचित्य क्या है, यह बताना—मैं सोचता हूँ—बहुत जरूरी है, बात स्पष्ट है, ये कविताएं उस राधा के बारे में हैं जिसने तब तक पुराणों में अपना स्थान नहीं बनाया था। मैं यह दावा भी नहीं करता कि राधा के बारे में मैं जो कुछ भी कहना चाहता था, वह पूरी तरह से कह पाया हूँ। मैं जानता हूँ कि मेरी भाषा उन भावों को प्रकट करने में अवसर असफल भी रही है। यही नहीं, मेरे विचार भी समय-समय पर मेरा साथ छोड़ते रहे हैं, विशेष रूप से उन स्थलों पर, जहाँ राधा एक साथ सुंदर और असाधारण के अर्थ में स्वयं को प्रतिष्ठित कर लेती है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैंने उस राधा का वर्णन करने का प्रयास किया है जो अभी दैनंदिन के जीवन व्यापार से पूरी तरह ऊपर नहीं उठी है, क्योंकि उस बिंदु पर पहुँचने से पहले उसने एक दूसरे जीवन-विलोड़न को अनुभव किया होगा।

एक ऐसा क्षण अवश्य आया होगा जब राधा सांसारिकता से ऊपर उठ गयी होगी और अपनी कामनाओं तथा उनके फलीभूत न हो पाने के विश्वास से उत्पन्न पीड़ा के अनुभव से उसने स्वयं को परे पर लिया होगा। इसके बाद वह क्षण वह आया होगा, जब पहली बार उसके लिए कामना तथा उसका फलीभूत होना युगपत क्रियाएँ बन गयी होगी और वही क्षण उसके लिए अखंड आनंद का क्षण बन गया होगा। उस क्षण के बाद, कामना की अनुभूति से प्रतिलंबन के बाद, वह स्वयं को अपने अपने इष्ट से अभिन्न मानने लगी होगी, जब आत्म और इष्ट एक हो जायें तब सामान्यतः कामना की अनुभूति ही नहीं होती। दैनंदिन जीवन में कामना चाह का एक अनुभव है, वियोग की पीड़ा है। इस अनुभव के बिना न तो कामना रह सकती और न ही इष्ट। वास्तव में कामना को इसी अनुभव की तीव्रता से नापा जाता है, तभी तो इष्ट से वियोग की पीड़ा के बिना कामना को उत्कट नहीं माना जाता। इष्ट की प्राप्ति हो जाने पर तो कामना स्वयं ही समाप्त हो जाती है, और विगत, मनोवेगों को भुलाकर उस इष्ट को सहज स्वीकार कर लिया जाता है। कई बार तो इस स्वीकार में उदासीनता भी झलकने लगती है, कभी अपने इष्ट में ही कमियाँ दिखने लगती हैं और मन स्वयं से कहने लगता है कि वह पहले से ही इन कमियों से परिचित था, इसकी तो कामना ही नहीं की जानी चाहिए थी, या फिर किसी और की कामना करनी चाहिए थी। ऐसे क्षणों में ठगे जाने की सी अनुभूति होती है। लगता है कि

जो प्राप्त हुआ है, वह इष्ट नहीं था। केवल दिखने में उस जैसा लगता है। इसमें भी पीडा तो होती है—पर यह वियोग की पीड़ा नहीं, बल्कि उसके साथ संयोग की पीड़ा है, जिसे कभी जीवन का सर्वप्रमुख प्राप्य माना था।

शुद्धतम कामना संभवतः वही है जो सफलता की इच्छा से अप्रदूषित हो। सफलता का अर्थ होगा—कामना का अंत, इष्ट को प्राप्त करने की इच्छा का ही विलोपन, एक ऐसी अवस्था आ जाना जहाँ कोई लक्ष्य ही शेष न रहे। पर ऐसी सफलता का लाभ क्या, जहाँ वास्तव में इष्ट का अस्तित्व तो होगा पर वह अपनी उन सभी विशेषताओं को खो चुका होगा जिन्होंने उसे इष्ट बनाया था। इन विशेषताओं के बिना इसका अस्तित्व एक ऐसे शव के रूप में होगा जो कुछ ही समय बाद सड़ने लगेगा और दूसरे शब्दों में इसका अस्तित्व केवल इसकी अनुपस्थिति का ही परिचायक होगा। अतः इष्ट प्राप्ति की किसी आशा के बिना, बल्कि यह सुनिश्चित होने के बाद भी कि इष्ट कभी प्राप्त हो ही नहीं सकेगा, इष्ट की कामना श्रेष्ठ है—कम ही लोग मेरी इस बात से सहमत होंगे।

राधा-कृष्ण की प्रेमकथा विश्व की किसी भी प्रेमकथा से भिन्न है, अन्य कथाओं में यदि परिस्थितियाँ कुछ भिन्न होतीं और दूसरे लोग उनके प्रेम को समझने का प्रयास करते या कम से कम उनके रास्ते में बाधाएं पैदा न करते तो प्रेमी प्रेमिका का मिलन संभव था। पर राधा और कृष्ण के संबंधों में ऐसी कोई संभावना कभी रही ही नहीं। जब वे एक दूसरे से मिले, राधा का विवाह हो चुका था। कृष्ण के साथ उसका संबंध ऐसा था कि उसके साथ रहने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। यदि उन्हें लोगों का सहयोग मिलता, तब भी उनका विवाह नहीं हो सकता था। राधा निश्चित रूप से यह बात जानती होगी, तब भी अगर वह अपने जीवन की अंतिम सांस तक कृष्ण को चाहती रही तो स्पष्ट है कि यह सब वह बिना किसी भ्रम के करती रही। कृष्ण के साथ अपने संबंधों का आधार उसने सांसारिक रूप से एक-दूसरे के साथ रहने की बजाए कुछ और बनाया जो इससे कहीं अधिक श्रेष्ठ था। सफलता निम्न श्रेणी के मनस को प्रभावित करती है, उच्च श्रेणी के मनस छोटी-छोटी तुष्टियों की प्राप्ति से बाधित नहीं होते, वह इन्हें केवल छोटे-छोटे परिणाम मानकर एक ओर कर देते हैं। वे जानते हैं कि ये तुष्टियां मिलने के साथ समाप्त भी हो जायेंगी और उस कामना के मार्ग से भटकायेंगी और उससे दूर करेंगी। जबकि शुद्ध कामना ऐसी अविच्छिन्न यात्रा है जिसमें यदि इसके कभी न समाप्त होने की निराशा है तो साथ ही इस गौरव का बोध भी कि इस यात्रा में उसने छोटे-छोटे विकल्पों को स्वीकार नहीं किया।

यदि व्यक्ति में कामना की निष्फलता को स्वीकार करने का साहस है तो यह संभव

ही नहीं कि वह किसी भी स्थिति में वियोग से पराजय स्वीकार करेगा। इस बात को शायद अधिकतर वैष्णव मीमांसक कभी नहीं समझेंगे, क्योंकि वे तो कृष्ण को एक मात्र सत्य मानते हैं और राधा उनके लिए या तो कृष्ण का एक अंश है या फिर एक ऐसा साधन जिससे वे कृष्ण की श्रेष्ठता को प्रदर्शित करते हैं। अधिक से अधिक राधा एक ऊर्जा है—एक विशिष्ट ऊर्जा जो केवल कृष्ण की ही है। इस दृष्टि से वैष्णव मतानुसार राधा को कृष्ण से भिन्न होने ही नहीं दिया गया है। वियोग के वे क्षण उन्होंने उसे दिये ही नहीं जिनमें अपने होने की वेदना को झेला हो। यह सत्य है कि बाद में उसने कृष्ण के साथ एकरूपता प्राप्त कर ली थी पर उसने अपना पूरा जीवन या कम से कम जीवन का एक बहुत बड़ा भाग निरंतर आघातों को झेलने में बिता दिया होगा। ये क्षण कैसे असामान्य साहस के क्षण रहे होंगे।

वास्तविक साहस तो नितांत निराशा में ही काम करता है, ऐसी दशा में जब न तो कोई आशा हो और न राहत। यदि आशा होगी तो साहस शुद्ध नहीं होगा, आशा उसका संचालन करेगी। शुद्ध साहस तो उसे ही कह सकते हैं जिसमें व्यक्ति अपने रिसते घावों और बहते रक्त की पीड़ा को झेल जाये पर किसी प्रकार की राहत की खोज में अपनी राह से न भटके और न सांस लेने के लिए या अपनी शक्ति को पुनर्संचित करने के लिए ठहरे। ये निपट अकेलेपन के क्षण होते हैं जहाँ व्यक्ति अपने में अकेला होता है। वह न तो किसी अन्य व्यक्ति से संवाद स्थापित कर सकता है और न अपने को उससे जोड़ सकता है। ये क्षण अनंत होते हैं। और अंततः इष्ट के साथ पूर्ण एकाकार होने की स्थिति तक ले जाते हैं। पर ये अकेलेपन की पीड़ा को कम नहीं कर पाते। यदि इस अकेलेपन का बोध नहीं होता तो इसके बाद होने वाले संयोग का कोई अर्थ ही नहीं रह जायेगा क्योंकि दो भिन्न अस्तित्व ही तो वास्तव में एकाकार हो सकते हैं। राधा और कृष्ण को शाश्वत रूप से एक मानने की धारणा इसलिए भी उचिन नहीं प्रतीत होती क्योंकि उनकी इस एकात्मकता में भिन्नता कभी नहीं दिखती।

ऐसा साहस हमेशा प्रकट नहीं होता क्योंकि बाहरी रूप में तो यह बहुत कोमल होता है। इसमें एक अनात्मशंसी विनम्रता होती है, वाणी तथा व्यवहार में मधुरता होती है इसलिए ऐसे साहसी व्यक्ति को देखने पर यह लगता ही नहीं कि यह अपने द्वारा निर्धारित नियति के अतिरिक्त *अन्य सब कुछ पूरी तरह से अस्वीकृत कर सकता है। अपने स्वीकार्य भवितव्य के लिए उपादन की खोज में ऐसा जन अपने संपूर्ण अस्तित्व का बलिदान करने में भी संकोच नहीं करता और पूरी तरह से अकेला रहता है, अपनी चेतना के अतिरिक्त किसी अन्य का सहारा नहीं लेता। ऐसे व्यक्ति के लिए प्रारंभ से ही प्रेम कोई ऐसा अनुभव*

नहीं होता जिसमें उसकी आत्मचेतना अचानक लुप्त हो जाये। इसके विपरित उसके लिए प्रेम एक ऐसी स्थिति है जिसमें वह स्वयं अपने अन्तर्मन की ऐसी सीमाओं का परिचय पा लेता है जो अब तक उसके लिए अज्ञात थीं। यही प्रेम व्यक्ति की चेतना को उदात्तता प्रदान करता है, ऐसी विरल स्थिति किसी भी अर्थ में प्रेम की अपर्याप्तता की द्योतक नहीं, बल्कि इसके विपरीत है। क्योंकि प्रेम का यह रूप तो स्वयं को पूर्णतः समर्पित करने का एक उपक्रम है। स्वयं को पूर्णतः तब तक समर्पित नहीं किया जा सकता जब तक स्वयं पूर्ण बोध नहीं हो। पूर्ण बोध से पहले की किसी भी अवस्था में प्रिय समर्पण का अर्थ होगा स्वयं का एक अंश मात्र समर्पित करना तथा दूसरे अंश को रोक लेना। रोकने का अर्थ है कि व्यक्ति प्रेम नहीं करता, प्रेम से इनकार करता है। व्यक्ति के लिए अनिवार्य है कि यदि वह संपूर्ण रूप से प्रेममय होना चाहता है तो प्रेम से निपट एकांतिकता का भी अनुभव करें। साझे अस्तित्व के क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले अनिवार्य है कि व्यक्ति अपने अस्तित्व के गुह्यतम क्षेत्रों तक विचरण करे और उदात्तता के उस धरातल पर पहुँच जाये जहाँ अपने दिए जाने में दुराव की सभी संभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं।

एकांतिकता के अतिरिक्त ऐसे साहस भरे प्रेम में अपनी आस्था तथा व्यवहार का मूल्य चुकाने की एक इच्छा भी निहित होती है। जब तक व्यक्ति अपने विश्वासों का मूल्य नहीं चुकाता तब तक आप भला यह कैसे जाने में कि वह पूरी तरह से तथा हर तरह से अपने विश्वासों से प्रतिबद्ध है या फिर यदि उसकी प्रतिबद्धता एक ऐसे बिंदु पर आकर समाप्त हो जायेगी, जहाँ उसे अपनी आस्था का मूल्य अपनी सभी प्रिय वस्तुओं के त्याग से चुकाने की स्थिति आ जाये। ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो दिखावे के तौर पर तो अपनी आस्था बनाये रखते हैं पर किसी भी ऐसी स्थिति का सामना करने के लिए तत्पर नहीं होते जिसमें इतना बड़ा मूल्य चुकाना पड़े। कुछ लोग तो ऐसी स्थिति आने पर मूल्य चुकाने से इनकार कर देते हैं। इन दोनों तरह के लोगों के लिए अपने दैनंदिन के जीवन का आकर्षण अधिक बड़ा होता है, और वे उसी जीवन की परिधि में सुख का अनुभव करते हैं। वे उस लोकोत्तर अधैर्य से मुक्ति पा लेते हैं जो वास्तव में उनके जीवन को एक नया रूप दे सकता है। पर ऐसे लोगों की जीवन को उसकी लीक से उठाकर एक नये पथ पर ले जाने की संभावना फलवती नहीं होती। निर्धारित मृत्यु के स्थान पर इच्छा मृत्यु प्राप्त होने की उनकी इच्छा भी नहीं फलती। एक ही समय दो लोगों से मिलन के स्थान पर वे उस जगत का भी परित्याग कर देते हैं जो स्वयं भी सीमित है औ सभी को सीमित कर देता है। उनका 'स्व' अनिच्छा तथा लोभ के आगे घुटने टेक देता है और उन्हें कायर बना देता है। इसके विपरीत साहसी प्रेमी व्यक्ति प्रेम का मूल्य चुकाने की अंतिम स्थिति आने पर

संकोच नहीं करता। उसे स्वयमेव दैनंदिन जीवन अनाकर्षक प्रतीत होने लगता है। ऐसा भी नहीं कि मृत्यु को लेकर उसे किसी तरह का भ्रम हो (कि मृत्यु के बाद मिलने वाला जीवन बेहतर होगा) पर वह यह निश्चित रूप से मान लेता है कि दैनंदिन जीवन जीने योग्य नहीं है। जब सुकरात को मृत्युदण्ड मिला था तो अपने अभियोक्ताओं से उसने अपने अंतिम शब्द कहे थे—"अब हम अपने-अपने मार्गों पर चलते हैं—मैं मृत्यु के मार्ग पर और तुम जीवन के मार्ग पर, ईश्वर ही जानता है कि दोनों में से कौन सा मार्ग श्रेष्ठ है।"

कहा जा सकता है कि यदि राधा वास्तव में साहसी थी तो जब उसे पता लगा कि उसका इष्ट उसे प्राप्त नहीं हो सकता, तथा कृष्ण के साथ उसका मिलन कभी नहीं हो सकता, तो उसमें अपने जीवन को समाप्त कर देने का साहस भी होना चाहिए था। इसमें मतभेद हो सकता है कि आत्महत्या करना अति साहस का काम है या अति कायरता का। पर कुछ परिस्थितियों में स्वेच्छा से मृत्यु का वरण करने की अपेक्षा जीवित रहना निस्संदेह अधिक साहस का काम है। आत्महत्या का अर्थ है कि उस जनने विपत्ति लाने वाली शक्तियों से हार मान ली है और उस शक्ति के साथ अपने जीवन का सामना होने पर शक्तिशाली ने दुर्बल के अस्तित्व को ही मिटा दिया है। यह भी कहा जा सकता है कि वह अपने जीवन की विरोधी शक्ति के साथ संघर्ष में उसने (अज्ञानतावश) अपने साहस की शक्ति को कम करने आंका है, वह इस शक्ति का लिहाज करता है, इसके सम्मुख आत्मसमर्पण कर देता है और स्वीकार कर लेता है कि इसके तथा उसके अपने जीवन के बीच संघर्ष में यही शक्ति विजयी होगी। यदि अपने जीवन को समाप्त कर देना साहस का काम है तो इससे यह भी स्पष्ट है कि उसने इस जीवन विरोधी शक्ति के साथ अपना संघर्ष जारी रखने में भी अपनी असफलता को स्वीकार कर लिया है। यदि व्यक्ति अपना यह संघर्ष जारी रखे और आत्महत्या की शरण में न जाये तो यह भी तौ संभव है कि वह इस चुनौती के सम्मुख अपनी शक्ति को ठीक तरह से नाप सके, और देखे कि क्या उसकी अपनी विजय भी हो सकती है? यह भी संभव है कि वह इस चुनौती का आत्मविश्वास के साथ सामना करना सीख जाये। ऐसा नहीं है कि उसने अपने जीवन से कुछ अधिक ही प्रेम है या वह मरने से डरता है बल्कि उसे ऐसा भी लग सकता है कि यदि उसका जीवन बहुत संतोषजनक नहीं है या उसका कोई महत्व नहीं है और जो चुनौती उसके सम्मुख है वह एक तमाशा भर है या अधिक से अधिक एक क्षणिक उत्तेजना है। बड़ी बात यह है कि चुनौती उसके जीवन का एक अंग बन जाती है, कोई ऐसी बाहरी शक्ति नहीं रहती जिसके साथ उसके जीवन का लगातार संघर्ष बना रहता हो। यह जीवन की एक घटना मात्र है। इस तरह की और भी बहुत सी घटनाएँ होती हैं और इन सभी घटनाओं की

परिणति मृत्यु में होती हैं। इस एक घटना का कोई निर्णायक तथा स्वीकार्य महत्व नहीं हैं। यही ज्ञान साहस का स्रोत है जबकि आत्महत्या इस ज्ञान के अभाव का परिणाम। यह अभाव उस घटना को इतनी सामर्थ्य दे देता है जितनी वास्तव में उसमें होती नहीं।

राधा आत्महत्या क्यों करती? वह प्रारंभ से ही जानती थी कि कृष्ण के साथ रहना असंभव है। हालांकि यह बात उसके लिए दु:ख का कारण रही होगी पर उसने स्वयं को यह बात स्वीकार करने के लिए तैयार कर लिया होगा और इसे सहना सीख लिया होगा। निराशा के लिए तो वह पहले से ही तैयार होगी और धीरे-धीरे उसने इसे जीवन का एक सामान्य अंग मान लिया होगा और इसमें उसे जीवन के प्रति किसी प्रकार की आशंका का अनुभव ही नहीं होता होगा। उसने अपना पूरा जीवन जिया और जीवन भर निराशा को वहन किया और इस प्रकार निराशा को जीवन पर हावी नहीं होने दिया कि आत्महत्या का विचार भी वहाँ आता। कृष्ण के प्रति उसका प्रेम अनूठा रहा होगा। ऐसा प्रेम किसी साहस विहीन व्यक्ति के हृदय में तो उपज ही नहीं सकता था। जब वह कृष्ण वर्ण बादलों को देखती है तो पूरी रात वियोग में रोती तथा गाती रहती है और अपनी सहेलियों से याचना करती है कि वे कृष्ण को उसका संदेश दे। इन गीतों में यही वर्णित है कि वह कैसे अपने आप से परे एक व्यक्तित्व में बदल जाती है। यह सब सत्य भी हो सकता है, पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि राधा भीरू थी। इसका अर्थ यह है कि अपनी शक्ति को लेकर उसे किसी प्रकार की आशंका नहीं थी। यदि वह अपनी भावनाओं को पूरी छूट देती हैं, तो इसलिए कि वह जानती है कि अपनी इस स्वतंत्रता का उपयोग अपने जीवन के एक मात्र ध्येय याने कृष्ण से प्रेम करने में किसी प्रकार का जोखिम नहीं है। यह अपने ध्येय को प्राप्त करने का उसका अपना एक रास्ता था क्योंकि यदि वह अपनी भावनाओं पर अंकुश लगाती तो कृष्ण के प्रति उसकी अनुभूति इतनी गहन न हो पाती। एतदर्थ राधा की जिन बातों से उसकी दुर्बलता तथा कोमलता प्रकट होती प्रतीत होती हैं, वे वास्तव में उसकी चारित्रिक दृढ़ता तथा धैर्य की उपज है।

मैं यह भी नहीं कहना चाहता कि आत्महत्या करना हर स्थिति में जीने से कमतर है। कई ऐसे अवसर हो सकते हैं जहां जीना आत्मा को लज्जित करता हो। तब अंतरात्मा उस व्यक्ति का साथ छोड़ देती है क्योंकि ऐसे जीवन में जो लज्जा भरी होती है, उसके साथ वह नहीं रह सकती। ऐसे में उस लज्जा से मुक्ति पाने का एकमात्र मार्ग एक जीवन को समाप्त करना ही शेष रह जाता है। यदि राधा को विश्वास है कि कृष्ण से प्रेम करना लज्जाजनक नहीं है बल्कि ऐसा सम्मान है जिसमें बड़े सम्मान ही चाह भी उसमें नहीं है तो केवल दूसरों को संतुष्ट करने के लिए उससे आत्महत्या की अपेक्षा करना अनुचित है।

दूसरों को प्रसन्न करने के लिए तो आप जी सकते हैं पर आत्महत्या का एक मात्र उद्देश्य तो स्वयं की संतुष्टि के अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकता। यह संभव है कि लोगों में अपने जीने की शैली के प्रति निंदा का भाव देखकर उसे जीने का एक दृढ़ तर्क मिल गया है। समाज जितना अधिक अप्रीतिकर होता चला गया, वह अपने भीतर सिमटती चली गयी और इस प्रक्रिया में वह जान गयी कि वह अपने में अकेली है, कोई दूसरा ऐसा नहीं है जिस पर वह निर्भर रह सके या जिससे संबंध स्थापित कर सके। उसे लगा कि वह अपनी तरह की अकेली है। कोई दूसरा उसकी तरह का नहीं है। किसी भी तरह के संबंधों से (कृष्ण के साथ संबंध से भी) वह मुक्त है। हर वस्तु उसे अपने से बाहर की वस्तु प्रतीत होती जिससे उसका कोई सहज संबंध नहीं है। चरम एकांत की यह अवस्था अति भयावह है, क्योंकि तब आप यह जान रहे होते हैं कि आप पूर्ण मृत्यु अथवा समाप्ति की ओर निरंतर अग्रसर हो रहे हैं। जब आप चेतन हैं तो अपनी नियति से भी आप परिचित हैं कि अंततः आपको पूर्णतः समाप्त हो जाना है। इससे भिन्न तरह से आप सोच ही नहीं सकते। यदि व्यक्ति अपने जीवन काल में अनिवार्य रूप से असंबद्ध रहा है तो पूरी संभावना है कि भौतिक मृत्यु के बाद कोई ऐसा संबंध शेष नहीं होगा जो उसके बने रहने की आशा जगा सके।

पर परम एकांतिकता की यही अवस्था व्यक्ति को सबसे बड़े, सबसे उदात्त प्रेम के योग्य बनाती है। यह प्रेम व्यक्ति को स्वयं से विमुख नहीं करता, न यह उसमें इस भ्रम को पैदा करता है कि मृत्यु पर विजय पायी जा सकती है। यह प्रेम घनीभूत होता है क्योंकि यह वेदना से उत्पन्न होता है और वेदना का साथ कभी नहीं छोड़ता। व्यक्ति का मन उसके जीवन काल के परे कुछ नहीं सोचता और यदि वह प्रेम करने का निर्णय लेता है तो वह अपने जीवन तथा जीवन काल के बाहर इसे प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखता। जीवन के बाहर न तो कोई काल होता है और न स्थान। इसलिए अपने समय को व्यर्थ के कामों में नहीं गंवाया जा सकता। यद्यपि समय अक्षय है पर किसी भी ऐसे कार्य के लिए जो इस प्रेम का अंश नहीं है जीवन में कोई स्थान नहीं है। व्यक्ति जानता है कि संबंध शाश्वत रूप से बने नहीं रह सकते और उन्हें सन्तोषजनक ढंग से पुनर्व्यवस्थित करने के लिए पर्याप्त समय नहीं होगा, इसलिए उसमें अपने प्रेमी को समझने तथा उसे क्षमा करने की क्षमता भी अधिक होती है। मैं किसी ऐसी चिड़चिड़ी राधा की कल्पना नहीं कर सकता जो कृष्ण को वृन्दावन छोड़ने के लिए, उस पर निष्ठा न रखने के लिए तथा उसके प्रति उदासीन रहने के लिए चिड़चिड़ाती हो और उसके प्रति प्रेम को मान्यता दिलवाने या उसके साथ रहने के उपाय ढूंढने के लिए उससे कहती हो। ऐसा कोई भी आचरण उसके लिए

अप्रासंगिक है। प्रारंभ से ही वह ऐसी कोई आशा नहीं पाले रखती अतः कुंठित होकर निराश होने की भी उसके लिए कोई संभावना नहीं है। अगर वह निराश हो सकती है तो केवल इसलिए, कि कृष्ण को जिस सहानुभूति तथा संवेदना की आवश्यकता थी, वह उसे न दे सकी। न दे पाने की पीड़ा कुछ लोगों के लिए न ले पाने की पीड़ा से बड़ी होती है।

राधा के बारे में इतनी बातें की जा सकती हैं कि कभी समाप्त ही न हों। जितना कहो उतना ही लगता है कि कुछ और आवश्यक बातें तो छूटी जा रही हैं। यह वैसा ही है जैसे सपने में कई बार सपना देखने वाला बात कहना चाहता है पर असली बात कह ही नहीं पाता। ऐसे सपने में उसे लगता है कि उसने कह दिया है पर वास्तव में कहा तो उसने कुछ नहीं। यही बात राधा के साथ है, उसके मन में यही रहता है कि उसने बातें तो बहुत की हैं पर कहा कुछ नहीं है। जितना कुछ वह कहती है, उसका जोड़-बाकी निकालो तो कुछ बचता ही नहीं है। एक विषय में बात करते-करते दूसरा ऐसा विषय, प्रारंभ हो जाता है जो पिछली सारी बातों को काट देता है। और अंत में कोई एक बात भी नहीं बचती।

सामान्य चरित्र तार्किक रूप से एक निश्चित धारणा रखते हैं और उन्हें सीधे-सादे ढंग से चित्रित किया जा सकता है। कुछ चरित्र ऐसे होते हैं जिनका व्यवहार सामान्य तर्क से परे होता है। इनमें कई ऐसे गुण होते हैं जो सामान्य तर्कों से अग्राह्य और विशिष्ट होते हैं। सामान्य चरित्रों में तर्क के आधार पर उनके व्यक्तित्व को एक रूप दिया जा सकता है और जो गुण इस डिजाइन से भिन्न होते हैं। उन्हें सहज ही अलग किया जा सकता है। तर्कातीत चरित्रों में अपनी ही एक संगति होती है। हमारे निर्धारित मानकों से कितने ही भिन्न गुण इनमें क्यों न हों, अपने पारलौकिक विस्तार में ये गुण एक दूसरे के साथ सामंजस्य रखते हैं। ये ग्रीष्म संध्या के पवन के झोंके की भाँति होते हैं जिनमें ताप तो है पर साथ ही फूलों की महक भी है और शीतलता का स्पर्श भी। ऐसे चरित्रों का चित्रण करते हुए तर्क की भाषा पूरी तरह से अपर्याप्त रहती है। तर्कातीत से भी अनुप्राणित होना कवि के लिए आवश्यक होता है। इसलिए यदि इस लेख से राधा की कोई सुनिश्चित छवि नही बनती या यदि इन कविताओं की राधा मेरे इस लेख की राधा से भिन्न है तो—मैं जानता हूँ कि वह भिन्न ही है—मैं पाठक का ध्यान ग्रीष्म ऋतु के पवन के झोंके की ओर दिलाना चाहूंगा और आशाा करूंगा कि वह मुझे क्षमा कर दे।

अपनी बात समाप्त करने से पहले मैं उस राधा की कल्पना करना चाहूंगा जो वृंदावन में अकेली रही, बिना कृष्ण के, बिना कृष्ण से मिलन की आशा के। वह अकेली रह गयी। साथ के लिए रही वृंदावन की धरती जो वर्ष बीतने के साथ उसकी पहुँच के बाहर और उदासीन होती चली गयी। कुछ देर के लिए उसे लगा कि उसने नदी की

कल-कल सुनी है या उसने किसी रिक्त लता मंडप में उसे देखा है। कुछ देर के लिए पत्तियों की मर-मर ने उसे चौंकाया है। धीरे-धीरे यह धरती उसके लिए अपना विशेष अर्थ खोती चली गयी और नदी, पेड़, बादल उसके लिए निर्जीव वस्तुएं बन गये। वहां के लोग तो उसके लिए बहुत पहले ही अर्थहीन हो गये थे, अब प्रकृति ने भी अपना अर्थ खो दिया था और वह अकेली रह गयी थी। ऐसे में जीने का उसके लिए कोई अवलंब नहीं रह गया होगा और अपने शेष जीवन में उसे लोगों या धरती से किसी भी प्रकार के अपनत्व की अनुभूति नहीं हुई होगी।

क्या वह दुःखी थी? संभवतः नहीं, क्योंकि प्रसन्नता की आशा तो उसने पहले ही छोड़ दी थी। जो लोग प्रसन्नता का जीवन जीते हैं उनके लिए उनका उद्देश्य दुःख का कारण बन सकता है क्योंकि यदि वह उद्देश्य पूरा न हो तो वे दुःखी हो जाते हैं पर जिन लोगों का ऐसा कोई लक्ष्य ही न हो और उसे प्राप्त करने की प्रसन्नता भी न हो तो उनका दुःख उस बच्चे के दुःख की तरह नहीं होता जो चट रोने लगता है। उन्हें संभवतः एक रिक्ति का अनुभव तो होता होगा पर उसका भी उनके मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

हमारे पुराणों में राधा देवी बन जाती है। यह उचित भी है क्योंकि देवता ही जीवन के सामान्य मोहों के बिन जी सकते हैं, समय के पार, रिक्ति में जी सकते हैं। देवता हुए बिना कैसे सभव है कि कोई नदी में जाकर नहाये, पानी लाये, दूध बेचे और हजारों दूसरे काम करे और ऐसा जताये जैसे इसका उसके लिए कोई अर्थ है, पर उसके भीतर एक मौन आवाज लगातार आती रहे कि ऐसा कुछ नहीं है जिसकी आस हो। और जब हम किसी देवता के बारे में बात करें तो यह कैसे कहा जा सकता है कि वह प्रसन्न है अथवा दुःखी? वह एक साथ दोनों भी हो मकता है और नहीं भी। वह कुछ ऐसा भी हो सकता है जो हमारी समझने की शक्ति से बाहर हो और उसका वर्णन भी हम न कर सकें।